ह्यूस्टन के सम्मेलन में व्याख्यान

ली होंगज़ी

12 अक्टूबर 1996 ~ ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

मैं, ह्यूस्टन की सरकार और उनके नागरिकों का बहुत आभारी हूं जिन्होंने मुझे सम्मान दिया है। मैं यह भी आशा करता हूं कि यहां उपस्थित *फालुन गोंग* के असंख्य शिष्य भी उनके समर्थन और महान फा के प्रति उनके प्रेम के लिए उन्हें धन्यवाद देने में मेरे साथ सम्मिलित हैं। आइए हम तालियों की गड़गड़ाहट के साथ अपनी प्रशंसा व्यक्त करें, क्या हम? (*तालियाँ*) ह्यूस्टन सरकार ने जो सद्भावना और सम्मान मुझे प्रदान किया है उसे मैं सभी *फालुन गोंग* शिष्यों और चीनी लोगों तक पहुंचाऊंगा।

मैं, हमेशा अमेरिका के *फालुन गोंग* शिष्यों के बारे में सोचता रहा हूं, जिनमें कोकेशियान, अश्वेत लोग, पीली जाति के लोग, साथ ही अन्य जातियों के शिष्य भी सम्मिलित हैं। आपके द्वारा फा को प्राप्त करने में सक्षम होने का अर्थ है कि आपका पूर्वनिर्धारित संबंध आ गया है, इसलिए मैं हमेशा से यहाँ आकर यह देखना चाहता था कि हर कोई अपनी साधना में कैसे प्रगति कर रहा है।

बहुत से लोग मुझसे कभी नहीं मिले हैं, लेकिन बहुत से लोगों ने पुस्तकें पढ़ी हैं और इस फा को जान गए हैं। वे हमेशा सोचते हैं कि जब तक वे व्यक्तिगत रूप से गुरु को नहीं देख लेते हैं, वे सहज अनुभव नहीं करते हैं, लेकिन मुझे देखकर वे अधिक सहज अनुभव करते हैं। वास्तव में, उन छोटे लेखों में—जिन्हें आप शास्त्र कहते हैं—मैंने आपसे कहा है कि यदि आपने मुझे नहीं देखा है तो भी आप साधना कर सकते हैं; और ठीक वैसे ही आप वह प्राप्त कर सकते हैं जो आपको प्राप्त करना है। कुछ भी नहीं छूटेगा, क्योंकि वास्तविक साधना न तो रूप पर निर्भर करती है और न ही इस पर कि आपने गुरु को देखा है या नहीं। आप जानते हैं, बुद्ध शाक्यमुनि का निधन दो हजार वर्ष पहले हो गया था, फिर भी बाद की पीढ़ियां हमेशा साधना करती रही हैं। उनके पास बुद्ध शाक्यमुनि को देखने का कोई तरीका नहीं है, लेकिन वे फिर भी साधना में सफल हो सकते हैं; ऐसा इसलिए है क्योंकि मानव संसार में उनके पास धर्मग्रंथ हैं और लोगों को बचाने वाले फाशन (सिद्धांत शरीर) हैं।

चूंकि मैं इतना महान फा प्रदान रहा हूं, आप पुस्तकों से समझ गए होंगे कि इतिहास में अभी तक किसी ने भी इतना बड़ा उपक्रम नहीं किया है—यह कि मानव जाति को ऐसे सिद्धांतों के एक संग्रह को समझाना जो वास्तविक, पूर्ण, व्यवस्थित हो, और यह [साधना

करने वालों] को स्वर्गारोहण में सक्षम बना दे। पूर्व में इसकी अनुमति नहीं थी। अतीत के मानव समाज में, इन चीजों को मानव जाति पर बिल्कुल नहीं छोड़ा जा सकता था।

बेशक, बुद्ध शाक्यमुनि के शास्त्रों को बहुत से लोगों ने पढ़ा है, लेकिन वास्तव में, वे बाद की पीढ़ियों द्वारा संकलित किए गए थे। वे अधूरे थे और केवल कुछ सिद्धांतों पर ही चर्चा की गयी थी। उन्हें संकलित करते समय, बाद की पीढ़ियों ने किंवदंतियों और स्मृति पर भरोसा किया, और इसलिए वे खंडित हो गए। फिर ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि इतिहास की उस अवधि के दौरान, उच्च प्राणियों द्वारा मानव जाति के लिए केवल इसी बात को छोड़ने की अनुमति थी। उस समय, बुद्ध शाक्यमुनि ने वास्तव में [कथनों] के बारे में बहुत कुछ कहा था, लेकिन चूंकि उस समय भारत में लिखित भाषा नहीं थी, इसलिए उन्होंने जो बात की थी, वह तुरंत दर्ज नहीं की जा सकती थी, और यह पांच सौ वर्ष बाद यानी बुद्ध शाक्यमुनि के निधन के बाद की पीढ़ियों ने बुद्ध शाक्यमुनि के कथनों को लिखित रूप दिया। निःसंदेह समय, स्थान, अवसर, लोगों का रहन-सहन जिस पर उन्होंने ध्यान केंद्रित किया था—वह सब बदल गया था, और इसे पुनः पाने का कोई तरीका नहीं था। लेकिन इसके बावजूद, बौद्ध धर्मग्रंथों में अभी भी ऐसे लोग हो सकते हैं जो वास्तव में साधना करनी चाहते हैं, वे उनसे बुद्ध-सत्यों को समझ सकते हैं। विशाल बुद्ध-सत्यों के दृष्टिकोण से, हालांकि, वे अधूरे हैं, और वे ब्रह्मांड के व्यवस्थित और मौलिक नियम बिलकुल नहीं हैं। लेकिन शाक्यमुनि एक बुद्ध हैं, और उनके शब्दों में वास्तव में बुद्ध-स्वभाव और बुद्ध-सत्य के उस स्तर का अवतार है। यीशु और लाओज़ भी शाक्यमुनि के समान स्थिति में ही थे: उनमें से किसी ने भी अपने समय में सिखाए गए नियमों को लिखित में नहीं छोड़ा। उच्च-स्तरीय भिक्षुओं के बारे में भी यही सच है जिन्होंने इतिहास काल के दौरान साधना की है।

मैं अक्सर ऐसा कुछ कहता हूं: मैं कहता हूं कि मैंने कुछ ऐसा किया है जो पहले कभी किसी व्यक्ति ने नहीं किया। शिष्यों में ऐसा ही एक मुहावरा फैल गया है: वे कहते हैं कि गुरु जी ने मनुष्यों के स्वर्गारोहण के लिए एक सीढ़ी छोड़ दी है। दिव्य प्राणी भी यही कह रहे हैं। दिव्य प्राणी कहते हैं, "आपने मनुष्यों के स्वर्गारोहण के लिए एक सीढ़ी छोड़ दी है।" शाक्यमुनि, यीशु और लाओज़ ने जो चीजें दी हैं वे बहुत कम हैं या अधूरी हैं; ऐसा इसलिए है क्योंकि अतीत में इस तरह से काम करना वर्जित किया गया था।

मैं जो फा सिखाता हूं वह बहुत विशाल है। जब तक आप इस फा के अनुसार साधना करते हैं, तब तक आप फल पदवी प्राप्त कर सकते हैं। यह अतीत के चेतन प्राणियों के लिए अकल्पनीय है। [फा] के भीतर जिन भी दिव्य रहस्यों को बताया गया है, वे बहुत अधिक और विशाल हैं। लेकिन यदि आप साधना नहीं करते हैं, जब आप [*ज़ुआन फालुन*] पुस्तक खोलते हैं और देखते हैं, तो आप पाएंगे कि यह एक ऐसी पुस्तक है जो एक अच्छा मनुष्य बनना सिखाती है, और इसमें हो रही चर्चा ही सिद्धांत हैं; यह एक ऐसी पुस्तक है। यदि आप साधना करनी चाहते हैं, और जब आप इसे दूसरी बार पढ़ते हैं, तब जान-बूझकर हर शब्द के अर्थ ढूढ़ने मत जाइए। जब आप इसे पहली बार गंभीरता से पढ़ते हैं, और दूसरी बार इसे पढ़ने के बाद, आप पाएंगे कि यह कोई साधारण पुस्तक नहीं है, और आपकी भावनाएँ और आंतरिक भीतरी अर्थ दोनों पहली बार [जो आपने देखे] पढ़े थे, वे बदल गये होंगे। जब आप इसे तीसरी बार पढ़ते हैं, तो आप पाएंगे कि आंतरिक अर्थ फिर से बदल गए हैं, और यह फिर से पिछले दो बार से अलग है। आप इसे ऐसे ही पढ़ते रहें, और जब आप इसे तीन बार पूरी तरह से पढ़ चुके हों, तो शायद आप इस पुस्तक से दूर नहीं रह पाएंगे, और न ही जीवन भर इस से दूर रहेंगे। ऐसा क्यों है? क्योंकि मनुष्य के सतही दृष्टिकोण से, इसके दो कारण हैं: एक तो यह कि सभी मनुष्यों में ज्ञान और सत्य की प्यास है। दूसरी बात यह है कि सभी मनुष्यों के पास बुद्ध-स्वभाव है। पुस्तक में जिन विषयों पर चर्चा की गई है, वे बुद्ध-सत्य हैं, जो आपके बुद्ध-स्वभाव से जुड़े हैं। जैसे ही आप इसे देखेंगे, आप अपने आपको इसके समीप अनुभव करेंगे, वास्तविक फा-सत्य आपको उत्साहित करेंगे, और आपको लगेगा कि यही वह चीज है जो आप चाहते हैं।

साथ ही, साधना की एक प्रक्रिया होनी चाहिए। जब आप फा का अध्ययन करना शुरू करते हैं तब आप केवल एक अच्छे व्यक्ति होने के सिद्धांतों को समझने में सक्षम होते हैं। वास्तव में, इस पुस्तक की सामग्री में विभिन्न आयामों और विभिन्न स्तरों के सत्य हैं। जैसा कि बौद्ध धर्म सिखाता है, तीन लोकों में स्वर्ग के तैंतीस स्तर हैं—तीन लोकों के भीतर विभिन्न स्तर हैं। यदि आप स्वर्ग के स्तर तक साधना करनी चाहते हैं, केवल जब आप स्वर्ग के उस स्तर के सिद्धांतों को जानते हैं तब ही आप साधना कर सकते हैं। जब आप उस मानक को पूरा करते हैं तभी आप ऊपर उठ सकते हैं। यदि आप तीन लोकों के बाहर साधना करनी चाहते हैं, जब आपको तीनो लोकों के बाहर के सत्य का ज्ञान

हो जाता है केवल तभी, आप ऊपर उठने की ओर साधना कर सकते हैं। इस फा में ऐसे तत्व हैं जो आपकी साधना को विभिन्न उच्च स्तरों पर निर्देशित कर सकते हैं। अन्यथा, यह वैसा ही होगा जैसा मैंने इसका वर्णन किया है: आप प्राथमिक विद्यालय की पाठ्यपुस्तकों के साथ महाविद्यालय जाते हैं, लेकिन आप अभी भी प्राथमिक विद्यालय के शिष्य हैं, क्योंकि आपने महाविद्यालय स्तर के ज्ञान को नहीं समझा है, और [प्राथमिक स्तर का ज्ञान] महाविद्यालय में आपकी पढ़ाई का मार्गदर्शन नहीं कर सकता है; यही सिद्धांत है। लेकिन इस पुस्तक के साथ, हालांकि यह दिव्य रहस्यों को उजागर करती है, जो लोग साधना नहीं करते हैं वे इसे सतही स्तर पर देखकर कुछ भी नहीं देख पाएंगे। केवल जब आप साधना करनी चाहते हैं और इस पुस्तक को गंभीरता से पढ़ना चाहते हैं, तभी आप पाएंगे कि भीतरी आतंरिक अर्थ बहुत विशाल हैं। कितने विशाल? आप चाहे जितनी भी ऊंचाई तक साधना कर सकें, यह आपको वहां तक साधना करने के लिए मार्गदर्शन कर सकता है।

मैं सभी को बताऊंगा कि वे सभी जो फालुन दाफा प्राप्त कर सकते हैं, उनके विशेष पृष्ठभूमि और पूर्वनिर्धारित संबंध हैं, और कुछ ऐसे प्राणी हो सकते हैं जो बहुत ऊँचे स्तरों से आए हैं। संसार में आप जिन लोगों को देखते हैं, उनमें से हर कोई एक जैसा लगता है, क्योंकि सतह से आप यह नहीं बता सकते कि वह कौन है। लेकिन मैं अक्सर यह कहता हूं: इस तरह के महान फा को फैलाने में [हम] इसे अध्ययन करने के लिए मनुष्यों को ऐसे ही नहीं देते हैं, इसलिए यदि आपने इसे सुना है तो शायद आपका एक पूर्वनिर्धारित संबंध है और ऐसा उसी पूर्वनिर्धारित संबंध के कारण हुआ। मैं जो कहता हूं उसका एक भी शब्द निराधार नहीं है; यह भविष्य में सिद्ध होगा। बेशक, चूंकि मैंने इतने बड़े फा को सार्वजनिक किया है, इसलिए मुझे इसके लिए उत्तरदायी होना होगा। यदि कोई व्यक्ति लोगों को नहीं बचा सकता है, तो वह लापरवाही से दिव्य रहस्यों को प्रकट कर रहा है और दिव्य सिद्धांत को हानि पहुंचा रहा है। इसकी बिल्कुल भी अनुमति नहीं है, और कोई भी इस तरह से काम करने का साहस नहीं करता है।

जैसा कि आप जानते हैं, अतीत में जो कोई भी लापरवाही से दिव्य रहस्यों को प्रकट करता था, उसे स्वर्ग से दंड मिलता था। साधकों को न बोलना और अपना मुँह बंद करना क्यों पड़ा? पहला कारण, मनुष्य को भ्रम से अत्यधिक मोहभाव है; और दूसरा, जो साधना नहीं करते हैं उन्हें बातों की सच्चाई जानने की अनुमति नहीं है। दिव्य

सच्चाइयों के बारे में साधक स्पष्ट होते हैं और वे जो भी कहते हैं वे सभी दिव्य रहस्य ही होते हैं, इसलिए एक साधारण व्यक्ति को ऐसी बातें लापरवाही से कहना दिव्य रहस्यों को प्रकट करना होगा, और [साधक] स्वयं नीचे की ओर गिर जाएगा। तो अब मैं इसे क्यों पूरा कर पा रहा हूँ? और इतने सारे लोगों को ऊपर की ओर साधना करने में सक्षम बनाना जो भविष्य में सफलतापूर्वक फल पदवी के लिए साधना करेंगे? ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं इस सब में उत्तरदायी हो सकता हूं। साथ ही, इस कार्य को करने में मैंने सबसे पहले लोगों, मानव समाज, विभिन्न लोकों के जीवों और ब्रह्मांड के प्रति उत्तरदायी होने पर ध्यान किया; केवल इस शुरुआती बिंदु के साथ ही मैं इसे अच्छी तरह से कर सका। फा सिद्धांत विभिन्न स्तरों के आंतरिक अर्थ को सम्मिलित करता है, और जो साधना करते हैं वे अपेक्षाकृत उच्च स्तरों से आए हैं। इसलिए वर्तमान में कुछ शिष्यों ने बहुत ऊँचे स्तरों तक साधना की है, और उन्होंने इस फा का उपयोग,अपना मार्गदर्शन करने के लिए किया है।

फिर यह फा कितना उच्च है? अतीत में, जो लोग साधारण लोगों के बीच फा का प्रसार करते थे, उन्हें उन सिद्धांतों के बारे में बोलने की अनुमति नहीं थी जो बुद्ध के स्तर से ऊँचे थे। इसका उद्देश्य मनुष्यों को यह जानने से रोकना था कि बुद्ध थे या नहीं और उच्च स्तर पर दिव्य प्राणी थे या नहीं। इसका एक कारण है: लोग हमेशा भगवान और बुद्ध की कल्पना करने के लिए मानवीय समझ का उपयोग करते हैं, और वह उनका अनादर करना है। फिर यदि उच्च बुद्धों के बारे में लोगों को पता होता , तो लापरवाही से किसी बुद्ध का नाम इस तरह बोलना बुद्धों की निंदा करना होगा; इसके अतिरिक्त, आधुनिक लोग अनजाने में बुद्ध की निन्दा कर रहे हैं। अतीत के प्राचीन लोग वास्तव में भगवानों और बुद्धों का सम्मान करते थे, लेकिन जहां तक आज के लोगों की बात है, भले ही वे मानते हों, वे निष्ठावान नहीं हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जिनको लगता है कि वे बुद्धों का बहुत सम्मान करते हैं। बुद्ध का नाम उनके होठों पर रहता है, और वे इसे सीधे बोलते रहते हैं; वास्तव में, यह अपने आप में बुद्ध की निन्दा करना है। अतीत में जब लोग "बुद्ध" शब्द का उच्चारण करते थे, तो वे अपने अंदर आदर और सम्मान की भावना उत्पन्न होती अनुभव करते थे और वे इसे बहुत पवित्र मानते थे। आज लोगों में [वे भावनाएँ] नहीं हैं। पाक कला पुस्तकों में "बुद्ध जंपिंग ओवर द वॉल" नामक एक पकवान भी है। यह बहुत लापरवाही है।

हर कोई, इसके बारे में सोचें : मनुष्यों के विपरीत, बुद्ध, इतने पवित्र हैं कि उनकी तुलना नहीं की जा सकती। साधारण लोगों के विचारों का तर्क, साधारण लोगों की विचार संरचनाएं, और उनकी अभिव्यक्ति के रूप, बुद्ध-लोक में अस्तित्वहीन हैं, इसलिए जब आप बुद्ध को मानवीय मानसिकता से देखते हैं, तो आप जो कुछ भी करते हैं वह अपमानजनक होगा। लेकिन क्योंकि बुद्ध लोगों के प्रति दयालु हैं और जानते हैं कि मनुष्य भूल-भुलैया में हैं, जिनके सिद्धांत उलटे हैं, वे मनुष्यों की गलतियों पर ध्यान नहीं देते हैं; इसके अतिरिक्त, लोगों को बचाने के लिए, वे मनुष्यों को बुद्ध के अस्तित्व के बारे में जानने की अनुमति देते हैं। तो यदि बुद्ध और उच्च स्तर के देवता अपने बारे में लोगों को बतायें, तो मनुष्य उनके संबंध में सरलता से कर्म उत्पन्न करेंगे और सरलता से उनके प्रति अपमानजनक हो जाएंगे; ठीक यही कारण है कि वे मनुष्यों को उनके बारे में जानने या और भी ऊँचे स्तरों के बुद्धों के बारे में जानने नहीं देना चाहते। एक तथागत बुद्ध मनुष्य को साधारण लोग और दया योग्य सूक्ष्म रूप में देखते हैं, सूक्ष्म कणों के जैसे। फिर जब एक बहुत-बहुत श्रेष्ठ देवता, एक तथागत बुद्ध को देखते हैं, तो वह बुद्ध भी एक साधारण व्यक्ति की तरह ही है, क्योंकि वह [देवता] इतने श्रेष्ठ हैं। फिर मनुष्य उन्हें कैसे दिखते हैं? वे कुछ भी नहीं हैं। इसके बारे में हर कोई सोचें, मानव जाति ने हमेशा अनुभव किया है कि मनुष्य, साधारण मानव समाज में बहुत अच्छी तरह से रहते हैं और यह कि मनुष्य ब्रह्मांड में सबसे अद्‌भुत प्राणी हैं। वास्तव में, साधारण मानव समाज का यह वातावरण ब्रह्मांड में सबसे निचले स्तर में है। यह कहा जा सकता है कि ब्रह्मांड के प्राणियों में यह सबसे अपवित्र स्थान है। बहुत ऊंचे देवताओं की नजर में, मानव जाति का यह स्थान ब्रह्मांड का कचरे का ढेर है; यह उच्च स्तरीय प्राणियों के मलमूत्र के लिए कचरा स्थल है। तो यदि गन्दे मलमूत्र के बीच कोई आवाज़ बुद्ध का नाम पुकारती है, तो यह अपने-आप में अपमानजनक होगा, इसलिए उच्चतर देवता, मनुष्यों को उनके बारे में जानने की अनुमति नहीं देते हैं।

शायद सभी ने मेरे द्वारा अभी-अभी कहे गए शब्दों पर ध्यान नहीं दिया। मैं कहता हूं कि मैं जो फा फैला रहा हूं, वह ऐसी चीज नहीं है जिसे मनुष्य केवल ज्ञान का रूप मानकर इसे सुनने आता है। यदि आप आ सकते हैं, तो शायद आपका पूर्वनिर्धारित संबंध है। यदि आप विश्वास नहीं करते हैं, तो सभी को मेरी बातों को ध्यान में रखना चाहिए। बेशक, चाहे आपका पूर्वनिर्धारित संबंध कितना भी हो, यदि आपने इसे प्राप्त

किया है, तो मुझे लगता है कि आपको इसे संजोना चाहिए। निःसंदेह यहाँ बैठे सभी लोग इसे संजो कर रखेंगे। दूर-दूर से, यहाँ तक कि विदेशों से भी लोग आए हैं; हांगकांग और यहां तक कि यूरोप से भी लोग आए हैं। उनका उद्देश्य साधना है: एक तो वे गुरु को देखना चाहते हैं, और दूसरी बात, वे यहां आकर फा सुनना चाहते हैं। यह ठीक इसलिए है क्योंकि आप अच्छाई की ओर बढ़ना चाहते हैं और साधना करनी चाहते हैं। बहुत से लोग गुरु की कही हुई बातों को सच मान लेते हैं। वास्तव में मानव सत्य का उपयोग महान फा का आकलन करने के लिए नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यह ब्रह्मांड की नींव है। इसलिए मुझे लगता है कि यहां बैठे प्रत्येक व्यक्ति के लिए, आप सभी को इस पूर्वनिर्धारित रिश्ते को संजोना चाहिए। यदि आपने यह फा प्राप्त कर लिया है, तो साधना करते रहें। इस अवसर को हाथ से न जाने दें।

जिस तरह से यह फा फैल रहा है, वह इतिहास में लोगों को बचाने के किसी भी [तरीके] से अलग है। क्यों? हर किसी ने अंतर देखा है, क्योंकि जब किसी भी प्रकार के बुद्ध मत का विस्तार होगा तो वे लोगों को साधना करने के लिए एक मठ में रहने के लिए कहेंगे। लेकिन यहां मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। इसकी आवश्यकता क्यों नहीं है? क्योंकि बौद्ध धर्म की सीमा के भीतर ही बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जाती है, ताओ भी ताओ मत की सीमा के भीतर ही मार्ग के सिद्धांत सिखाता है; और जहां तक पश्चिमी धर्मों की बात है, वे भी अपने सिद्धांतों से बाहर नहीं निकल सकते। इस बार मैं धर्म के मापदंडों से सीमित नहीं रहा हूं और ब्रह्मांड के मौलिक महान फा को समझा रहा हूं।

अतीत में, ऐसे लोग थे जो कहते थे कि यदि कोई व्यक्ति साधना करनी चाहता है तो उसे सभी मानवीय भौतिक हितों से अपने आपको अलग करना होगा और या तो गहन पहाड़ों और अक्षत वनों में प्रवेश करना होगा या संसार और धर्मनिरपेक्षता के साथ अपने संबंधों को पूरी तरह से तोड़कर मठ में प्रवेश करना होगा। तभी वह शांतिमय साधना कर सकता था। इसका उद्देश्य लोगों को अपने भौतिक हितों के मोहभावों से मुक्त होने के लिए बाध्य करना था। मैं आपको उस तरह के मार्ग पर नहीं ले जाता। क्यों? मैंने एक स्थिति देखी: यदि कोई चाहता है कि लोग जल्द से जल्द फल पदवी प्राप्त करें और बहुत सारे सांसारिक लोग साधना करने में सक्षम हों, तो केवल सामान्य समाज में साधना करनी ही अनुकूल है। और वास्तव में, केवल एक जटिल वातावरण में ही कोई व्यक्ति सही मायने में साधना कर सकता है, और साधना का समय उन साधनाओं

की तुलना में बहुत कम होता है जो इस जटिल वातावरण से बचते हैं। एक और महत्वपूर्ण मुद्दा यह भी है कि कई साधना विधियां व्यक्ति को स्वयं विकसित नहीं करती हैं; वे सह चेतना को विकसित करती हैं। अतीत में यह एक महान रहस्य था; शायद पुस्तक पढ़ते समय सभी ने इसे समझा है। आज मैं चाहता हूं कि आप स्वयं ही अपनी साधना करें; मैं इस फा को निश्चित रूप से आपके वास्तविक स्वरुप को देना चाहता हूं। इसलिए, मैंने यह चुना कि आप सभी साधारण लोगों के जटिल वातावरण के बीच साधना करेंगे। इस तरह से साधना करनी मानव जाति के लिए लाभदायक है। साधना का अभ्यास करते समय, एक व्यक्ति साधारण लोगों के समाज को प्रभावित करने से दूर रहता है और मानव समाज को लाभ भी पहुंचाता है। एक साधक, सामान्य नौकरी और जीवन के साथ, समाज का एक सदस्य होता है और वह फा का अध्ययन कर सकता है और फल पदवी प्राप्त करने तक साधना कर सकता है।

मैंने आप सभी के लिए साधना का यह मार्ग चुना है, इसलिए यह अन्य अभ्यासों की साधनाओं से बिल्कुल अलग है। चूंकि आप सभी धर्म की सीमाओं से पूरी तरह बाहर निकल चुके हैं, मैं अक्सर कहता हूं कि हम कोई धर्म नहीं हैं; मैं बस इस फा को लोगों तक फैला रहा हूं और लोगों को फा प्राप्त करवा रहा हूं। जो अंत तक साधना कर सकते हैं, वे फल पदवी प्राप्त कर सकते हैं। यदि कुछ लोग इस जीवन में साधना करने में असमर्थ हैं, तो जब वे इस फा के सतही सिद्धांतों को जान लेंगे, तो वे अच्छे लोग होंगे, जो समाज को लाभान्वित करते हुए लोगों के दिलों को भलाई की ओर ले जा सकते हैं।

आजकल सामाजिक समस्याएं एक के बाद एक सामने आ रही हैं। आप जानते हैं, चाहे कितने भी फा बना लें, फिर भी अपराध करने वाले लोग होंगे। जैसे ही कोई समस्या सामने आती है तो नए फा बनते हैं, और फिर और अपराध होते हैं और अधिक फा बनते हैं। मानव समाज ने अपने ऊपर इतने सारे प्रतिबंध [लगा] रखे हैं। इसके अतिरिक्त, मानव समाज के पास अब वह सब सहने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है जो मानव समाज ने अपने ऊपर डाला है। जितना अधिक [मानव समाज] स्वयं को बंद कर लेता है, उतना ही इन बातों के विषय में वह चरम पर चला जाता है जो ब्रह्मांड की सच्चाइयों को पहचानने में उसे असमर्थ बना देता है। वास्तव में जो चीजें समाज को अशांत करती हैं, वे इस बात से निर्धारित नहीं होतीं कि कितने कानूनी खंड हैं; एक राष्ट्र से लेकर एक व्यक्ति तक सभी अशांत करने वाले कारकों को एक शब्द में अभिव्यक्त

किया जा सकता है: सद्‌गुण। बात यह है कि लोगों के मन की प्रकृति अब ठीक नहीं है। लोग आज मनुष्य होने के मानदंड खो चुके हैं। इसलिए समाज इतना अराजक है। यदि सभी लोगों के विचार बहुत ऊँचे स्तर पर हैं और सभी का नैतिक गुण बहुत ऊँचा है, तो सोचें कि यह किस तरह का समाज होगा? संपूर्ण मानव समाज किस अवस्था में होगा? यदि सभी लोग जानते हैं कि अनुचित कार्य करना बुरा है, कि यह करने वाले और दूसरों, दोनों के लिए बुरा है, और वे अनुचित कार्य नहीं करते हैं, तो मुझे लगता है कि पुलिस की भी जरूरत नहीं होगी, है ना? हर कोई सचेत रूप से मानव समाज के नैतिक मानदंडों की रक्षा करेगा।

बेशक मानव समाज की ये चीजें वास्तव में प्राथमिक चीजें नहीं हैं जो मैं कर रहा हूं। मुझे इस फा को फैलाना है जिससे हर कोई फा प्राप्त कर सके, साधना कर सके और फल पदवी प्राप्त कर सके। लेकिन साधारण समाज में साधना अभ्यास करने का अनिवार्य रूप से ऐसा प्रभाव होगा; यह वह अतिरिक्त लाभ है जो समाज में इस फा को फ़ैलाने पर मानव जाति को होता है। [फा] साधक को वास्तव में फा प्राप्त करने में सक्षम बना सकता है। यदि, एक जटिल वातावरण में और व्यावहारिक लाभों के बीच, आप ऊपर और इससे परे उठ सकते हैं, तो आप उत्कृष्ट हैं, और आपको फल पदवी प्राप्त करनी चाहिए। फिर, क्या इसके साथ कोई शर्तें जुड़ी हैं? क्या यह है कि जब लोग इस फा को विकसित करना शुरू करते हैं तो [उनकी] सभी भौतिक चीजों को छोड़ दिया जाना चाहिए? ऐसा नहीं है, क्योंकि इस फा को फैलाते समय मैंने इस बात को ध्यान में रखा था कि यह फा बहुत व्यापक रूप से फैलेगा, क्योंकि पूरे इतिहास में फा के प्रसार के लिए वर्त्तमान पद्धति स्थापित की जा रही थी। *चीगोंग* का उदय मेरे लिए आज फा के प्रसार का मार्ग प्रशस्त कर रहा था। मुख्य भूमि चीन में, कुछ लोग *चीगोंग* उत्थान को एक ऐसा आंदोलन कहते हैं जो दैवीय प्राणियों का निर्माण कर रहा है। यदि आरंभ में ऐसा कोई वातावरण नहीं होता, तो आज मेरे लिए फा का प्रसार करना इतना सरल नहीं होता। वास्तव में *चीगोंग* मेरे लिए फा के प्रसार का मार्ग प्रशस्त कर रहा था। बेशक, इस समय कुछ पाखंडी *चीगोंग* गुरु हैं जो अशांति पैदा करने के लिए सामने आते हैं। यदि वे स्वाभाविक रूप से उभरे होते, तो यह सामान्य होता, क्योंकि मानव समाज ऐसा ही होता है। जब पवित्र फा फैलता है तो निश्चय ही वह उन अधर्मी तत्वों पर प्रहार करेगा। जहां पवित्रता है, वहां बुराई भी होती है, यह देखने के लिए कि लोग किस

मार्ग को चुनते हैं। साधना में बुरे तत्वों के हस्तक्षेप के साथ, लोग अपनी साधना में ऊपर उठ सकते हैं। यदि कोई बुरी चीज आपके साथ हस्तक्षेप नहीं कर रही होती, तो मुझे लगता है कि आप साधना नहीं कर पाते। व्यक्तिगत साधना इसी प्रकार होगी और अनेक तत्वों के साथ होगी।

कुछ लोगों को बस यही लगता है कि उन्हें आराम से रहना चाहिए। यदि साधारण लोग ऐसा सोचते हैं, तो वे अनुचित नहीं हैं। लोग बस बेहतर, अधिक खुशी और कम दुख के साथ जीना चाहते हैं। लेकिन एक साधक के लिए, मैं आपको बता दूं कि कुछ दुखों को सहना बुरा नहीं है, क्योंकि मनुष्यों के इस स्थान पर ब्रह्मांड के सिद्धांतों को उल्टा कर दिया गया है; मानव समाज के इस आयाम के सिद्धांत उलटे हैं। इसके बारे में सोचो, जब मानव समाज में सभी लोग आराम का जीवन चाहते हैं, तब वे एक दूसरे से लड़ते हैं और भौतिक लाभ प्राप्त करते हैं और अन्य प्राणी दुर्भाग्य का सामना करते हैं। इसलिए, जीते हुए, लोग कर्म पैदा कर रहे हैं और अन्य लोगों और अन्य प्राणियों को हानि पहुंचा रहे हैं। इसलिए, यदि आप केवल कर्म उत्पन्न करते हैं और कर्म का भुगतान नहीं करते हैं, और आप पीड़ित नहीं होते हैं और कर्म को नहीं हटाते हैं, तो इसके बारे में सोचें: कर्म अधिक से अधिक जमा होगा और बड़ा और बड़ा होगा। अंत में क्या होगा? जब यह व्यक्ति अंदर और बाहर दोनों ओर से पूरी तरह से काले कर्म से भर जाता है, तो इस प्राणी का नाश हो जाएगा—मनुष्य का वास्तव में विनाश। अर्थात उस व्यक्ति का अस्तित्व हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा। इसके विपरीत, यदि लोगों को कुछ कष्ट सहना और कुछ कष्टों का सामना करना पड़ता है जिससे वे कष्ट सह कर कुछ कर्मों को समाप्त कर सकें, तो वे बहुत खुशी से रहेंगे। यह ब्रह्मांड का उचित सिद्धांत और जीवन चक्र का नियम है। अतीत में, वृद्ध लोग अक्सर कहते थे कि बचपन में लोगों को कुछ बीमारियां होती हैं, युवावस्था में लोगों को कुछ कठिनाईयां आती हैं, और बाद में लोगों का जीवन कुछ हद तक बेहतर होता हैं। साधारणतः ऐसा ही होता है। यह मनुष्य के कर्म को नष्ट करने का नियम है, क्योंकि यदि आप कर्म को समाप्त नहीं करेंगे तो आपको सुख नहीं मिलेगा। इतना कर्म होगा तो सुख कहाँ से आयेगा? और कर्म ही मूल कारण है जो आपको दुखी कर सकता है, अधिक पीड़ित कर सकता है, या आपको त्याग करवाता है। यह मनुष्य के संदर्भ में है।

और एक साधक के रूप में, सभी इसके बारे में सोचें, यदि आप अपने कर्म को समाप्त नहीं करते हैं, यदि आपको कुछ कष्ट नहीं होता है, और यदि आप केवल आराम का आनंद लेना चाहते हैं, तो आप साधना कैसे करेंगे? आप यहाँ बैठकर सोचते हैं, "आज मैं तीन लोकों के पार जाना चाहता हूं। कल मैं साधना करके बुद्ध बनना चाहता हूँ।" फिर भी ये चीजें ऐसी नहीं हैं जिन्हें मनुष्य केवल चाहकर ही प्राप्त कर सकता है। आपको वास्तविक साधना के बीच में और व्यावहारिक समाज में, परीक्षणों और क्लेशों से गुजरना होगा, सामान्य लोगों के बीच अपने उस मोहभाव से छुटकारा पाना होगा, और उन मोहभावों को छोड़ना होगा जिन्हें मनुष्य छोड़ नहीं सकता। बेशक, कुछ बेहतर शिक्षित लोग या बुजुर्ग लोग थोड़ा बेहतर कर सकते हैं; वे शांत रहने में सक्षम होते हैं और दूसरों के विपरीत, संघर्ष होने पर या कठिनाइयों का सामना करने पर लोगों के साथ बहस करने या लड़ने से दूर रहते हैं। अनुभव से वे उस तरीके को अपनाने के मूल्य को देख पाए हैं, लेकिन मानवीय भय और लाचारी [उनके विचार में] आंशिक रूप से योगदान करते हैं। साधकों को तुरंत इस मुद्दे को स्पष्ट रूप से देखना चाहिए।

संघर्षों का सामना करने पर, साधकों को उन्हें सहन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, आपको स्वयं सहन करने में सक्षम होना चाहिए, और केवल तभी आप वास्तव में ऊपर उठ सकते हैं। जब कोई दूसरा आपका लाभ उठाता है तो वह आपको पुण्य देता है। उसी समय जब वह व्यक्ति आपका लाभ उठा रहा है, आप वास्तव में कठिनाइयाँ सहन कर रहे हैं, और आपका कर्म समाप्त हो जाता है, जो बदले में पुण्य पैदा करता है। आप एक साधक हैं, और आपका सदगुण *गोंग* में बदल जाता है, तो क्या आपका *गोंग* विकसित नहीं हुआ है? उसी समय जब आप सहन करते हैं, तब आप चीजों को सही ढंग से समझ सकते हैं और इसलिए न तो आप क्रोधित होते हैं और न ही घृणा करते हैं। तो क्या आप अपने नैतिकगुण में भी सुधार नहीं कर रहे हैं? इस सिद्धांत को [सामान्य लोगों के सिद्धांत से] उलटे तरीके से देखा जाना चाहिए।

मैं अक्सर कहता हूँ कि जब कोई दूसरा व्यक्ति आपका लाभ उठाता है या आपके लिए कष्ट पैदा करता है, या जब आप पीड़ित होते हैं, तो आपको उस व्यक्ति के प्रति द्वेष नहीं रखना चाहिए, क्योंकि आप साधना अभ्यास कर रहे हैं। यदि उसने आपके लिए कठिनाई नहीं पैदा की और यदि उसने आपके लिए सुधार के अवसर नहीं पैदा किए, तो आप अपनी साधना में ऊपर की ओर कैसे बढ़ेंगे? इसलिए न तो आप केवल उससे

घृणा नहीं कर सकते, बल्कि आपको उसे अंदर से धन्यवाद भी देना चाहिए। कुछ लोग सोचते हैं: क्या यह बहुत कायरतापूर्ण आचरण नहीं है? यह ऐसा नहीं है। यदि आपकी ऐसी परिस्थिति नहीं होती तो आप वास्तव में कर्म को समाप्त नहीं कर सकते, क्योंकि आप जो चाहते हैं वह आराम नहीं है, और आपकी साधना को सामान्य समाज की साधना व्यवस्था से अलग नहीं किया जा सकता है।

अभी-अभी मैंने कहा था कि मैं शुरू से जानता था कि जब मैं इस फा को फैलाऊंगा तब यह जनता पर प्रभाव डालेगा और मुझे पता था कि कितने लोग इसका अध्ययन करने आएंगे। वर्तमान में चीन में, जो इस फा की साधना करते हैं, उनमें से 1 करोड़ से अधिक हर दिन इसका अभ्यास कर रहे हैं, और यह आंकड़ा 10 करोड़ से अधिक हो जाता है यदि वे लोग जो इस फा के बारे में जानते हैं और वे जो यदा-कदा साधना करते हैं, उनको भी सम्मिलित कर लिया जाये। इसके अतिरिक्त, मुझे यह भी पता है कि निकट भविष्य में यह विश्व भर में बहुत बड़ा हलचल पैदा करेगा। वर्तमान में यह फा अभी भी वैज्ञानिक और तकनीकी समूहों द्वारा नहीं समझा गया है, [लेकिन] भविष्य में मानव समाज के विज्ञान में इस कारण से बड़े बदलाव होंगे; मैंने वास्तव में मानव जाति के लिए कई दिव्य रहस्य प्रकट किए हैं। मानव जाति पूरी तरह से बंधित है और मानव ज्ञान भी प्रतिबंधित है। साधारण समाज में आपके पास कितना भी ज्ञान हो या आपका [समाज में] कितना भी ऊँचा स्थान हो, फिर भी आप एक सांसारिक व्यक्ति ही हैं। इसके साथ ही, आज के प्रयोगसिद्ध विज्ञान ने लोगों को मानवता को बंधित करने के मार्ग की ओर अग्रसर कर दिया है जो उन्हें ब्रह्मांड की सच्चाई को सही अर्थ में पहचानने से रोक रहा है।

अभी-अभी मैंने मुख्य रूप से कहा है कि जब लोग साधना कर रहे होते हैं, तो कुछ कष्ट सहना और कुछ दुःख सहना अच्छी बात है। कुछ लोग कहते हैं,"मैं फालुन दाफा में साधना करता हूं। मेरी साधना आराम से होनी चाहिए, मुझे परीक्षणों और कठिनाईयों से गुजरे बिना अपने *गोंग* को बढ़ाने में सक्षम होना चाहिए, और मुझे इतनी सारी चीज़ों ने परेशान नहीं करना चाहिए।" यदि साधक कर्म का भुगतान नहीं करते हैं और अपने स्तर को नहीं बढ़ाते हैं, तो उनका *गोंग* कभी नहीं बढ़ेगा। कुछ लोग कहते हैं, "मेरे पति ने मुझे अभ्यास करने नहीं देते हैं, मुझे [अभ्यास करने के लिए] सुविधा या समय नहीं दिया, और वह तलाक की धमकी भी देते हैं।" वास्तव में, यह निश्चित रूप से जरूरी

नहीं है कि यह ऐसा ही हो। शायद यह परीक्षा है यह देखने के लिए कि आप अपनी साधना को कितना महत्व देते हैं। लेकिन अभिव्यक्तियाँ वास्तव में बहुत तीव्र हैं। साधना गंभीर है। एक भी परीक्षा या कठिनाई सरल नहीं लगेगी। जब साधकों के लिए कठिनाईयां आती हैं, तो निश्चित रूप से [उनके पीछे] कारण होते हैं। वास्तव में, जब कोई आपके लिए कठिनाई पैदा करता है, तो वह आपको सुधरने में सहायता कर रहा होते है। जैसे-जैसे आप अपने विचार के स्तर में सुधार करते हैं, वैसे-वैसे आप दुःख सहते हुए कर्म को भी समाप्त कर रहे होते हैं। फिर यह भी परखा जा रहा है कि आप इस फा के प्रति अडिग हैं या नहीं। यदि आप फा के प्रति दृढ़ नहीं हैं, तो किसी और चीज का प्रश्न ही नहीं उठता है।

फा पर अपने व्याख्यानों में मैं केवल उन मुद्दों के बारे में बोलता हूं जिनके बारे में मैं देखता हूं कि अभ्यासी भ्रमित हैं, इसलिए शायद यह व्यवस्थित ना हों। जिन बातों को मैं आज कह रहा हूँ, उन बातों को आप अपनी भविष्य की साधना के लिए व्यवस्थित मार्गदर्शन के रूप में नहीं ले सकते हैं। केवल एक चीज जो आपकी व्यवस्थित साधना का मार्गदर्शन करती है, वह है *ज़ुआन फालुन*। इसके बाद मैं जो कुछ भी कहता या बात करता हूं वह *ज़ुआन फालुन* के इर्द-गिर्द ही घूमता है, और केवल *ज़ुआन फालुन* पुस्तक ही आपकी साधना का मार्गदर्शन करती है; यह सबसे व्यवस्थित है। यहाँ बैठे बहुत से लोग अपेक्षाकृत उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं। चाहे आप ताइवान से हों, मुख्य भूमि चीन से हों, या किसी अन्य देश के चीनी व्यक्ति हों, विदेशों में रहते वरिष्ठ चीनियों के अतरिक्त, हर कोई बहुत अच्छी तरह से शिक्षित है; यह कहा जा सकता है कि आप चीनी लोगों के उच्च वर्ग से हैं। मैं अक्सर कहता हूं कि चूंकि यह फा प्रदान किया गया है, इसमें और अन्य *चीगोंग* अभ्यासों के बीच का अंतर बहुत बड़ा है। जो लोग अन्य *चीगोंग* अभ्यास करते हैं वे अक्सर वृद्ध लोग हैं जो सेवानिवृत्त हो चुके हैं और उनके पास करने के लिए कुछ भी नहीं है। उनमें से अधिकांश अपने शरीर का व्यायाम करना चाहते हैं और वे *ची* पद्धतियों का अभ्यास करते हैं। लेकिन जो फालुन दाफा का अभ्यास करते हैं वे [उस तरह] नहीं हैं। वृद्ध लोग एक भाग हैं, लेकिन युवा और मध्यम-आयु वर्ग के लोगों का भाग काफी बड़ा है, और उन्होंने बहुत सी शिक्षा प्राप्त की हुई है।

जब मैं फा पर व्याख्यान देता हूं और अभ्यास सिखाता हूं, तो मैं इसे अन्य *चीगोंग* गुरुओं की तुलना में अलग तरीके से करता हूं। एक औसत *चीगोंग* गुरु सिद्धांतों के एक संग्रह पर संक्षेप में व्याख्यान देता है, फिर लोगों को सिखाता है कि कैसे शारीरिक क्रियाओं का अभ्यास करना है और कैसे कुछ संदेशों का उत्सर्जन करना है। मैं इस तरह कभी नहीं करता। चूंकि मैं वास्तव में फा प्रदान करना चाहता हूं और आपके स्तर को ऊंचा उठाना चाहता हूं, मुझे पहले फा पर व्याख्यान देना चाहिए। प्रत्येक सत्र में मैं एक घंटे के लिए फा पर व्याख्यान देता हूं, फिर मैं आपको फल पदवी [प्राप्त करने] की फा सिखाता हूं—व्यायाम क्रियायों से । तो यह अन्य *चीगोंग* अभ्यासों से भिन्न है। और फा-सिद्धांतों के आंतरिक अर्थ विशाल हैं। जो अच्छी तरह से पढ़े-लिखे हैं और अधिक ज्ञान रखते हैं, वे इसे बेहतर ढंग से समझ पाएंगे और इससे भी ज्यादा यह अनुभव करेंगे कि यह अच्छा है। जिनके पास अधिक ज्ञान है, जो सीखने के लिए आते हैं, उनके लिए फा को तर्कसंगत रूप से समझने में सरलता होगी। बेशक, कुछ हद तक निम्न शिक्षा स्तर वाले भी पूर्वनिर्धारित संबंधों के साथ आते हैं और उन्हें भगवान और बुद्ध की एक निश्चित स्तर की समझ होती है। विशेषत: जब वे फा-सत्यों से चीजों को बहुत स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं, तो उनका सुधार बहुत जल्दी होगा।

चूँकि बैठे हुए लोगों में अभी भी कुछ लोग हैं जो फालुन *गोंग* को पूरी तरह से नहीं समझते हैं, मैं संक्षेप में और सामान्य रूप से फालुन *गोंग* के बारे में बात करूंगा। क्योंकि मैं यहां आया हूं, मैं आपको और अधिक बताना चाहता हूं। यह फा जो मैं प्रदान कर रहा हूं, वह प्राचीन है, ऐतिहासिक रूप से; यदि मैं इस विषय पर बात करना शुरू कर दूं, तो मुझे समय में बहुत पीछे जाना होगा। आज का मानव समाज वह है जो पिछली सभ्यताओं से बचे हुए मानव जाति के कई घटनाओं से गुजरने के बाद नए सिरे से विकसित हुआ है। इसका क्या अर्थ है? आइए उदाहरण के तौर पर अमेरिका की महाद्वीपीय परतों, अर्थात अमेरिका महाद्वीप का उपयोग करें। यह कई बार समुद्र तल तक डूब चुका है और ऊपर उठ चुका है। इस महाद्वीप पर कई सभ्यताएं रही हैं, और प्रत्येक सभ्यता मनुष्य को काफी लंबे समय तक चलती हुई प्रतीत होती है। निसंदेह, वैकल्पिक रूप से कहूँ तो, कुछ छोटे भी हुए हैं; [उनकी छोटी अवधि का] कारण यह था कि मानव जाति की नैतिकता बहुत जल्दी भ्रष्ट हो गई। एक ऐसा दृष्टिकोण जो साधारण लोगों से बहुत आगे है, इतिहास की अवधारणा को उसी तरह से नहीं देखा जा

सकता जिस तरह से साधारण लोग इसे देखते हैं। सांसारिक व्यक्ति, मानव इतिहास को वर्तमान मानव सभ्यता के दृष्टिकोण से ही देखता है। साधक और उनकी समझ जो साधारण लोगों से उत्कृष्ट है, मानव जाति के इस काल की सभ्यता से कहीं उच्च है। इसलिए मैं इतिहास में बहुत दूर तक देखता हूं।

इस फालुन दाफा का इतिहास काफी-दूरगामी—काफी-दूरगामी है। यदि आप इसे पूरी तरह से अतीत में देखना चाहते हैं तो आज के समय की अवधारणाओं का उपयोग करके इसे स्पष्ट रूप से समझाना कठिन होगा। लेकिन मैं आपको बता दूं कि फालुन दाफा के फा-सत्य अत्यंत विशाल हैं और उनके स्तर बेहद ऊंचे हैं। मेरी इस साधना का अभ्यास करने वाले शिष्य, साधना में फल पदवी प्राप्त कर लेने के पश्चात् ,फालुन दिव्यलोक और कई अन्य दिव्य राज्यों और दिव्यलोकों में जा सकते हैं। दिव्य राज्यों और दिव्यलोकों की बात करें तो मैं आपको बता दूं कि ब्रह्मांड में देवताओं के लिए अनगिनत दिव्यलोक हैं। हमारी आकाशगंगा के अनुरूप दायरे में, कई दिव्य राज्य हैं। मानव जाति की बुद्धों के विषय में एक निश्चित स्तर तक की समझ है। उदाहरण के लिए, [वे जानते हैं कि] बुद्ध अमिताभ सुखावटी के दिव्यलोक की अध्यक्षता करते हैं और यह कि लापीस लाजुली दिव्यलोक, कमल दिव्यलोक—अद्‌भुत दिव्यलोक, देवताओं के दिव्यलोकभी हैं जिनकी अध्यक्षता देवता करते हैं। जहाँ तक पश्चिमी धर्म के यीशु के साथ-साथ संत मेरी और कुछ अन्य पवित्र धर्मों की बात है तो उनके भी दिव्य राज्य हैं। बेशक, कुछ दिव्य राज्य उस ब्रह्मांडीय दायरे से और इस छोटे ब्रह्मांड के दायरे से जिसके बारे में मानव जाति जानती है उससे भी कहीं आगे हैं। इसलिए जब मैं साधना की चीजों के बारे में बात करना शुरू करता हूं, तो इसमें सम्मिलित समय या आयाम अत्यंत विशाल होते हैं।

फिर एक पूर्व ऐतिहासिक और बहुत ही अतीत युग में, मानव सभ्यताओं के इस समूह से पहले, मैंने एक बार विश्व के लोगों के बीच व्यापक रूप से फा फैलाया और लोगों का उद्धार किया था। उस समय, मैं लोगों का वैसे ही उद्धार कर रहा था जैसे आज बौद्ध धर्म करता है। इस बार मैं दाफा के मूलभूत सिद्धांत का उपयोग उच्चतर कार्य करने के लिए कर रहा हूं, इसलिए मैं जो फा पढ़ा रहा हूं उसका आंतरिक अर्थ बहुत गहरा है। चूँकि मैं जो करना चाहता हूँ वह बहुत बड़ा है, बहुत से बुद्ध, देवता और ताओ हैं जो ऐसा करने में मेरी सहायता कर रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह फा केवल बौद्ध

विचारधारा के एक अभ्यास के सिद्धांतों की व्याख्या नहीं करता है; यह ब्रह्मांड के सिद्धांतों की व्याख्या करता है।

संपूर्ण ब्रह्मांड सत्य-करुणा-सहनशीलता के भौतिक तत्वों से बना है, और यह बहुत उच्च लोकों में सत्य-करुणा-सहनशीलता है। सत्य-करुणा-सहनशीलता अच्छाई, सुंदरता और करुणा के साथ-साथ सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तत्वों को जन्म दे सकता है। फिर जहां तक सहनशीलता का प्रश्न है, यह सहन करने की क्षमता और अक्षमता को जीवन दे सकता है; इसलिए जैसे-जैसे फा और नीचे की ओर जाता है, फा-सत्य और अधिक विशाल और जटिल होते जाते हैं। *यिन* और *यांग* और परस्पर-जनन और परस्पर-विरोध सभी सत्य-करुणा-सहनशीलता से आते हैं। प्रत्येक स्तर और क्षेत्र में, जैसे-जैसे यह मनुष्यों की इस अवस्था तक जाता है, यह असाधारण रूप से जटिल हो जाता है। मानव जाति में अच्छाई एवं बुराई, उचित एवं अनुचित, और भावनाएं होती हैं। इसके अतिरिक्त, मानव सिद्धांत [ब्रह्मांड के सिद्धांतों के] उलटे हैं। मानवीय सिद्धांतों के बीच [के सिद्धांत] देश पर शासन करने वाले राजा, विश्व पर विजय प्राप्त करने वाले सैनिकों और शक्तिशाली का नायक बनने के सिद्धांत उत्पन्न होते हैं। मानव जाति में अर्ध-दिव्य संस्कृति के आने के बाद, और भी अधिक जटिल सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न हुईं, जिनमें मानव समाज द्वारा समर्थित चीजें सम्मिलित हैं, जैसे कि परोपकार, धार्मिकता, औचित्य, ज्ञान, विश्वास, और ऐसी अन्य चीजें। मानव जाति के पास सच्चे फा-सत्यों की कमी के कारण, लोग नहीं जानते कि ब्रह्मांड का सच्चा फा क्या है और क्या वास्तव में अच्छा है क्या बुरा है नहीं बता सकते हैं या उचित अनुचित के बीच फर्क नहीं कर सकते हैं। मनुष्य का निर्माण बुद्ध-प्रकृति और असुर-प्रकृति दोनों के बीच हुआ है। जब लोग अस्थिर मनोदशा में होते हैं, बुरे विचार रखते हैं, या अविवेकी हो जाते हैं, तो उन्हें असुर-प्रकृति द्वारा प्रेरित किया जा रहा होता है। जब लोग बहुत तर्कसंगत स्थिति में होते हैं और बहुत दयालु और मिलनसार मन की स्थिति में काम कर रहे होते हैं, तो वे अपने बुद्ध-स्वभाव से प्रेरित हो रहे होते हैं।

फालुन दाफा में सभी स्तरों पर भौतिक जीवन के सत्य और अभिव्यक्तियाँ सम्मिलित हैं। इसमें सब कुछ समाहित है और कुछ भी नहीं छुटा है; सब कुछ इस फा के भीतर है। महान फा बौद्ध विचारधारा की सीमाओं से ऊँचा है। इसमें बुद्ध, ताओ और देवताओं के सभी सत्य सम्मिलित हैं, और इसमें ऐसे सत्य भी सम्मिलित हैं जो उन सत्यों से ऊँचे

हैं। सभी इसमें समाहित हैं। ब्रह्मांड का अस्तित्व इसके कारण ही है। यह ब्रह्मांड में हर चीज के लिए मानदंड प्रदान करता है, और इसने प्रत्येक स्तर पर असंख्य जीवों का निर्माण किया है। जैसे-जैसे महान फा व्यापक रूप से फैलता है, विभिन्न स्तरों पर कई भगवान, बुद्ध और ताओ मेरी सहायता कर रहे हैं जैसे मैं चीजें करता हूं। वर्तमान में, फा प्राप्त करने वाले असंख्य जीवों में, धार्मिक लोगों को इसे प्राप्त करने में सबसे कठिन समय लगता है, क्योंकि उनके हृदय में वे देवता होते हैं जिन पर वे विश्वास करते हैं, उनके बुद्ध और उनके ताओ होते हैं। वे यह नहीं मानते कि अन्य देवता, अन्य बुद्ध और उच्चतर देवता हैं। इसलिए यह लोग महान फा को सुनते या मानते नहीं हैं। यही वह कारण है जो उन्हें फा प्राप्त करने से रोकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे बुरे हैं, बल्कि यह है कि वे जिन्हें मानते हैं, वे अतीत के सच्चे, पवित्र देवता हैं और इससे उनके लिए फा को प्राप्त करना कठिन हो जाता है और यह एक बाधा बन जाती है। वे नहीं जानते कि जैसे-जैसे धर्म लोगों को बचाने में सक्षम नहीं होने की स्थिति में पहुँचते हैं, देवता स्वयं भी इस फा को प्राप्त कर रहे हैं।

क्या आप जानते हैं, शाक्यमुनि ने कहा था, "धर्म-विनाश काल में, मेरा धर्म लोगों को बचाने में सक्षम नहीं होगा।" ऐसा लगता है कि किसी ने इन शब्दों पर ध्यान नहीं दिया है, लेकिन वास्तव में अब यह धर्म-विनाश काल है, और कोई धर्म नहीं है। आधुनिक लोग वास्तव में उस धर्म के वास्तविक अर्थ को नहीं समझ सकते हैं जिसे धर्मों में भगवान और बुद्ध ने अतीत में पढ़ाया था, और न ही भिक्षु या भिक्षुणीयां अब शास्त्रों के मूल अर्थ को समझ सकते हैं। इसके अतिरिक्त, इतिहास के दौरान कई भिक्षुओं द्वारा लिखी गई कई पुस्तकों को शास्त्रों के रूप में पढ़ा गया है। [वे] धर्म अब अस्त-व्यस्त हो गए हैं, और विश्व के लोग अब साधना करनी नहीं जानते हैं। मैंने ईसाइयों से पूछा है कि यीशु ने क्यों सिखाया कि जब कोई आपको बाएं गाल पर मारता है तो आपको उसे मारने के लिए अपना दाहिना गाल देना चाहिए। वे इसे स्पष्ट रूप से नहीं समझा सके। इससे पता चलता है कि आजकल लोगों के लिए किसी दिव्य प्राणी के शब्दों के वास्तविक आंतरिक अर्थ को समझना कठिन है। लोग आधुनिक लोगों की धारणाओं और सोचने के तरीकों का उपयोग करते हुए महान ज्ञानप्राप्त प्राणियों ने अतीत में क्या कहा था और दिव्य प्राणियों एवं उनके शब्दों को समझने का प्रयत्न करते हैं। वे अभी इस फा को नहीं समझ सकते हैं। वास्तव में, यीशु ने जो कहा उसका आंतरिक अर्थ बहुत सरल है: जब कोई

दूसरा व्यक्ति आपको मारता है तो वह आपको पुण्य देता है; जब आप पीड़ित होते हैं, तो आपके अपने कर्म समाप्त हो जाते हैं। जब आप शांति से अपना दूसरा गाल दूसरे व्यक्ति को मारने के लिए दे सकते हैं, तब आप मन के बहुत ऊंचे स्तर पर पहुंच गए होंगे। धार्मिक विश्वास वास्तव में साधना है। अनिवार्य रूप से, साधना स्वयं पर निर्भर करती है और *गोंग* गुरु पर निर्भर करता है। जब तक आप मानवीय स्तर पर अच्छा करते हैं, तब तक यीशु, देवता, या बुद्ध आपको *गोंग* विकसित करने में सहायता करेंगे। इसी तरह वे उन प्राणियों की सहायता करते हैं जिन्हें वे बचा रहे होते हैं। सांस्कृती, भाषा और समय के सीमित होने के कारण, यीशु ने केवल ऊपरी तौर पर सिद्धांतों की शिक्षा दी, न कि उनका सार।

आज फा प्रदान करते हुए मैंने ब्रह्मांड के फा के सिद्धांतों को व्यापक रूप से सिखाया है। फिर भी, धर्म- विनाश काल में लोगों के लिए फा प्राप्त करना अभी भी कठिन है। इस बार, इस फा को प्रदान करने में, मैंने उस क्षण को चुना जिसमें जीवित प्राणियों के लिए सबसे सरल होगा फा को प्राप्त करके आगे फ़ैलाने की शुरूआत करना। मैंने फा प्रदान करने के लिए एक ऐसा समय चुना जिसमें सभी धर्म अपने अंतिम चरण में पहुंच चुके थे और जब मानव जाति अत्यंत बुरी स्थिति में थी। वर्त्तमान के लोगों के मन में मानवीय मानदंड नहीं हैं, और बहुत कम लोग सच्चाई से दिव्यता में विश्वास करते हैं। मैंने इस समय को फा प्रदान करने के लिए चुना है। पहले मैंने कहा था कि फा प्रदान करने में मैं लोगों के प्रति उत्तरदायी हूं, मैं समाज के प्रति उत्तरदायी हूं, और वास्तव में मैं देवताओं के प्रति भी उत्तरदायी हूं। मैंने किसी भी धर्म में हस्तक्षेप नहीं किया है क्योंकि वर्तमान के धर्मों को अब उनके देवताओं द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जैसे-जैसे समाज इस स्तर पर पहुंचा है, मनुष्यों के मन सभी भ्रष्ट हो गए हैं। फिर भी मुझे पता है कि बहुत से लोग हैं जिनके अभी भी बुद्ध-स्वभाव और मूल में अच्छाई है; यह केवल इतना है कि वे मानवीय भ्रष्टाचार की प्रचंड धारा के साथ नीचे फिसल रहे हैं। तो इस समय के लोगों को अभी भी बचाया जा सकता है। इसकेअतिरिक्त, फा अति विशाल है, और लोगों को बचाने की इसकी क्षमता असीमित है।

यह फा मानव समाज को एक दो दिन के उत्साह के लिए नहीं दिया गया है। जैसे [हम] लोगों को बचाते हैं [हम] भविष्य की स्थापना कर रहे हैं। यह फा, क्योंकि यह विशाल

है, इसमें अपार आंतरिक अर्थ हैं, और व्यक्ति की साधना के दौरान व्यायामों के अभ्यास से जो चीजें उत्पन्न होती हैं, वे अत्यंत समृद्ध हैं। आपको पता है, इसमें बहुत, बहुत सारी क्षमताएं हैं; प्रत्येक स्तर पर ऐसी दस हजार से अधिक हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि महान फा बौद्ध विचारधारा तक सीमित नहीं है। इसने सभी क्षमताओं को इकट्ठा कर लिया है, और यह ब्रह्मांड का फा है। तो इतनी बड़ी चीज के साथ, इसके बारे में सोचें, जब किसी ने अंत तक और फल पदवी के बिंदु तक साधना की है, तो इस प्रक्रिया में कितनी चीजों को साधना द्वारा प्राप्त किया होगा? जब कोई व्यक्ति अपनी साधना में फल पदवी तक पहुंच सकता है, तो उसका स्तर ऊंचा होगा, उसका पराक्रम महान होगा, और उसकी फा-शक्ति भी काफी महान होगी।

अभी-अभी मैंने एक शब्द के बारे में बात की: " परस्पर-जनन और परस्पर-विरोध।" परस्पर-जनन और परस्पर-विरोधक्या है? मैं आपको यह सिद्धांत समझाता हूँ। मानव समाज में बुरे लोगों को, स्वर्ग में असुरों को और पताललोक में भूतों को उच्च प्राणी शुद्ध क्यों नहीं करते? ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा क्यों नहीं हो सकता? जीवन चाहे किसी भी लोक का हो, यदि उसमें नकारात्मक भूमिका निभाने वाले प्राणी [अस्तित्व में] नहीं हैं, यदि उस जीव को बिना प्रयास किए सफलता मिलती है, यदि वह कठिनाइयों से नहीं गुजरा है, और यदि कोई निम्न-स्तर के जीव को वह जो चाहता है उसे पाने के लिए कठिन और परिश्रमी प्रयासों से नहीं गुजरना पड़ता है, तो ऐसे जीव को पता नहीं चलेगा कि उन्होंने क्या पाया है, और उन्हें वह अनुभव नहीं होगा जो परिश्रम से पाया जाता है ; सफलता और असफलता क्या होती है, यह तो उन्हें शायद ही समझ आएगा। उन्हें संतुष्टि का आनंद नहीं मिलेगा, उन्हें पता नहीं चलेगा कि दुख क्या है, और उन्हें यह भी नहीं पता चलेगा कि खुशी क्या है। क्योंकि निश्चित ही, ब्रह्मांड में उच्च स्तरों पर सकारात्मक और नकारात्मक प्राणी हैं, और निचले स्तरों पर अच्छाई और बुराई है, और असुरों और बुद्धों, देवताओं और भूतों, और उससे निचले स्तरों पर अच्छे लोग और बुरे लोग हैं, ब्रह्मांड में जो जीवन है उसमें उर्जा है, और केवल चुनौतियों का सामना करके ही प्राणी आनंददायक जीवन जी सकते हैं।

अभी-अभी मैंने आयामों के बारे में बात की है, इसलिए मैं ब्रह्मांड के आयामों और प्राणियों के सतही भौतिक रूपों के बारे में कुछ बात करूंगा। ब्रह्मांड में एक बहुत ही उच्च क्षेत्र में अब कोई मूर्त प्राणी नहीं हैं, फिर भी वह पदार्थ जो निराकार है और जो

ब्रह्मांड को चरम सूक्ष्म जगत में भर देता है, वह भी एक जीवित, बुद्धिमान जीव है। कुछ ऐसे भी हैं जो इससे भी अधिक सूक्ष्म हैं। सतह के जितना करीब होगा, ब्रह्मांड में कणों की स्थूलता उतनी ही बड़ी होगी। आज का मानव-विज्ञान अब कुछ कणों के बारे में जानता है, जैसे कि अणु, परमाणु, न्यूट्रॉन, इलेक्ट्रॉन, क्वार्क और न्यूट्रिनो, लेकिन यह अंतिम भौतिक कणों से बहुत परे हैं—मूल पदार्थ से। मानव जाति के इस आयामी स्तर में सभी पदार्थ आणविक कणों से बने होते हैं। हवा, यह मेरा यहाँ का डेस्क, टेबल कवर, लोहा, मिट्टी, चट्टानें, पानी—प्रत्येक प्रकार की वस्तु अणुओं से बनती है, इस स्तर के कणों से। मैं अक्सर इस सिद्धांत के बारे में बात करता हूं: मैं कहता हूं कि लोगों के मन उच्च प्राणियों द्वारा नियंत्रित होते हैं, और वैज्ञानिकों के मस्तिष्क उच्च प्राणियों द्वारा अवरुद्ध होते हैं। मनुष्य यह नहीं सोच सकता कि इस आयामी स्तर को कैसे पार किया जाए। अणु हों या परमाणु, वे केवल कणों के पृथक रूपों, एक कण, या कुछ कणों के अस्तित्व के रूप का अध्ययन करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उनके पास आणविक और परमाणु कणों की पूरी सतह को देखने का कोई तरीका नहीं है। बेशक, इस तरह की तकनीकी पद्धति अभी उपस्थित नहीं है। जब लोग वास्तव में इस सतह को देख सकेंगे, तब लोग अन्य आयामों की खोज पूरी कर पाएंगे। यह बस इतना सरल है। वे आयाम काफी विस्तृत और अद्‌भुत है। कोई व्यक्ति उनके काल-अवकाश और आकार की अवधारणाओं को समझने के लिए साधारण लोगों के विचारों और सोचने के तरीकों का उपयोग नहीं कर सकता है; मनुष्य को उन्हें समझने के लिए इस सोच की स्थिति से बाहर निकलना होगा। सूक्ष्म जगत के कणों द्वारा निर्मित अनेक आयाम हमारे इस आयाम से भी अधिक विस्तृत हैं।

कणों में ऊर्जा होती है। इसलिए, इस समझ से, इसका अर्थ यह है कि पुराना ब्रह्मांड ऊर्जा से बना था। मानव जाति समझ गई है कि परमाणुओं में रेडियोधर्मिता होती है, परमाणु नाभिक में रेडियोधर्मिता होती है, और न्यूट्रॉन में रेडियोधर्मिता होती है। लेकिन क्या आप जानते हैं, [और नीचे जाने पर] क्वार्क और न्यूट्रिनो, जितने अधिक सूक्ष्म पदार्थ, उतनी ही अधिक ऊर्जा और उतनी ही शक्तिशाली इसकी रेडियोधर्मिता? जहाँ तक मनुष्यों की बात है, उन्होंने अभी तक यह अनुभव नहीं किया है कि अणुओं से बने इस सतही पदार्थ में भी रेडियोधर्मिता होती है। यह केवल इतना है कि शरीर भी अणुओं से बना है और भौतिक संसार में सब कुछ अणुओं से बना है, और लोग अणुओं की ऊर्जा

और रेडियोधर्मिता को समझ और अनुभव नहीं कर सकते हैं। मानव विश्व की शोध विधियां, प्रयोगशाला परीक्षण उपकरण और परीक्षण उपकरण स्वयं अणुओं द्वारा गठित सभी सतह की वस्तुएं हैं। ऊर्जा को मापने के लिए जो उपकरण मानव उपयोग करता है वे भी अणुओं से ही बने होते हैं। आप परीक्षणों के माध्यम से कैसे पता लगा सकते हैं कि अणुओं में ऊर्जा होती है? इसलिए मनुष्य परीक्षण के माध्यम से अणुओं की ऊर्जा का पता नहीं लगा सकता है। ब्रह्मांड में, अणु किसी भी तरह कणों का अंतिम स्तर नहीं होते हैं, और उनमें भी ऊर्जा होती है, अणुओं से एक स्तर बड़े कणों के प्राणी, उसी तरह देखते हैं जैसे मनुष्य परमाणुओं को देखते हैं। साधना में, कुछ साधक न केवल *गोंग* को ऊपर की ओर बढ़ाते हैं बल्कि नीचे की ओर भी बढ़ाते हैं। यदि मनुष्य को उस स्तर के नजरिए से देखा जाए, तो वह विशिष्ट रूप से आकर्षक लगता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अणुओं के स्तर [पर बने कण] सबसे बाहरी और सबसे बड़े कण नहीं हैं।

हम जानते हैं कि परमाणुओं में परमाणु नाभिक और इलेक्ट्रॉन होते हैं। क्या परमाणु नाभिक के चारों ओर घूमने वाले इलेक्ट्रॉनों का रूप इस पृथ्वी, और सूर्य की परिक्रमा करने वाले कई ग्रहों के रूप जैसा नहीं लगता? चाहे यह जितना भी छोटा हो, और भले ही कण सूक्ष्म है, उसके स्तर की परत [यहाँ से] भी बड़ी हो सकती है; अर्थात, उसका कुल आयतन बहुत बड़ा होता है। जब आप किसी व्यक्ति को देखते हैं, उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति के केवल एक आणविक कण को देखता है, तो वह व्यक्ति को नहीं देख पाएगा; केवल सतह को देखकर, जो इस स्तर के सभी कणों से बनी है, जो व्यक्ति को बनाती है, क्या हम व्यक्ति को देख सकते हैं। यदि आप एक परमाणु को पृथ्वी के आकार तक बड़ा करने के लिए एक उच्च-परिमाण, बहुत-चौड़े-कोणीय माइक्रोस्कोप का उपयोग कर पाएं और फिर देखें कि इसमें कितने जीव हैं—बेशक, मनुष्य अभी ऐसा नहीं कर सकते हैं—जब आप देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि यह एक और व्यवस्था है, और वहां के जीवों के लिए यह एक विशाल आकाश और पृथ्वी है।

अभी-अभी मैंने कहा कि अणु सतह के स्तर पर सबसे बड़े कण नहीं हैं। तो सबसे बड़े कणों की परत कौन-सी है? सबसे बड़े कणों की परत को मनुष्य कभी नहीं जान पाएंगे। लेकिन लोग अपनी आंखों से अणुओं से एक परत बड़े कणों को देख सकते हैं, हालांकि वे उनके बारे में सोचने का साहस नहीं करते हैं। अंतरिक्ष में ये ग्रह, ब्रह्मांड में ये ग्रह,

क्या ये कणों की परत नहीं हैं? चूँकि आपकी अवधारणाएँ आज के विज्ञान की सीमाओं तक सीमित हैं, आप केवल यह देख सकते हैं कि ग्रह पूरे आकाशीय पिंड में बिखरे हुए हैं, लेकिन वे आपस में जुड़े हुए हैं। स्थूल जगत से, समझे की मानव शरीर एक ग्रह से बहुत बड़ा हो जाता है, और जब आपका आयतन, आपका शरीर, आपकी सोच और आपकी क्षमता इससे कहीं अधिक हो जाती है—जैसे जब कोई व्यक्ति एक अणु को देखता है—जब आप इसे देखते हैं, क्या ये ग्रह सूक्ष्म जगत के कणों की संरचना के समान नहीं होंगे? लोगों के पास इतना ज्ञान और कल्पना नहीं है। मैं कहूंगा कि बुद्ध वास्तव में सबसे महान वैज्ञानिक हैं। मानव जाति के विज्ञान ने मानव जाति को सीमित कर दिया है। मानव जाति के अनुभवजन्य विज्ञान ने लंबे समय से चली आ रही कई अनुचित अवधारणाएँ बनाई हैं, और [लोग] इससे सीमित हो गए हैं। यदि आप इससे आगे जाते हैं, तो यह कहता है कि आप वैज्ञानिक नहीं हैं। लोग इस तरह के तथाकथित विज्ञान के उपयोग से स्वयं को बहुत ही अधिक सीमित कर लेते हैं,और वे ब्रह्मांड की सच्चाई को समझने में कम, और कम सक्षम हो जाते हैं।आधुनिक अनुभवजन्य विज्ञान कहता है कि मानव का विकास जाति-विकास से आता है। वास्तव में, जो जाति-विकास का सिद्धांत सामने रखता है वह बिलकुल अस्तित्व में ही नहीं है; मनुष्य बिलकुल भी जाति-विकास के माध्यम से नहीं बने हैं। पूरे इतिहास काल में, मानव समाज कई सभ्यताओं से गुज़रा है, और सभ्यता के प्रत्येक काल में अलग-अलग चीज़ें सम्मिलित हैं। अब जब मैंने इस विषय पर चर्चा शुरू की है तो मैं चाहता था कि आप और जानें, क्योंकि आपकी शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है और आपकी समझने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक है *(तालियां)*, इसलिए मैं इसके बारे में कुछ और बात करूंगा।

जैसा कि आज के वैज्ञानिकों ने कहा है, ब्रह्मांड बिलकुल भी बिग बैंग के माध्यम से नहीं बना था। और मनुष्य वानर परिवार से बिल्कुल विकसित नहीं हुए हैं। जब डार्विन ने पहली बार जाति-विकास का सिद्धांत प्रस्तावित किया, तो वह कमियों से भरा था। उन्होंने अपनी ओर से बहुत शंका के साथ ऐसा किया, जिसमें सबसे बड़ी त्रुटी, वानर कथित तौर पर मनुष्य में विकसित होने के बीच की काफी लंबी अवधि को खाली छोड़ दिया है । इसका भौतिक प्रमाण अभी सामने नहीं आया है; आज भी किसी को कुछ नहीं मिल पाया है। फिर भी लोगों ने [सिद्धांत] को स्वीकार कर लिया है और इस पर विश्वास करते हैं जैसे कि यही सत्य है। आज का अनुभवजन्य विज्ञान एक भ्रम है। मानव

जाति अनुचित दिशा में जा रही है, और लोग ब्रह्मांड के सत्य को नहीं देख पा रहे हैं, न ही वे अन्य आयामों के अस्तित्व को स्वीकार करने का साहस करते हैं। फिर भी अन्य आयामों की विभिन्न घटनाएं जिन्हें स्पष्ट रूप से समझाया नहीं जा सकता है, मानव जाति के इस आयाम में प्रकट हो सकती हैं। लेकिन लोग उन्हें यह सोचकर स्वीकारने या मानने का साहस नहीं करते कि यह वैज्ञानिक नहीं होगा। जो समझ में नहीं आता उसे समझने के लिए यदि कोई आधुनिक वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करे तो क्या वह वैज्ञानिक नहीं होगा? चूँकि विज्ञान ने विज्ञान के लिए बहुत सारी परिभाषाएँ निर्धारित की हैं, लोग चीजों को समझने का प्रयत्न करते समय उनसे आगे जाने का साहस नहीं करते हैं।

जब मैं ब्रह्मांड पर व्याख्यान दे रहा था तो मैं लघु ब्रह्मांड की अवधारणा को सामने लाया। न केवल मनुष्य यह कल्पना करने का साहस नहीं करते कि यह लघु ब्रह्मांड कितना बड़ा है—बेशक, मानव विचार हमेशा यह जांचने का प्रयत्न कर रहा है कि ब्रह्मांड कितना बड़ा है—आधुनिक विज्ञान में अभी भी लघु ब्रह्मांड की यह अवधारणा नहीं है जिसके बारे में मैं अक्सर बात करता हूं। विज्ञान मानता है कि यह ब्रह्मांड ही वह ब्रह्मांड है जिसे आंखें देख सकती हैं। लेकिन यह ब्रह्मांड कितना बड़ा है जिसकी मैं बात करता हूं? इसे मानव संख्याओं या भाषाओं का उपयोग करके वर्णित नहीं किया जा सकता है, लेकिन इसकी अनुमानित संरचना का वर्णन किया जा सकता है—आप जानते हैं, एक लघु ब्रह्मांड में कितनी आकाशगंगा जैसी आकाशगंगाएं हैं? यहां बैठे लोगों में इस तरह की विशेषज्ञता वाले कुछ लोग हो सकते हैं जिन्होंने इसे पुस्तकों से सीखा है, लेकिन मैं जो कहता हूं वह अलग है। इस वर्तमान के लघु ब्रह्मांड में 2.7 अरब से अधिक आकाशगंगा जैसी आकाशगंगाएं हैं, लगभग 3 अरब से कम। यह वस्तुओं को देखने के लिए मानवीय आंखों का उपयोग करने की फा से आया है, और यह उस तरह की खगोलीय पिंड संरचना का वर्णन करता है जिसे मनुष्य समझ सकते हैं। भविष्य के ब्रह्मांड में यह संख्या बदल जाएगी। शाक्यमुनि ने एक बार यह कहा था, अर्थात्, तथागत बुद्ध गंगा नदी में रेत के दानों जितने हैं। शाक्यमुनि तथागत बुद्ध थे; उन्होंने कहा कि तथागत बुद्ध संख्या में गंगा नदी में रेत के दानों के जितने हैं। वस्तुओं को देखने के लिए बुद्ध की आंखों का उपयोग करके ऐसा कहा गया था। वास्तव में, यदि आप लघु ब्रह्मांड में आकाशीय पिंडों को बिना किसी बाधा के देखते हैं, तो वे रेत के

कणों के समान असंख्य होंगे, और अणुओं की तरह घने होंगे। इस लघु ब्रह्मांड की सीमा पर एक बाहरी आवरण है, तो क्या यह लघु ब्रह्मांड इस ब्रह्मांड की सबसे बड़ी सीमा है? बिलकुल भी नही। यदि आप इस लघु ब्रह्मांड को एक बड़े, विशाल आयाम के परिप्रेक्ष्य से देखते हैं, तो यह एक विशाल आयाम के एक कण से अधिक कुछ नहीं है।

फिर ब्रह्मांड के बाहर क्या है? बहुत लंबी अंतरिक्ष-समय की यात्रा से गुजरने के बाद और दूर से देखने पर प्रकाश का एक बिंदु दिखाई देगा। जैसे-जैसे यह पास आता जाता है, आप पाएंगे कि प्रकाश का यह बिंदु बड़ा और बड़ा और बड़ा होता जाता है। इस बिंदु पर आपको पता चलेगा कि यह भी एक ब्रह्मांड है, जो लगभग हमारे इस ब्रह्मांड के आकार का है। फिर ऐसे कितने ब्रह्मांड हैं? फिर भी मनुष्य जिस तरह से वस्तुओं को देखता है, उस तरह से, लगभग तीन हजार ऐसे ब्रह्मांड दिखाई देते हैं। ये सभी वैचारिक आंकड़े हैं जो मानवीय समझ और एक प्रकार के भौतिक तत्व के प्रति उनकी समझ पर आधारित हैं। ब्रह्मांड की संरचना अत्यंत जटिल है। इसके बाहर, बाहरी आवरण की एक और परत है; यह एक दूसरे स्तर के ब्रह्मांड का निर्माण करता है। फिर एक और भी बड़ी सीमा में, जो इस दूसरे स्तर के ब्रह्मांड से आगे जाती है, उसी आकार के तीन हजार और ब्रह्मांड हैं जो तीसरे स्तर के ब्रह्मांड का निर्माण करते हैं। यह केवल आयामों की परतें नहीं है। साधारण समाज के धर्म जो स्वर्ग के नौ स्तरों [के संबंध में] बात करते हैं, यदि मैं उन्हें देखने के लिए कणों की इस परत की सतह का उपयोग करता हूं, तो स्वर्ग के ये नौ स्तर, सौर मंडल के नौ ग्रहों की सीमा तीन लोकों में एक आयाम के अनुरूप हैं, वह कणों की एक परत से बना है। हमारा सौरमंडल सुमेरु पर्वत के दक्षिणी सिरे पर है। मैं अक्सर कहता हूं कि जीवन और ब्रह्मांड मानव जाति के लिए हमेशा के लिए पहेली बने रहेंगे। मनुष्य कभी भी ब्रह्मांड की सच्चाई को नहीं जान पाएंगे, न ही उनके लिए यह संभव होगा कि वे जीवन का गठन करने वाले सबसे मूल कारणों के स्थान को स्पष्ट रूप से पहचान सकें, क्योंकि मनुष्य कभी भी अपने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सूक्ष्मता के उस स्तर तक विकसित करने में सक्षम नहीं होंगे। कुछ लोग सोचते हैं: यदि यह इसी तरह चलता रहा तो क्या मानव जाति का विज्ञान और प्रौद्योगिकी अधिक से अधिक उन्नत नहीं हो जाएगा? वास्तव में ऐसा नहीं है। भले ही मानव जाति के विज्ञान और प्रौद्योगिकी को परग्रही जीवों द्वारा सीधे हेरफेर और नियंत्रित किया गया था, साथ ही मानव विज्ञान और प्रौद्योगिकी और इन परग्रही जीवों को भी

उच्च प्राणियों द्वारा व्यवस्थित किया गया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी केवल उच्चतर प्राणियों की व्यवस्था के अनुसार आगे बढ़ रहे हैं। मानव समाज केवल आकाशीय घटनाओं में होने वाले परिवर्तन के अनुसार कार्य कर रहा है। अतीत का इतिहास निरंतर स्वयं को दोहरा रहा है, और आज का इतिहास पहले के इतिहास की पुनरावृत्ति और संशोधन है।

ये बातें जो मैंने अभी-अभी कही थीं, आपकी सोच को थोड़ा विस्तृत करने के लिए थीं; यह आपकी साधना के लिए लाभदायक होगा। ब्रह्मांड ऐसा नहीं है जैसा मानव जाति इसे समझती है। तो फिर यह ब्रह्मांड कितना बड़ा है? मैं आपको ब्रह्मांड की अवधारणा बताता रहा हूं। भले ही इसमें करोड़ों स्तर और जोड़ दिए जाएं, फिर भी यह विशाल आकाशीय पिंड में धूल का एक कण ही होगा। मनुष्यों को मैं इसे समझाने के लिए सिद्धांतों और बहुत सारी संख्याओं का उपयोग कर सकता हूं, लेकिन मनुष्यों के पास पहले तो इसे अनुभव करने का कोई तरीका नहीं है, और न ही वे इसे कभी देख पाएंगे, क्योंकि दैवीय शरीर संरचना जो दिव्य प्राणियों के पास है, ऐसा मनुष्यों के पास नहीं है और उनकी विचार क्षमता और ज्ञान इसका भार वहन करने में सक्षम नहीं होंगे। मनुष्य के पास उस तरह की सोच नहीं है, और मानव मस्तिष्क इतनी बड़ी अवधारणाओं को सह नहीं सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब साधक उच्च स्तर तक पहुँचते हैं तब उनका मस्तिष्क, विचार और शरीर सभी उच्च-ऊर्जा पदार्थ वाले शरीर बन जाते हैं — क्या मनुष्यों के पास उतनी ऊर्जा, उतनी मात्रा और उतनी ही बुद्धि हो सकती है। इस प्रकार मानव मस्तिष्क में उन इंद्रियों की क्षमता का अभाव है जो मनुष्य या वास्तविकता के उच्च-स्तरीय अभिव्यक्तियों से कहीं अधिक है। मनुष्य की ज्ञान प्राप्त करने की सक्षमता सीमित है।

दूसरे दृष्टिकोण से, यदि मनुष्य उन चीजों को जानना चाहता है जो उच्च हैं, तो मनुष्य का नैतिक स्तर उतना ही ऊँचा होना चाहिए। मानवीय भावनाओं के साथ मनुष्यों को देवता कभी भी बुद्ध के स्तर तक नहीं पहुंचने देंगे। मानव जाति के विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ बुद्ध के समान ऊँचे स्तर तक विकसित होना बिल्कुल असंभव है। क्यों? आप जानते हैं, मनुष्यों में मानवीय भावनाएं होती हैं, साथ ही कई तरह के मोहभाव भी होते हैं। उनकी विभिन्न इच्छाएँ बहुत अधिक हैं, और उनमें प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या और उस तरह की चीजें भी हैं। इसके बारे में सभी सोचें, यदि वह [व्यक्ति] वास्तव में बुद्ध के

आयाम में जाता है, तो क्या वह बुद्ध आयाम को दूषित नहीं करेगा? शायद जब आप बुद्ध के साथ होते तो किसी बात को लेकर ईर्ष्यालु हो जाते और बुद्ध से अनबन हो जाती। इसकी बिल्कुल अनुमति नहीं है। यदि आपने वासना के मोह से छुटकारा नहीं पाया, तो यह देखने पर कि एक महान बोधिसत्व कितनी सुंदर है, आप तब से दैवीयों के प्रति वासना अनुभव करेंगे। और उसका अस्तित्व दिव्यलोक में बिल्कुल नहीं हो सकता। इस प्रकार, मानव विज्ञान और प्रौद्योगिकी कभी भी देवताओं और बुद्धों के स्तर तक विकसित नहीं होंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि, सुनिश्चित रूप से, मानव जाति के वैज्ञानिक और तकनीकी तरीकों को कभी भी देवताओं के स्तर तक पहुंचने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

अभी मैंने परस्पर-जनन और परस्पर-विरोध के सिद्धांत के बारे में बात की। अब मैं इसे और समझाता हूँ। बहुत ऊँचे लोकों में, प्राणी बहुत ही सरल तरीके से जीते हैं, और उनके विचार बहुत ही सरल, स्वच्छ और शुद्ध होते हैं। फिर भी उनका विवेक अत्यंत महान है। फिर उसके नीचे, एक अस्तित्व वाले जीव की दो प्रकृतियां होती हैं, और उसके नीचे यह दो अलग-अलग प्रकार के भौतिक तत्वों में बदल जाती हैं । चूंकि ब्रह्मांड का आकाशीय पिंड बहुत बड़ा है, जैसे-जैसे यह नीचे जाता है, दो अलग-अलग प्रकार के पदार्थों के बीच धीरे-धीरे तनाव उभरता है। इसके और नीचे, दो अलग-अलग और परस्पर विरोधी प्रकार के पदार्थों की विभिन्न विशेषताएं अधिक से अधिक स्पष्ट होती हैं, और सकारात्मक और नकारात्मक प्राणियों के अस्तित्व के रूप प्रकट होते हैं। और नीचे, बुद्ध (फा सम्राट) और असुर (असुर सम्राट) हैं। इसी समय, कई अलग-अलग प्रकार के विपरीत तत्व दिखाई देते हैं, जैसे कि *यिन* और *यांग*, *ताईजी* और इत्यादि। इसके और नीचे, यह परस्पर-जनन और परस्पर-विरोध के सिद्धांत को जन्म देता है, और दो प्रकार के पदार्थों की परस्पर विरोधी प्रकृति अधिक से अधिक बढ़ती जाती है।

विशेषकर जब यह मानव समाज तक पहुंचता है, तो परस्पर-जनन और परस्पर-विरोध का यह सिद्धांत काफी स्पष्ट होता है। जब कोई व्यक्ति किसी अच्छे या बुरे काम को पूरा करना चाहता है, तो उसे संबंधित चुनौतियों को पार करना होता है; तभी वह उस कार्य को पूरा कर सकता है। चाहे वह व्यक्ति हो, संगठन हो, आधुनिक समाज की कंपनी हो या सरकार हो, यदि आप कुछ पाना चाहते हैं, तो उस कार्य को पूरा करने से पहले आपको कई चुनौतियों को पार करना होगा। केवल जब कोई दिव्य की इच्छा के

अनुसार जाता है तो उसे स्वाभाविक रूप से सफलता मिलेगी। नहीं तो ऐसा नहीं होगा कि आप जो कुछ भी सहजता से करते हैं और जैसे ही आप इसे करना शुरू करते हैं, आप सफल होते हैं। मनुष्यों के इस स्तर के सच्चाई की बात करें तो, मनुष्य ने बुरे काम करने से भारी मात्रा में कर्म ऋण उत्पन्न किये हैं, इसलिए जैसे ही कोई व्यक्ति कुछ करता है उसे ऋण चुकाना होता है। चूंकि परस्पर-जनन और परस्पर-विरोध का सिद्धांत लगभग सर्वव्यापी है, इसलिए मनुष्यों के लिए कुछ भी करना कठिन है। फिर इसके क्या लाभ हैं? फा-सत्य संतुलित हैं। दूसरे दृष्टिकोण से देखते हुए, संबंधित चुनौतियों को पार करने के बाद ही एक मनुष्य को वह मिलेगा जो वह प्राप्त करना चाहता है, जब ऐसा अनुभव होगा कि [उस चीज़] को पाना कठिन था, केवल तभी वह इसे संजोएगा, और उसे पाने के बाद मिलने वाली संतुष्टि और सफलता के बाद आने वाला सुख और आनंद को तभी वह अनुभव करेगा। यदि यह विरोधी प्रकृति नहीं होती, तो इसके बारे में सोचिये। जैसे ही आपने इसे किया, आपने इसे पूरा कर लिया होगा; जैसे ही आप कुछ करना चाहते थे, आप कर चुके होते। आपको किसी चीज के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता, सब कुछ सहज हो जाता, और कुछ भी कठिन नहीं लगता। आपको लगेगा कि जीवन व्यर्थ था। ठीक इसलिए कि आप कठिनाई से गुजरे, आप लाभान्वित हुए और इससे आपको खुशी अनुभव हुई। मानव का अस्तित्व ऐसा ही है। इस प्रकार मनुष्य उत्साह के साथ रहते हैं।

मुझे आशा है कि इन बातों के माध्यम से, जिनके बारे में मैंने अभी बात की है, आप सभी अपनी सोच को व्यापक बना सकते हैं। इससे आपको साधना में आगे बढ़ने में सहायता मिलेगी। जब मैं इन चीजों के बारे में बात करना शुरू करता हूं, तो मेरे पास कहने के लिए बहुत-सी चीजें होती हैं। कभी-कभी मैं एक ही समय में अलग-अलग चीजों के बारे में बात करना चाहता हूं। चूंकि समय बहुत कम है, मैं इसे इस तरह से करना चाहता हूं: आप यहां कई प्रश्न लेकर आए हैं, और मुझे देखकर आपके पास कई प्रश्न हैं जो आप पूछना चाहते हैं, इसलिए मैं सभी को समय देने का पूरा प्रयत्न करूंगा और आपके प्रश्नों के उत्तर दूंगा। आपको ध्यान से सुनना चाहिए। इसे फा पर व्याख्यान देने के रूप में भी गिना जायेगा, और यह विशिष्ट स्थितियों पर केंद्रित होगा। तो अब मैं आपके लिए प्रश्नों के उत्तर दूंगा। आप पूछने के लिए खड़े हो सकते हैं, लेकिन जोर से बोलें जिससे हर कोई आपको सुन सके। आप मुझ तक पर्चियां भी पंहुचा सकते हैं।

आप बैठे हुए ही अपना हाथ उठा सकते हैं और फिर अपना प्रश्न पूछ सकते हैं। यदि आप बहुत अधिक लिखते हैं तो उन्हें पढ़ने में समय लगता है, इसलिए पर्चियों पर लिखते समय सीधे मुद्दे पर आयें: आपका पहला प्रश्न क्या है, फिर आपका दूसरा प्रश्न क्या है। थोड़ा संक्षिप्त में लिखें।

शिष्य : एक वृद्ध व्यक्ति का क्या होगा यदि वह फल पदवी प्राप्त नहीं करता है?

गुरु जी : इस शिष्य ने एक प्रातिनिधिक प्रश्न उठाया है। यहां बैठे लोगों में वृद्ध लोगों की संख्या ज्यादा है। उन्होंने जो प्रश्न उठाया वह यह है कि उन वृद्ध लोगों का क्या होगा यदि वे फल पदवी प्राप्त नहीं करते हैं? साधना एक बहुत ही गंभीर विषय है। यह मुख्य भूमि चीन में अभी हो रही चीजों की तरह नहीं है, जहां हर कोई काम करवाने के लिए पिछले दरवाजे से जाता है। यह काम नहीं करता है। फिर उन्हें क्या करना चाहिए? जब आप वास्तव में स्वयं की ठोस तरीके से साधना करते हैं, तभी यह काम करता है।

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए, मैं सबसे पहले एक क्षण साधना और कार्य के बीच के संबंध के बारे में बात करना चाहूंगा। साधना आपके सामान्य जीवन को [नकारात्मकता से] प्रभावित नहीं करती है। चाहे आप समाज में कंपनी चलाते हों, या सरकार में एक उच्च अधिकारी हों, आप मानव जगत में किसी भी पेशे में रहते हुए साधना कर सकते हैं। अतीत में, यीशु ने कुछ कहा था: उन्होंने कहा था कि धनी लोगों के लिए दिव्यलोक तक पहुंचना एक ऊंट के लिए सुई के छिद्र से गुजरने की तुलना से भी कठिन था। उन्होंने ऐसा क्यों कहा? ऐसा इसलिए है क्योंकि बहुत से लोग धन के मोहभाव को नहीं छोड़ सकते हैं। वास्तव में, मैं आपको बता दूं कि आपको इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि आपके पास कितना धन है। यहां तक कि यदि आपका पुश्तैनी घर नोटों के बंडल से बना है और आपका प्रवेश मार्ग सोने से जड़ा है, चाहे आप कितने भी बड़े अधिकारी हों, या भले ही आप किसी देश के राष्ट्रपति हों, फिर भी आप एक अच्छे मनुष्य हो सकते हैं। आप स्वयं को उस परिस्थिति में भी विकसित कर सकते हैं जिसमें आप उस सामाजिक स्तर की चुनौतियों के रहते हुए भी पार कर सकते हैं। इसके बारे में सोचिए, यहां बैठे हमारे बीच भिन्न-भिन्न सामाजिक स्तर के लोग हैं। कुछ लोग केवल अपने खाने की पूर्ति करने के लिए काम करते हैं। सादगीपूर्ण जीविका चलाने वाले लोगों

के लिए भी कुछ चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। उस सामाजिक स्तर का व्यक्ति चुनौतियों और कष्टों के बीच एक अच्छा मनुष्य बने रह सकता है और इस तरह साधना के स्तर तक पहुँचते हुए फल पदवी प्राप्त कर सकता है। इस बीच, मध्यम वर्ग के लोगों के सामने उस सामाजिक स्तर की चुनौतियाँ होती हैं। वे अपनी चुनौतियों के बीच अच्छे मनुष्य बनने का प्रयत्न करते हैं और उच्च स्तर तक सुधार करते हैं। इस तरह वे भी अपने अभ्यास में सफल हो सकते हैं। मैंने पाया है कि अब किसी भी सामाजिक स्तर के लोग उच्च स्तर तक सुधार कर सकते हैं और साधना कर सकते हैं। एक राष्ट्र के राष्ट्रपति को भी अपने स्वयं के क्षेत्र की चिंताएँ होती हैं और उस सामाजिक स्तर की विशिष्ट चुनौतियाँ होती हैं, क्योंकि राष्ट्रों और लोगों के बीच भी संघर्ष होते हैं। यह पूरी मानव जाति पर लागू होता है। मनुष्यों के लिए, इस संसार में जीना कष्टदायक है, और इसीलिए वे साधना कर सकते हैं। यहाँ मैं शिष्यों से कह रहा हूँ कि साधना को समझने किए लिए हुए धर्म की सीमाओं से बाहर निकलो और एक मानव की सच्ची साधना करने में सक्षम हों।

तो वृद्ध लोगों के लिए, साधना का अभ्यास एक समान होता है। मेरा अभ्यास से व्यक्ति के स्वभाव और जीवन दोनों की साधना हो सकती है; जब कोई व्यक्ति साधना का अभ्यास करता है, तो यह उसकी आयु लंबी करता है। तो क्या पर्याप्त समय नहीं होगा? लेकिन शर्त यह है कि वृद्ध लोगों को और भी अधिक परिश्रमी होना होगा और साधना को गंभीरता से लेना होगा। यदि [कुछ] वृद्ध लोग किसी कारण से वास्तव में फल पदवी प्राप्त नहीं कर सकते हैं, यदि अपने जीवन के अंत में और मृत्यु के पास पहुंचने से पहले वे प्रण करते हैं कि "अगली बार मुझे निश्चित रूप से साधना करनी है," तो वे अपने साथ फालुन और साधना की चीजें ले जाएंगे और जब वे पुनर्जन्म लेंगे, वे पिछले जीवन की अपनी साधना जारी रखेंगे। (*तालियाँ*) एक और [संभावना] है, मनुष्य होना बहुत कष्टदायक है, और इसलिए वे फिर से नहीं आना चाहेंगे। फिर क्या करना चाहिए? उन्होंने जितनी भी साधना की है उतनी ही मात्रा उन्हें प्राप्त होगी। फिर उनका मूल्यांकन उनके वर्तमान साधना के स्तर को निर्धारित करने के लिए किया जाएगा। यदि यह तीन लोकों के भीतर के स्वर्ग के स्तर पर है, तो वे उस स्तर के प्राणी बनने के लिए स्वर्ग के उस स्तर पर जाएंगे। यदि आप तीन लोकों से बाहर निकल सकते हैं, लेकिन यह कि आपके पास फल पदवी की स्थिति नहीं है, तो आप एक दिव्यलोक या स्वर्ग में एक

संवेदनशील प्राणी बनने के लिए जा सकते हैं। वे परलोक वैसे नहीं हैं जैसे मनुष्य उनकी कल्पना करते हैं—सभी बुद्ध और बोधिसत्व होते हैं, और कुछ नहीं। उनमें अनगिनत संवेदनशील प्राणी हैं, और वे अत्यंत समृद्ध और अद्‌भुत दिव्यलोक हैं। उनमें (*तालियाँ*) स्वर्ग के साधारण वासी निवास करते हैं, लेकिन मनुष्यों के लिए वे भी देवता हैं। उनकी तुलना सांसारिक लोगों से नहीं की जा सकती; केवल इतना है कि उनको फल पदवी प्राप्त नहीं है। आपके प्रश्न का मूल रूप से उत्तर दे दिया गया है। (*तालियाँ*)

शिष्य : हमें इस विचार को कैसे समझना चाहिए कि सच्ची साधना वाले शिष्यों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं नहीं होती हैं?

गुरु जी : मुख्य भूमि चीन में, कई अलग-अलग जगहों के लोगों में एक कहावत प्रचलित है, और जब लोगों को स्वास्थ्य समस्याएं थीं जिनको ठीक करना कठिन था, तो अन्य लोग भी थे जो उन्हें बताते थे: "आपको जल्दी करनी चाहिए और फालुन *गोंग* सीखना चाहिए। जैसे ही आप इसका अभ्यास शुरू करेंगे, आप ठीक हो जाएंगे।" ऐसा क्यों था? ऐसा इसलिए था क्योंकि फालुन *गोंग* साधना, लोगों के शरीर को बहुत तेजी से व्यवस्थित करती है। इसका उद्देश्य उन्हें व्यवस्थित होने के बाद तुरंत साधना शुरू करने के योग्य बनाना है, इसलिए यह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा साधारण लोग इसे समझते हैं। जब लोग अभ्यास सीखने आते हैं, तो उन्हें सर्वोत्तम परिणाम तब प्राप्त होंगे जब वे अपनी स्वास्थ्य समस्याओं को ठीक करने के बारे में कोई विचार नहीं रखते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि साधना के लिए लोगों को मोहभाव नहीं रखने की आवश्यकता होती है, इसलिए यदि उनका कोई उद्देश्य नहीं है तो वे ठीक हो जाएंगे। जैसे ही व्यक्ति में उद्देश्य उत्पन्न होता है, वह एक मोहभाव है, और उल्टे इसके परिणाम बुरे होंगे। यदि आप कहते हैं, मैं केवल अपनी स्वास्थ्य समस्याओं को ठीक कराने आया हूं, तो आपको मोहभाव है, क्योंकि महान फा को संसार में फैलाना स्वास्थ्य समस्याओं को ठीक करने के लक्ष्य से नहीं, बल्कि लोगों के उद्धार के लिए किया जाता है; हमारी स्वास्थ्य समस्याओं को ठीक करना उन लोगों के शरीर को व्यवस्थित करना है जिन्हें बचाया जाना है। मोहभाव के कारण आपका आना उस स्वास्थ्य समस्या को जकड़े रहने और

उसे न छोड़ने के समान है, ऐसे में हमारे पास स्वास्थ्य समस्या से छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं रहेगा।

मानव जाति के विचार और ब्रह्मांड के सत्य, तुलना में, एक दूसरे के विपरीत हैं, क्योंकि जितना अधिक कोई किसी चीज़ का पीछा करेगा, उसको वो उतनी ही कम मिलेगी। केवल जब आप इस तरह की सोच को छोड़ देंगे, तभी आप अपनी स्वास्थ्य समस्या को छोड़ पाएंगे। साधना की इच्छा करने पर स्वास्थ्य समस्याओं के ठीक होने के बारे में नहीं सोचना चाहिए; कोई इच्छाप्रयास नहीं होना चाहिए। इसलिए जिन लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हैं, उन्हें अभ्यास करते समय अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में नहीं सोचना चाहिए। जब आपका कोई इच्छा प्रयास नहीं होता है, तो आप उस पर ध्यान नहीं देंगे, और आप केवल अभ्यासों के बारे में सोचेंगे, जितना अधिक आप अभ्यास करेंगे उतना ही बेहतर होगा। शायद आप अभ्यास करके घर लौटेंगे और रातों-रात आपकी सभी स्वास्थ्य समस्याएं दूर हो जाएंगी। (*तालियाँ*) चीन की मुख्य भूमि के कई क्षत्रों में लोग इस तरह की बातें फैला रहे हैं। उन्हें लगता है कि यह चमत्कारी है। बहुत से लोग इस अभ्यास को सीख रहे हैं, और इसे सीखने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है।

तो यही वह सिद्धांत है जिसके बारे में मैं बात कर रहा था: अर्थात, जिनके पास कोई इच्छा प्रयास नहीं है, उन्हें तेजी से परिणाम प्राप्त होंगे, जबकि इच्छा प्रयास करने वालों को शायद धीमे परिणाम प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति मेरा दृष्टिकोण यह है: जब मैं शिष्यों के लिए यह काम करता हूँ तो मैं इसे स्वास्थ्य समस्याओं का निवारण नहीं कहता। इसे कहते हैं साधकों के मूल शरीरों का शुद्धिकरण। शुद्धिकरण का उद्देश्य उनकी साधना के लिए नींव तैयार करना है। जो अपने शरीर में स्वास्थ्य समस्याओं को लेकर चलते हैं वे *गोंग* उत्पन्न नहीं कर सकते। ऐसे में क्या करना चाहिए? जब आप आते हो और व्यायाम करते हो, तो आप बस आकर करें। आपके कोई मोहभाव या इच्छा-प्रयास नहीं चाहिए, और यही सबसे अच्छा होगा। इस तरह मैं आपके शरीर को शुद्ध कर सकता हूं—इसे लगभग स्वास्थ्य समस्याओं से मुक्त अवस्था तक शुद्ध कर सकता हूं। लेकिन कुछ मामलों में या इस परिस्थिति में कि आपकी साधना प्रभावित न हो, मैं अभी भी आपके लिए कर्म और स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने की कुछ अनुभूति छोड़ सकता हूं। थोड़ा-सा क्यों छोड़ दिया है? यह इस तरह से किया गया है

क्योंकि कुछ साधकों की समझ में सुधार की आवश्यकता है। इसके बारे में सोचें, यदि किसी व्यक्ति के सतही शरीर में स्वास्थ्य समस्याएं नहीं हैं, तो वह अलौकिक है, और यदि उसे कर्म को नष्ट करने की अनुभूति नहीं है, तो वह साधना नहीं होगी। वह निश्चित रूप से [साधना में] विश्वास करेगा; उन परिस्थितियों में, कौन इस पर विश्वास नहीं करेगा? वह अंत तक विश्वास करेगा। इसलिए साधना में उपयोग किए जाने वाले कुछ तत्वों को कुछ व्यक्तियों के लिए उनकी परिस्थितियों के अनुसार छोड़ देना चाहिए, और यह देखने के लिए किया जाता है कि क्या वे विश्वास करते हैं। इसका उद्देश्य साधकों को चीजों की ज्ञानप्राप्ति के माध्यम से आगे बढ़ाना है। क्या यह इस तरह नहीं है? (*तालियाँ*)

फिर भी एक और मुद्दा है जो मैं आप सभी के लिए स्पष्ट करूंगा: जब लोग साधना करते हैं तब भी उन्हें कुछ कष्टप्रद परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा और कठिनाइयां भी होंगी। कठिनाइयाँ दो तरह से प्रकट होंगी: एक है शरीर द्वारा अनुभव की जाने वाली अप्रिय संवेदनाएँ; दूसरा यह कि दूसरे आपके क्रोध को भड़काएंगे। मैं आपको बता दूं कि शारीरिक असुविधाओं का अर्थ स्वास्थ्य समस्याएं नहीं हैं, हालांकि अभिव्यक्तियां समान हैं। आप सभी को पता होना चाहिए कि कर्म को हटाया जा रहा है। "कर्म को हटाना" क्या है? वास्तव में, मैं आपके पूरे शरीर को शुद्ध कर रहा हूं। मनुष्य, साधारण लोगों के बीच पुनर्जन्म लेते हैं, बार-बार पुनर्जन्म लेते हैं। कुछ ने लगभग बीस बार पुनर्जन्म लिया है, और कुछ ने लगभग तीस बार या उससे भी अधिक बार पुनर्जन्म लिया है। इतनी बार पुनर्जन्म लेने में, और मनुष्यों के बीच आगे-पीछे पुनर्जन्म लेने में, हर बार व्यक्ति बड़ी मात्रा में कर्म उत्पन्न करता है। बेशक, प्रत्येक जीवन में, जब लोगों को स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं और वे पीड़ित होते हैं, तो वे कुछ [कर्म] को समाप्त कर देते हैं, लेकिन प्रत्येक जीवन में बहुत होते हैं, और जब यह बहुत एकत्र हो जाते हैं तो वह बीमार पड़ जाता है। जब लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होती हैं तो वे उनका निवारण करने के लिए चिकित्सक की खोज करते हैं। जब चिकित्सक स्वास्थ्य समस्याओं का इलाज करते हैं, तो वे केवल उपरी शरीर पर ही ध्यान देते हैं। बीमार पड़ने की पीड़ा सहने के कारण मनुष्य कुछ कर्मों को समाप्त कर देता है, लेकिन अधिकांश कर्म और मूल कारण जो स्वास्थ्य समस्या का कारण बनते हैं, वे दूसरे आयामों में हैं। चिकित्सक [उन चीजों] का इलाज नहीं कर सकते हैं और रोगी होने का मूल

कारण अभी भी वहीँ है। इसलिए लोगों के कई जीवनों के प्रत्येक जीवन में से कुछ कर्म बचे रह जाते हैं।

क्या आप जानते हैं कि आज के लोगों के शरीर कैसे होते हैं? व्यख्यान देते समय मैं देखता हूँ कि कुछ विद्यार्थियों के अस्थि मज्जा में काला पदार्थ भरा हुआ है। बेशक, इसे इस आयाम में नहीं देखा जा सकता क्योंकि कर्म का अस्तित्व अन्य आयामों में है। फिर क्या करना चाहिए? मानव शरीर, सूक्ष्म कणों से लेकर सतह के कणों तक, और परत दर परत छोटे से बड़े और त्रि-आयामी रूप से, एक पेड़ में कई विकास के छल्लों की तरह दिखता है, और कोई भी परत शुद्ध नहीं है। मैं आपके शरीर को उसके अंतरतम भाग से होते हुए शुद्ध करना चाहता हूं। यदि आप साधना नहीं करते हैं, तो कोई भी आपके लिए इस प्रकार का कार्य नहीं करेगा। अतीत में, बौद्ध धर्म ने सिखाया था कि मनुष्य एक जीवनकाल में साधना में सफल नहीं हो सकता है, कि मनुष्य स्वयं अपने-आप को शुद्ध नहीं कर सकता है, और सुधरना और भी कठिन है। यदि कोई व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है, तो उसके पास एक पवित्र मार्ग होना चाहिए; तभी यह काम करेगा। यदि आप महान फा में साधना करनी चाहते हैं, तो मैं आपके उन शरीरों में जमा किए गए कर्मों को, प्रदूषण जो पैदा किया गया था, और आपके शरीर में जो कुछ भी बुरा है, उसके पीछे के कारणों को लेकर, और उन्हें बाहर निकाल दूंगा। आप इसे सहन नहीं कर पाएंगे यदि इसे एक ही बार में आपके सतही भौतिक शरीर से बाहर धकेल दिया जाता है; तो आपकी मृत्यु हो जाएगी। फिर क्या किया जाता है? इसे बाहर धकेलने की प्रक्रिया में, इसका अधिकांश भाग अन्य आयामों से निकाल कर आपके शरीर से दूर ले जाया जाएगा। आपके शरीर की सतह के माध्यम से केवल एक बहुत ही छोटा सा भाग बाहर धकेला जाएगा।

यह सतह से क्यों निकलता है? यदि यह सब अन्य आयामों के माध्यम से निकाला जाए तो क्या बात यहीं समाप्त नहीं हो जायेगी ? क्योंकि ऐसा करना दिव्य नियमों के अनुरूप नहीं है। लाभ के साथ हानि तो होनी ही चाहिए। जब किसी का ऋण होता है तो उसे चुकाना पड़ता है। ये दिव्य नियम हैं। जब लोग कर्म उत्पन्न करते हैं तो उन्हें उसका भुगतान करना पड़ता है, और ऐसा विशेष रूप से साधकों के लिए होता है। मैंने वास्तव में आपके लिए थोडा सा ही बाकी रखा है, जिसकी गिनती पूरा चुकाने की तरह होगी , और मैं यह ठीक इसलिए करता हूं क्योंकि आपकी साधना करने की इच्छा है। हालाँकि

मैंने आपको सतही तौर पर थोड़ा-सा ही सहन करवाया है, फिर भी आप अचानक अनुभव करेंगे कि आपका शरीर एक बड़ी स्वास्थ्य समस्या का सामना कर रहा है, और यह बहुत कष्टदायक होगा। कुछ लोगों को वास्तव में ऐसा लगता है कि वे इसके बाद जिंदा नहीं बचेंगे । अच्छी समझ रखने वालों को पता होगा [सोचने के लिए:] "जब मैं साधना करता हूं तो डरने की क्या बात है? मैंने फा को सुना है, मैंने पुस्तकें पढ़ी हैं, और मैं सभी सिद्धांतों को समझता हूं। मुझे अब भी किस बात डर?" यह इतना सरल और ठोस विचार है, लेकिन यह वास्तव में सोने से अधिक चमकता है। वह दवा नहीं लेता है और न ही डॉक्टर को दिखाता है, फिर अचानक वह ठीक हो जाता है और एक बड़ी परीक्षा पूर्ण हो चुकी होती है और कर्म का एक बड़ा भाग समाप्त हो जाता है। कर्म का बड़ा [भाग] अन्य आयामों में धकेल दिया जाता है। सतह पर बाहर धकेल दिया गया भाग वास्तव में केवल थोडा सा है, लेकिन कर्म को समाप्त होने के रूप में गिना जाता है, और यह गिना जाता है कि आपने इसे चुका दिया है। तो साधना की प्रक्रिया के दौरान कुछ लोग अपने शरीर में कष्ट का अनुभव करेंगे, लेकिन कष्ट की यह अनुभूति किसी भी अन्य स्वास्थ्य समस्या से अलग होती है। तो इस प्रकार की स्थितियां उत्पन्न होंगी, और उनके माध्यम से आपके दृढ़ संकल्प की मुलभुत मात्रा का परीक्षण किया जाएगा। परीक्षाओं के माध्यम से आपको आंका जाएगा कि क्या आप स्वयं को एक अभ्यासी के रूप में मान सकते हैं या नहीं, और यह कि क्या आप उस समय इस साधना में विश्वास करते हैं। बुद्धत्व की साधना वास्तव में एक बहुत ही गंभीर विषय है।

पर-त्रिलोक-फा साधना में, शरीर को उच्च स्तर तक शुद्ध किया जाएगा; इसे अरहत शरीर कहा जाता है। उस समय के शरीर में इस सीमा तक सुधार हो गया होगा कि यह उच्च-ऊर्जा पदार्थ का शरीर होगा जिसमें एक भी साधारण मानव कोशिका नहीं बची होगी। सतह से यह एक साधारण व्यक्ति के शरीर जैसा ही दिखाई देगा, लेकिन यह भिन्न होगा। उस समय रोग कर्म नहीं होंगे, क्योंकि सांसारिक स्वास्थ्य समस्याएं अब आपके उस उच्च-ऊर्जा-पदार्थ-निर्मित शरीर को प्रभावित नहीं कर सकती हैं। पर-त्रिलोक-फा छोड़ने पर, आपके सभी रोग कर्म बाहर धकेल दिए गए होंगे। पर-त्रिलोक-फा साधना में शरीर पर कई असुविधाएं दिखाई देंगी, या व्यक्ति एक चौंकाने वाली, लेकिन बिना संकट वाली स्थिति में भी घिर जाएगा। जब ऐसा होगा तो आप भयभीत नहीं होंगे, लेकिन यह दूसरों के लिए बहुत ही डरावना होगा। ऐसी बातें होंगी। बहुत सारे

शिष्य वास्तव में महान फा की साधना कर रहे हैं, लेकिन कोई समस्या नहीं हुई है। जब तक आप साधना करते रहेंगे, मैं आपकी रक्षा करूंगा। निःसंदेह, यदि आप साधना नहीं करते हैं तो मैं आपकी देखभाल नहीं करूंगा; मैं यह चीजें साधकों के लिए करता हूँ। इसलिए लोगों को ठीक करने के लिए आपको उन्हें घसीटकर नहीं लाना चाहिए। वर्तमान में, मैं साधारण लोगों के मामलों को नहीं संभालता, और आप में से किसी को भी ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे फा को हानि पहुँचे। यदि कोई व्यक्ति साधना नहीं करता है, तो उसे अपने किए हुए सभी कार्यों के परिणामों का भुगतान करना पड़ता है। चाहे वह कोई भी चीज हो जिसका वो सामना करता है, इन सबके संबंधित कारण हैं। इस प्रश्न का उत्तर दे दिया गया है।

शिष्य: क्या [गुरु जी] आज सभी के शरीर को शुद्ध कर सकते हैं?—विशेषकर, वे चीजें जो अन्य अभ्यासों का अध्ययन करने से बची रह गयी हैं।

गुरु जी : इन बातों की चिंता मत करो। मैं आपको बता दूं कि जब आप यहाँ बैठते हैं और व्याख्यान सुनने के बाद यहां से जाते हैं, तो यह निश्चित है कि आप परिवर्तित हो गए होंगे। यह कहते हुए, मैं उन शिष्यों को बताना चाहता हूं जो परिश्रमी नहीं हैं: आप एक साधक बनना चाहते हैं, लेकिन अपने लिए कठोर आवश्यकताएं निर्धारित नहीं करते हैं, बस कभी-कभी अध्ययन और साधना करते हैं, तो इसलिए आपके शरीर में समस्याएं होंगी। इसका कारण यह है कि जब आप वास्तव में साधना नहीं करते हैं, तो शरीर एक साधारण व्यक्ति की स्थिति में वापस लौट जाएगा। उस समय आप सोचेंगे, "मेरा शरीर हमेशा ठीक क्यों नहीं रहता है?" साधना एक गंभीर विषय है। यह ठीक क्यों नहीं रहता है? यह आपको स्वयं से पूछना चाहिए। क्या आप फा में विश्वास रखते हैं? क्या आप मानते हैं कि आप एक साधक हैं? क्या आपका मन इतना स्थिर है? यदि आपकी वास्तव में एक ऐसी मानसिकता है जो साधना के बारे में दृढ़ है और मानवीय भावनाओं को छोड़ सकती है, तो इसमें एक क्षण भी नहीं लगेगा और आपकी बीमारी दूर हो जाएगी। (*तालियाँ*) साधना में अस्थिरता काम नहीं आती। जब आप साधना करते हैं, तो आपका मन अनिश्चित होता है, यह सोचकर: "क्या यह फा वास्तव में वैसा ही है [जिस तरह से गुरु जी ने इसका वर्णन किया है]?" यह वैसा ही है जैसे कि आपका पुछना

कि, "क्या मैं साधना कर रहा हूँ? क्या अब मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ या एक साधक हूँ?"

वास्तविक बुद्ध फा साधना फा-विनाश काल के धर्मों की तरह सतही नहीं है। साधना एक बहुत ही गंभीर विषय है। यदि आप दृढ़ नहीं हैं, तो आपके सभी प्रयास व्यर्थ हो जाएंगे। यदि आप प्रसिद्धि, इच्छा और भावना को छोड़ सकते हैं, और फिर भी आप फल पदवी प्राप्त नहीं करते हैं, तो अंत में मुझे भी लगेगा कि यह अन्याय है। एक मनुष्य के लिए, प्रसिद्धि, इच्छा और भावना को छोड़ना जीवन को छोड़ देने के समान है। मनुष्य किस लिए जीते हैं? क्या यह केवल धन, प्रसिद्धि, मानवीय भावनाओं आदि के लिए नहीं है? यदि आप उन्हें छोड़ दे सकते हैं तो क्या आप अभी भी मनुष्य हैं? (*तालियाँ*) मनुष्य उन्हीं चीज़ों के लिए जीते हैं; केवल दिव्य प्राणी उनके बिना जीते हैं। (*तालियाँ*) लेकिन मैं आपको बता दूँ कि दिव्य प्राणी मूर्तियों की तरह गतिहीन नहीं होते, जैसा कि मनुष्य उनकी कल्पना करते हैं। मनुष्य नहीं जानते, लेकिन स्वर्ग वास्तव में अत्यंत अद्भुत है। वे मनुष्यों से बेहतर जानते हैं कि स्वयं को आनंदित कैसे रखना है, लेकिन वहां की चीजें नेक, परोपकारी और बेहद अद्भुत हैं। ठीक इसलिए कि उनका इतना उच्च स्तर है, वे विशेष योग्यताएं प्राप्त कर सकते हैं। उनके शरीर हवा में तैर सकते हैं और चारों ओर उड़ सकते हैं। हर जगह सुन्दर है। मानवीय भाषा इसका वर्णन नहीं कर सकती। यहाँ के मनुष्यों के पास वहाँ के रंग नहीं हैं। दिव्य प्राणियों का स्वरुप अत्यंत सुंदर है। वे बहुत अद्भुत हैं।

यहाँ हमारे बीच वृद्ध लोग बैठे हैं, और साथ-साथ युवा भी हैं। साधना में, मानव शरीर को अपनी जन्मजात, मूल विशेषताओं की ओर लौटना चाहिए। जैसे-जैसे लोग [साधना में] आगे बढ़ते हैं वे युवा होते जाते हैं। जब आप वास्तव में अपनी अंतर्निहित, मूल विशेषताओं की ओर लौटते हैं, तो आप पाएंगे कि आप अधिक युवा हो गए हैं। हालाँकि कुछ लोग बहुत बूढ़े होते हैं, लेकिन उनकी मुख्य आत्माएँ युवा या बच्चा होती हैं। आप जानते हैं, जब वृद्ध लोग सठिया जाते हैं, तो लोग उन्हें "बड़े बच्चे" कहते हैं। वे भोजन के लिए बच्चों के साथ होड़ करते हैं, और वे बच्चों के साथ खेलते हैं। क्यों? दूसरों का कहना है कि यह व्यक्ति बूढ़ा हो गया है, इस हद तक बूढ़ा हो गया है कि उनका कुछ भी काम नहीं करता है। जब आप इसे आधुनिक विज्ञान के साथ समझाते हैं तो यह ऐसा ही होता है। लेकिन वास्तव में, मैं आपको बता सकता हूं कि जब लोग बूढ़े हो जाते हैं

तो उन्होनें अपने सभी मोहभाव छोड़ दिए होते हैं, और उनके सभी मानवीय उद्देश्य और लक्ष्य समाप्त हो जाते हैं। उन्होंने उन सभी को छोड़ दिया है, और उनका मूल स्वभाव लौट आया है और उभर आया है। संभवत: उनकी मुख्य आत्माएं बच्चा हैं, इसलिए वे बड़े बच्चों की तरह आचरण करना शुरू कर देते हैं। मैं कहूंगा कि, यह वास्तव में ऐसा ही है। साधना में, जो जितना ऊपर जाता है, उतना ही सुंदर और युवा होते जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि जब आप एक स्तर नीचे के जीवन को [यहां से] देखते हैं, तो आप देखेंगे कि जब वे अपने बालों में कंघी करने का प्रयत्न करते हैं तो वे बालों को संवार नहीं सकते, और उनके बाल बिखरे होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो जितना नीचे जाता है वह उतना ही कुरूप हो जाता है। साधना के साथ व्यक्ति जितना ऊँचा होता जाता है, वस्तुएँ उतनी ही अधिक अद्‌भुत होती जाती हैं। न केवल शरीर में रोग कर्म नहीं होंगे, वह शुद्ध और पवित्र भी हो जाएगा।

जहाँ तक "विशेष रूप से, वे चीज़ें जो अन्य अभ्यासों का अध्ययन करने से बची रह गयी हैं"—यदि आप वास्तव में साधना करते हैं, तो मैं उन चीज़ों को आपके लिए ठीक कर दूँगा। इन बातों का आप पर भार नहीं होना चाहिए, आपको उनके बारे में नहीं सोचना चाहिए। छोड़ दीजिये। यदि आप विशेष रूप से उस मुद्दे के कारण [दाफा में] आते हैं, तो ऐसा नहीं चलेगा। यदि आप इससे बहुत अधिक जुड़े हुए हैं, आप इसे पकड़े हुए हैं, और यहां तक कि यदि मैंने आपके लिए इसको हटा दिया, तो भी आप अनिश्चित अनुभव करेंगे। यदि आप वास्तव में साधना करनी चाहते हैं, तो मैं आपमें से हर बुरी चीज को हटा दूंगा।

शिष्य: अब जब हम फा सुनने आए हैं, तो क्या आपके पास हमें देने के लिए फालुन होंगे?

गुरु जी : चूंकि आप साधक हैं, मैं उन दोनों की देखभाल करूंगा जो यहां फा को सुनने के लिए आते हैं और जो नहीं आ सकते हैं। यह केवल फालुन स्थापित करना नहीं है; जब आप महान फा की साधना शुरू करते हैं, तो मुझे शिष्यों के शरीरों को भी व्यापक रूप से व्यवस्थित करना पड़ता है। तो यह एक ही बात है कि आप मुझसे मिले हैं या नहीं। जब तक आप वास्तव में साधना करते हैं, आपके पास जो कुछ भी होना चाहिए

वह सब कुछ दिया जाएगा। चीन में, केवल कुछ दसियों हज़ार लोगों ने मेरा व्याख्यान सुना, लेकिन अब लोग पूरे चीन में साधना करते हैं। बहुत से लोगों ने मुझे नहीं देखा है, लेकिन उनके पास महान फा को विकसित करने के लिए आवश्यक सब कुछ है। मैं इतना बड़ा फा फैला रहा हूं, इसलिए यदि मेरा मुख्य शरीर ही सब कुछ करता रहेगा, तो मैं शायद सब कुछ नहीं कर पाऊंगा; प्रत्येक व्यक्ति के हर विषय पर ध्यान देना संभव नहीं होगा। मैं आपके लिए फालुन स्थापित करता हूं। जब तक आप साधना करते हैं, पुस्तक पढ़ते हैं, मानते हैं कि फा अच्छा है, और महान फा की साधना करनी चाहते हैं—यदि आपके वास्तव में ये विचार हैं—तो आप पाएंगे कि आपका शरीर [पहले से] भिन्न अनुभव करता है।

मैं आपको फालुन देने पर ही नहीं रुकूंगा। इसके बारे में सोचें, यदि कोई व्यक्ति साधना नहीं करता है, तो वह शरीर क्या उत्पन्न कर सकता है जिसमें साधना के लिए आवश्यक यंत्र नहीं हैं? फालुन उन सभी का मूल है जो मैं आपको प्रदान करता हूं। और मैं आपके कर्म को हटा दूंगा, मैं आपके लिए आपके पिछले जन्मों के सभी कृतज्ञता और द्वेष को और विभिन्न आयामों के और विभिन्न प्रकार के गहरे संबंधों को व्यवस्थित करूंगा, मैं आपको आपके शरीर के भीतर और बाहर कई तंत्र दूंगा जो आपके पूरे शरीर में परिवर्तन लायेंगे, और मैं आपके *दानतियान* और अन्य भागों में चीजें स्थापित करूंगा। बीज की तरह, दस हजार से अधिक चीजें प्रदान की जायेंगी। भविष्य में मुझे आपका नाम भी नर्क की सूची से हटाना होगा। केवल इतना ही आपको जानने की अनुमति है, लेकिन बहुत कुछ, आपके लिए और भी बहुत कुछ किया जाएगा, और केवल तभी आप वास्तव में साधना कर सकते हैं, और केवल तभी आप वास्तव में महान फा की साधना करने में आगे बढ़ सकते हैं।

कभी-कभी मैं कहता हूं कि वे नकली *चीगोंग* गुरु लोगों को धोखा देते हैं। वे वास्तव में लोगों को धोखा दे रहे हैं। वे आपके लिए क्या करते हैं? कुछ नहीं। जिन चीजों का मैंने उल्लेख किया है यदि वे किसी को नहीं दी जाती है, तो वह कैसे अभ्यास कर सकता है? क्या [इन चीजों को] अभ्यास से उत्पन्न किया जा सकता है? इसके अतिरिक्त, यदि साधना करते समय आपको सुरक्षा प्रदान नहीं की जाती है तो आपके जीवन को संकट होगा, क्योंकि मनुष्य को कर्म चुकाना पड़ता है। यदि आपको सुरक्षा प्रदान नहीं की जाती है, तो आप उन जीवों का क्या करेंगे जिनका आप पर अतीत से ऋण है? आज के

लोगों में से ऐसे कौन हैं जिनके ऊपर ऋण नहीं हैं? कई जन्मों से गुजरने पर, लोगों के पास आज बहुत सा कर्म है, और मानव संसार संकटों से भरा है। यदि कोई लोगों के प्रति उत्तरदायी नहीं होता है तो वह लोगों को हानि पहुंचा रहा है, तो मैं कहूंगा कि [वे गुरु] लोगों को धोखा दे रहे हैं। आप अभी महान फा की साधना कर रहे हैं, इसलिए यह सब आपके लिए हल किया जाएगा। जब तक आप मन से इसका पालन करते हैं, तब तक आपको लाभ होगा।

यहां बैठे लोगों के लिए जिन्होंने अधिक उच्च स्कूली शिक्षा प्राप्त की है: आधुनिक सिद्धांतों तक सीमित न रहें। यदि दिव्य नेत्र वाला व्यक्ति *ज़ुआन फालुन* पुस्तक को देखता है, तो वह पाता है कि इसमें प्रत्येक अक्षर एक *श्रीवत्स* (卍) है, और यह कि प्रत्येक अक्षर एक बुद्ध है। इसके बारे में सोचें: इस फा में कितनी शक्ति है और उस पुस्तक में कितने बुद्ध हैं? इसके अतिरिक्त, प्रत्येक अक्षर में परत दर परत बुद्ध होते हैं, क्योंकि इस पुस्तक में ब्रह्मांड के विभिन्न स्तरों के सिद्धांत सम्मिलित हैं। हर बार जब आप साधना में सुधार करने के बाद पुस्तक को पढ़ते हैं, तो आप पाएंगे कि वही अंश अर्थ में भिन्न है जो आपने पहले पुस्तक में पढ़ा था। आपको नई समझ प्राप्त होगी, और यह अर्थ की एक और परत के विषय में बता रही होगी; प्रत्येक अक्षर के भीतर परत दर परत बुद्ध हैं, अनगिनत स्तरों से। बेशक, साधारण लोग उन्हें नहीं देख सकते। इसलिए मैं आपको बता रहा हूं कि यह पुस्तक अनमोल है। पहले कुछ लोग इसे अपने नीचे रखते थे और व्याख्यान सुनते समय उस पर बैठ जाते थे। उस समय तक आपको समझ नहीं आया था कि यह फा क्या है। जब आपको यह समझ में आया, तो आपने पाया कि यह सब बहुत गंभीर है। साधना में यह आपके प्रत्येक विचार को जान लेगा; आपके विचार करने से पहले ही यह पता चल जाएगा कि आप क्या विचार करने वाले हैं। मनुष्य सोचते हैं कि मानव विचार का प्रकट होना एक अत्यंत तेज़ प्रक्रिया है, लेकिन अपने विचारों को थोड़े तेज़ आयाम से देखें, तो यह एक अत्यंत धीमी प्रक्रिया है। इससे पहले कि आप अपना विचार पूरा करें, वह पक्ष पहले से ही जान जाता है; जैसे ही आपके मन में कोई विचार आता है, वह पक्ष जान जाता है।

कुछ लोग मुझसे कहते हैं: "गुरु जी, मैं आपको कक्षा की फीस दूँगा। मेरे परिवार में से एक नहीं आ पाया है, और मैं चाहता हूँ कि आप उसे फालुन प्रदान करें।" बेशक, आप उसे दोष नहीं दे सकते, क्योंकि वह नहीं जानता कि जो लोग साधना नहीं करते हैं उन्हें

यह नहीं दिया जा सकता है। मैं आपको बताता हूँ कि आप चाहे कितने भी करोड़ों डॉलर खर्च कर लें, आप इसे नहीं खरीद सकते। यह कुछ ऐसा नहीं है जो मनुष्यों के बीच पाया जाता है। यह अलौकिक है—कुछ दिव्य। एक दृष्टिकोण से देखा जाए तो इसका जीवन आपके वर्तमान जीवन से अधिक मूल्यवान है। यह एक उच्च जीव है, तो इसे धन से कैसे मापा जा सकता है? लेकिन यदि कोई व्यक्ति साधना करनी चाहता है, तो मैं उसे निशुल्क दे सकता हूं। और यह इतना ही नहीं है: अंततः मुझे फल पदवी तक आपकी रक्षा करनी होगी।

शिष्य: ऐसे जीवों को कैसे समझें जो नियत समय से पहले मर जाते हैं? ऐसे व्यक्ति का क्या होगा?

गुरु जी : अबके बाद, कोई भी, ऐसे प्रश्न न उठाएं जिनका आपकी साधना से कोई संबंध नहीं है। कुछ लोग मुझसे यह भी पूछते हैं कि [मृतकों के लिए] नोट जलाने से कुछ लाभ होता है या नहीं। इन बातों का महान फा की साधना करने से कोई संबंध नहीं है, और मेरे पास इनका उत्तर देने का समय नहीं है। जो अपने नियत समय से पहले मर जाते हैं, उनका अंत दुखद होता है। यह वह सत्य है जिसे मैंने समझाया, अर्थात्, जब कोई व्यक्ति संसार में आता है, तो उसके जीवन को उच्च प्राणियों द्वारा व्यवस्थित किया गया होता है। यदि वे अपने जीवनकाल के अंत तक नहीं पहुँचे हैं और अचानक मर जाते हैं, तो उनकी अत्यंत दुखदायी दुर्दशा होगी। कैसी दुखदायी दुर्दशा? चूंकि जीवन को व्यवस्थित किया गया है, आप क्या खाते-पीते हैं, समाज में आपका पद, जीवन में आपके स्तर—इन सभी की व्यवस्था की गई है। जब लोग मरते हैं तो वे तुरंत इन सभी को खो देते हैं, और यदि वे अपने जीवन काल के अंत तक नहीं पहुंचे हैं तो वे पुनर्जन्म नहीं ले सकते। दिवंगत आत्माएं तब अत्यंत अंधकारमय और उजाड़ आयाम में प्रवेश करती है। वहाँ कुछ भी नहीं होता है, जैसे कोई व्यक्ति मंगल ग्रह पर चला गया हो। वास्तव में, मंगल पर मानव जीवन है, बस यह दूसरे आयाम में है। हम जो देखते हैं वह ठीक यहाँ का अंधकारमय और उजाड़ आयाम है। फिर, जब उन्हें अचानक उस स्थिति में डाल दिया जाता है, तो वे खा-पी नहीं सकते हैं, और उनके पास कुछ भी नहीं होता है। वे अत्यधिक पीड़ा में होंगे, लेकिन वे भूख से नहीं मरेंगे। इस प्रकार, वे उस आयाम में

प्रतीक्षा करते रहेंगे जब तक कि मानव संसार में उनका वास्तविक जीवन काल पूरा नहीं हो जाता; तभी उनका पुनर्जन्म हो सकता है। मैं "भटकती आत्माओं और बेघर प्रेतों" का क्या अर्थ है, इसकी बात कर रहा हूं। बौद्ध धर्म में *चाओडु* की प्रथा थी जिसमें वे आत्माओं को शुद्धिकरण द्वारा मुक्त करते थे। आधुनिक लोग नहीं समझते कि *चाओडु* क्या है; केवल उन्हीं लोगों को मुक्त करने की आवश्यकता होती है जिनकी वैसे मृत्यु हुई है जैसा कि मैंने वर्णन किया है। साधारणतः, जैसे ही लोग मरते हैं, वे तुरंत ही पुनर्जन्म ले चुके होते हैं। फिर मुक्ति किसे देनी है? *चाओडु* से उनका तात्पर्य इन जीवों की मुक्ति से था।

साथ-साथ मैं एक मुद्दे, एक सामाजिक मुद्दे के विषय में बात करूंगा। वर्तमान में कई देशों में ऐसे लोग हैं जो इच्छामृत्यु की बात करते हैं। मैं आपको बता दूं कि जब कुछ बीमार लोग अपनी पीड़ा सहन नहीं कर पाते और मरना चाहते हैं, तो यह उनकी अपनी इच्छा है। जो कोई यह उनके लिए करता है वह हत्या कर रहा है, और बड़ी मात्रा में कर्म उत्पन्न कर रहा है जो हत्या के करने से आता है; उच्च प्राणी सभी इसे इस तरह मानते हैं। इसके अतिरिक्त, वे व्यक्ति को सबसे दुखदायक स्थिति में डाल देते हैं, व्यक्ति एक ऐसे आयाम में चला जाता है जहां दुख और भी बदतर होता है। इच्छामृत्यु का अनुरोध करने वाला व्यक्ति इसे नहीं समझता है। जब वह उस आयाम में जायेगा, तो उसे इसका पछतावा होगा, क्योंकि यह बेहतर होता कि वह जीवित रहता और थोड़ा सह लेता। लोग पीड़ित क्यों होते हैं? इस संसार में रहते हुए लोग कर्म उत्पन्न करते हैं। कुछ लोगों के कर्म अत्यधिक होते हैं, कुछ लोगों के कम। कुछ लोग मरने से पहले पीड़ा अनुभव करते हैं। पीड़ा के द्वारा वे एक जीवनकाल में किए गए बहुत से कर्मों का भुगतान कर सकते हैं, और अगले जीवन में वे एक अच्छा जीवन व्यतीत करेंगे, क्योंकि जब कुछ लोग मृत्यु के समय अपने कर्मों का भुगतान कर लेते हैं, तो उनके पास [वे] कर्म अब और नहीं बचेंगे। फिर भी वे पीड़ा नहीं सहना चाहते, वे इसका भुगतान नहीं करना चाहते हैं। इस प्रकार जब वे अपने अगले जन्म में पैदा होते हैं तो वे बीमार शरीर के साथ आ सकते हैं, या विकलांग भी हो सकते हैं या उनकी आयु छोटी हो सकती है। लोग इसे नहीं समझते हैं और केवल "व्यावहारिक" चीजों में विश्वास करते हैं। जैसे कि मैंने बताया है, आज के विज्ञान ने झूठी तस्वीर बनाकर लोगों को बेहद कसकर बंद कर दिया है। और यही कारण है कि लोगों में "एक शांतिपूर्ण और सुखद मौत" या इच्छामृत्यु

जैसी चीजों के विचार उत्पन्न होते हैं। यह बिल्कुल भी शांतिपूर्ण और सुखद नहीं होता है।

शिष्य: क्या साधना करने वाले लोगों को अभी भी कड़ा परिश्रम करना चाहिए और साधारण समाज में अपने काम और पढ़ाई में आगे बढ़ना चाहिए?

गुरु जी : उन्हें करना चाहिए। मैंने अभी-अभी इस बारे में बात की है। ऐसा क्यों है? क्योंकि जब मैंने फा का प्रसार करना शुरू किया तो मैंने पहले ही इस प्रश्न पर विचार कर लिया था, यह जानते हुए कि [फालुन दाफा] का अध्ययन करने वाले बहुत से—काफी लोग होंगे। भविष्य में यह पूरे विश्व में फैल जाएगा, क्योंकि यह महान है—यह ब्रह्मांड का नियम है जो लोगों को दिया जा रहा है ताकि वे साधना कर सकें। अधिक लोगों का [इसका अध्ययन] करना, यह समाज के लिए एक बड़ी समस्या ला सकता है : यदि हर कोई [काम या शिक्षा छोड़ देते हैं] और भिक्षु और भिक्षुणी बन जाते हैं, तो क्या मानव समाज बिखर नहीं जाएगा? तो यह [विकल्प] काम नहीं करेगा। ठीक इसीलिए मैं आपको साधारण समाज में साधना करने के लिए कहता हूँ, क्योंकि साधक अधिक से अधिक समाज के अनुरूप होते हुए साधना कर सकते हैं, और इससे समस्या का समाधान हो सकता है। साथ ही, यह तरीका व्यक्ति को वास्तव में स्वयं फा प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

आप साधारण समाज में कोई भी सामान्य काम कर सकते हैं। जीने के किसी भी तरीके में और किसी भी काम में, एक साधक एक अच्छा मनुष्य हो सकता है। एक साधक को एक अच्छा मनुष्य होना चाहिए चाहे वह कहीं भी हो। एक साधक के रूप में, जब आप साधारण समाज में अनुचित आचरण करते हैं तो निश्चित रूप से दोष आपका ही होगा, क्योंकि आपने एक साधक के जैसे व्यवहार नहीं किया और स्वयं को उच्च मानकों पर नहीं रखा। यदि आप उस बॉस के लिए अच्छा काम नहीं करते जिसने आपको काम पर रखा है, या, यदि आप एक शिष्य हैं, यदि आपने अपना होमवर्क पूरा नहीं किया है या कक्षा में ध्यान नहीं दिया है, तो क्या आप कह सकते हैं कि आप एक अच्छे व्यक्ति हैं? एक अच्छा मनुष्य, आप जानते हैं, वह किसी भी परिस्थिति में अच्छा होगा। यदि आप एक शिष्य हैं तो आपको अच्छी तरह से अध्ययन करना चाहिए। यदि आप एक

कर्मचारी हैं तो आपको अपना काम पूरा करना चाहिए। समाज और दूसरों के साथ अपने संबंधों में स्वयं का उचित आचरण रखें—आप सभी [आपके लिए इसका क्या अर्थ है] यह सोचने में सक्षम हैं। यदि आप निरंतर चीजों को बेहतर तरीके से कर सकते हैं, तो संघर्ष कम और छोटे होंगे, हालांकि वे अभी भी सामने आएंगे।

आपको कुछ परीक्षाएं दी जाएँगी जिससे आप में सुधार हो सके। साधना में, अक्सर जब संघर्ष आते हैं तो वे अचानक आते हैं, लेकिन यदि आप साधना करनी चाहते हैं तो वे संयोग से नहीं आयेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि आप साधना करनी चाहते हैं, तो मैं आपके साधना और जीवन के पथ को फिर से व्यवस्थित कर दूंगा। ऐसा इसलिए होगा जिससे साधक सुधार कर सके, और इसलिए जब आप समस्याओं का सामना करते हैं तो वे अक्सर अचानक उत्पन्न हो जाती हैं। वे अव्यवस्थित प्रतीत होंगी, और सतह पर वे पारस्परिक संघर्षों से भिन्न नहीं होंगी। निश्चित रूप से ऐसा नहीं होगा कि कोई देवता आपको परेशान करने आ जाए। केवल जब ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य आपके लिए कठिनाई पैदा कर रहा है तब ही यह आपके सुधार में स्वयंसेवक हो सकता है। फिर इन समस्याओं से कैसे निपटा जाए? आपको हमेशा करुणामयी हृदय बनाए रखना चाहिए, और जब आप समस्याओं का सामना करते हैं तो आपको स्वयं की जांच करनी चाहिए। उस दिन मैंने आप सभी से कुछ कहा: मैंने कहा कि यदि आप अपने शत्रु से प्रेम नहीं कर सकते तो आप बुद्ध नहीं बन सकते हैं। एक दिव्य जीव या एक व्यक्ति जो साधना कर रहा है, एक साधारण व्यक्ति को अपने शत्रु के रूप में कैसे देख सकता है? उनके शत्रु कैसे हो सकते हैं? बेशक, वर्तमान में आप ऐसा नहीं कर सकते। लेकिन आप ऐसा धीरे-धीरे कर लेंगे। अंत में आप ऐसा करने में सक्षम होंगे, क्योंकि [वैसे भी] आपके शत्रु साधारण लोगों की भीड़ के बीच मनुष्य ही होंगे। मनुष्य दैवीय प्राणियों के शत्रु कैसे बन सकते हैं? वे दैवीय प्राणियों के शत्रु होने के योग्य कैसे हो सकते हैं?

शिष्य: गुरु जी ने कहा कि मानव जीवन, जन्म से लेकर मृत्यु तक, उच्च प्राणियों द्वारा व्यवस्थित किया जाता है। तो गर्भपात का भ्रूण के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

गुरु जी : एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने साधना करनी शुरू की है, आपको पहले वह सब भूल जाना चाहिए जो आपने अतीत में किया था। अतीत में जो अनजाने में हो

गया वह हो गया। कुछ मत सोचिए; केवल साधना पर ध्यान दें। साधना में लगातार सुधार करना पहली प्राथमिकता है। जब आप एक सच्चे साधक होते हैं तो मैं कुछ भी हल करने में आपकी सहायता कर सकता हूं, और मैं कुछ भी हल कर सकता हूं। लेकिन एक बात है: यदि आप जानते हैं कि कुछ अनुचित है और फिर भी करते हैं, तो यह एक साधक के लिए आवश्यकताओं को पूरा नहीं करने के बराबर है, और यह एक साधक का [आचरण] नहीं है।

जहां तक गर्भपात की बात है, मैं आपको बता सकता हूं कि मैंने कुछ देखा है: कई शिशुओं की आत्माएं कई अस्पतालों के प्रवेश द्वारों के सामने और कमरों में हवा में मंडराती रहती हैं, और कुछ में उनके चारों हाथ-पैर नहीं होते है। इन छोटी आत्माओं को रहने के लिए कोई स्थान नहीं है। वे बहुत दयनीय हैं। उनमें से कुछ का अपनी होने वाली मां के साथ किसी पिछले जन्म में पारिवारिक संबंध हो सकते हैं। आगे से इस पर ध्यान दें। क्योंकि आप साधना करते हैं, मैं कुछ भी हल करने में आपकी सहायता कर सकता हूं।

शिष्य: गुरु जी, स्वयंसेवकों द्वारा व्यायाम क्यों सिखाया जाता है? क्या आपको चिंता नहीं है कि कोई गड़बड़ हो सकती है?

गुरु जी : यह इस तरह है: मैं चाहता हूं कि स्वयंसेवक व्यायाम सिखाते समय फालुन *गोंग* में कही गई बातों पर ध्यान दें। जब लोग व्यायाम करते हैं तो यह संभव नहीं है कि हर कोई ऐसा लगे कि वे एक ही सांचे से निकले हैं, और बिल्कुल एक जैसा कर रहे हैं। थोड़े से फर्क से कुछ नहीं होता। लेकिन उन्हें एक निर्धारित तरीके और मुख्य बिंदुओं के अनुसार करने का पूरा प्रयत्न करें। ऐसा इसलिए है क्योंकि फालुन *गोंग* में अभ्यास अन्य अभ्यासों से भिन्न हैं; जब आप अन्य अभ्यासों में व्यायाम करना बंद कर देते हैं, तो यह रुक जाता है और आपको व्यायाम को एक निर्धारित तरीके से समाप्त करने की आवश्यकता होती है। हमारा ऐसा नहीं है। फालुन *गोंग* एक ऐसा अभ्यास है जिसमें फा अभ्यासियों को परिष्कृत करता है। आपको चौबीस घंटे *गोंग* द्वारा परिष्कृत किया जा रहा है। यह ऐसे कैसे कर सकता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि मैंने आपके लिए जो यंत्र स्थापित किए हैं, वे स्वचालित हैं। फिर आप व्यायाम क्यों करते हैं? आप उन यंत्रों को सुदृढ़ कर रहे हैं जो मैंने आपके लिए स्थापित किए हैं। ध्यान रखें: जब आप अभ्यास

करते हैं तो आप उन यंत्रों को सुदृढ़ कर रहे हैं जो मैंने आपके लिए स्थापित किए हैं, और जो वास्तव में आपको परिष्कृत करते हैं वे यह यंत्र हैं। यंत्र चौबीस घंटे अभ्यासियों को निरंतर परिष्कृत करने के लिए *गोंग* को प्रेरित करते हैं। महान फा व्यायाम अभ्यास वह है जिसमें यंत्र शोधन को संचालित करते हैं। इसलिए यदि गतियां थोड़ी इधर-उधर हो जाती हैं, तो भी इसका नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा। लेकिन उन्हें यथासंभव सटीक रूप से करने का प्रयत्न करें। गतियों को हमेशा एक निर्धारित तरीके के अनुसार किया जाना चाहिए।

शिष्य: कई पिछड़े क्षेत्र हैं जहाँ व्यायाम वीडियो उपलब्ध नहीं हैं। गतियाँ एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में और उस दूसरे व्यक्ति से तीसरे व्यक्ति को सिखाई गयी हैं, इसलिए हमारे अभ्यास स्थल पर कुछ गतिविधियाँ भिन्न हैं।

गुरु जी : अधिक से अधिक लोग अभ्यास करेंगे, और शिष्य एक-दूसरे से मिलने जाएंगे, इसलिए यह मुद्दे शीघ्र ही हल हो जायेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि बहुत से लोगों के लिए फा प्राप्त करना बहुत कठिन है। मुझे इस बारे में पता है। साथ ही, सभी को लगता है कि फा महान है, और सभी फा को दूसरों तक फैलाना चाहते हैं और शांति से बहुत सा काम किया है। मुझे इसके बारे में सब पता है। इसका पुण्य अतुलनीय है।

शिष्य: मेरी दो वर्ष की बेटी और दो माह का बेटा है, और मैं आज उन्हें लाने ही वाला था। मैं उन्हें कितनी जल्दी फा के अध्ययन और अभ्यासों से परिचित करा सकता हूँ, और मुझे इसे कैसे करना चाहिए?

गुरु जी : मुख्य भूमि चीन में, अभ्यास करने वाले तीन और चार वर्ष के बच्चे हैं; अभ्यास करने वाले तीन वर्ष के बच्चे अपेक्षाकृत कम हैं, लेकिन असाधारण रूप से कई चार वर्ष के बच्चे अभ्यास कर रहे हैं, और यह सामान्य बात हैं। और आपको उन्हें बच्चा नहीं समझना चाहिए, और यह नहीं सोचना चाहिए कि वह चीजों को नहीं समझ सकते हैं। मैं आपको बता दूं कि उसका जन्मजात गुण शायद अच्छा है, और वह वयस्कों से भी चीजों को बेहतर समझ सकता है। सभी लोग कहते हैं कि बच्चे चीजों को काफी जल्दी

स्वीकार कर लेते हैं। ऐसा क्यों है? क्योंकि उनके जन्मजात विवेक को पूरी तरह से दबाया नहीं गया है, इसलिए कभी-कभी बच्चे चीजों को स्पष्टता से समझ जाते हैं। यदि बच्चे का कोई विशेष अतीत है, तो उसका जन्मजात विवेक और भी अच्छा होगा।

शिष्य: हम दिव्य नेत्र को कैसे समझें? क्या दिव्य नेत्र विभिन्न स्तरों पर खुल सकता है? और यदि कोई अभ्यास के माध्यम से ब्रह्मांड की सच्चाई की गहरी समझ प्राप्त करता है, तो फिर बुद्ध ब्रह्मांड की सच्चाई को कैसे समझ जाते हैं?

गुरु जी : इसके विषय में, मैं आपको बता दूं कि मनुष्य ब्रह्मांड की सच्चाई को कभी नहीं समझ पाएगा, क्योंकि मनुष्य इस मानव स्तर पर हैं। बुद्ध ब्रह्मांड को समझ सकते हैं, और यह बुद्ध के स्तरों और आयामों के कारण होता है। निम्न स्तर के देवता ब्रह्मांड के उच्च स्तरों के मामलों को नहीं समझ सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि साधक विभिन्न स्तरों पर जो ज्ञानप्राप्त करते हैं, या यह समझें कि, जो एक ज्ञानप्राप्त प्राणी विभिन्न स्तरों पर देखता है, वह उसके अपने विशेष स्तरों पर ब्रह्मांड का सत्य है। वे अभी भी नहीं देख सकते कि उनके ऊपर क्या है।

इसके अतिरिक्त, ऐसा नहीं होगा कि जैसे-जैसे कोई साधना करेगा, उस व्यक्ति का दिव्य नेत्र खुल जाएगा। यदि आप बुद्ध की तरह सब कुछ स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, तो आप साधना नहीं कर पाएंगे, क्योंकि यह अत्यंत धीमी गति से होगी। यदि आपका दिव्य नेत्र वास्तव में खोला गया था, तो आपने जो अन्य आयाम देखे, वे इस मानवीय आयाम से भी अधिक स्पष्ट होंगे, और आपकी त्रि-आयामी इन्द्रियां और वस्तुओं को समझने की क्षमता मानवीय आयाम को देखने की तुलना में और भी अधिक स्पष्ट और वास्तविक होंगी। सामान्य परिस्थितियों में, मैं उन अभ्यासियों को अन्य आयामों का केवल एक भाग देखने के लिए अनुमति दे सकता हूं जो चीजों को देख पाते हैं। जो लोग बड़ी मात्रा में चीजों को देख सकते हैं वे सामान्य रूप से धुंधली होंगी, या वे विशेष परिस्थितियों को छोड़कर, केवल निम्न स्तरों पर ही चीजें देख पाएंगे। ऐसा क्यों है? यदि सभी लोग चीजों को वास्तव में स्पष्ट रूप से देख सकते, तो हर कोई तुरंत साधना करने के लिए आ जाता, और वे बहुत दृढ़ निश्चयी होंगे। उस स्थिति में, भूलभुलैया टूट गयी होती, ज्ञानोदय का अस्तित्व नहीं होता, और साधना का कोई मूल्य नहीं होता। केवल भूलभुलैया के बीच ही मनुष्य साधना और ज्ञानोदय प्राप्त करने में सक्षम हैं, और केवल

इसी तरह से दुख सहने का कोई अर्थ होगा। यदि लोग सब कुछ स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, तो उन्हें आपत्ति नहीं होगी चाहे उन्हें कितना भी कष्ट हो। बुद्ध के लिए अपने स्तर को ऊपर उठाना कठिन क्यों है? सारी सच्चाई सामने होते हुए वे कैसे सुधार कर सकते हैं? उनका सुधार बहुत धीमा होता है, क्योंकि उन्हें कोई कष्ट नहीं है। मनुष्य सत्य को नहीं देख सकते हैं, और केवल इसी रूप में वे साधना कर सकते हैं। न देख पाना अपने आप में एक प्रकार का कष्ट है। मनुष्य के लिए सब कुछ पीड़ा है।

ऐसे लोग हैं जो मुझसे पूछते हैं: गुरु जी, मैं अभ्यास कर रहा हूं, तो मेरी स्वास्थ्य समस्या अभी भी क्यों है? मैं पूछूंगा: क्या आप ठीक होने के लिए आ रहे हैं? या साधना करने आ रहे हैं? यदि आप साधना के लिए आ रहे हैं, तो स्वास्थ्य के बारे में न सोचें। यह तभी सुधरेगा जब आप ऐसी चीजों के बारे में सोचना पूरी तरह से बंद कर देंगे और उनसे मोहभाव नहीं होगा। चूँकि आप अभी भी उस को पकड़े हुए हैं जो मूल रूप से आपकी मानवीय भावना थी, इसलिए आपको एक अभ्यासी के रूप में नहीं माना जा सकता है। यदि मानवीय मोहभाव को मूल रूप से हटा दिया जाए तो यह कैसा होगा? कुछ लोगों को अनिद्रा का रोग होता है। लेकिन यदि आपको नींद नहीं आ रही है, तो क्या यह व्यायाम करने का सही समय नहीं है? देखें कि क्या उसके बाद आप सो सकते हैं। मैं आप सभी को बता सकता हूं कि अंतर केवल एक विचार में है; मनुष्य और दैवीय प्राणियों के बीच का अंतर केवल यह एक विचार है। यदि आप इसे छोड़ सकते हैं, तो आप एक साधक हैं; यदि आप नहीं कर सकते हैं, तो आप एक मनुष्य हैं।

शिष्य: वर्तमान में क्या मठों में रहकर साधना होती है? यदि हां, तो क्या मैं एक भिक्षु या भिक्षुणी के रूप में साधना करने वाला शिष्य हो सकता हूं?

गुरु जी : जैसे-जैसे फा फैलता है, अधिकांश लोग इस तरह [साधारण समाज में रहते हुए] साधना करेंगे। निःसंदेह, कुछ भिक्षुणियाँ और भिक्षु महान फा का पालन कर रहे हैं। महान फा की साधना, प्रारूप को महत्व नहीं देती है। और वास्तव में, दिव्यलोक के सभी बुद्ध, ताओ और देवता चीजों को इसी तरह देखते हैं। बुद्ध साधारण मानव प्रारूपों को महत्वपूर्ण नहीं मानते, बल्कि मानवीय भावनाओं को हटाने की साधना करते हैं। लोग चाहे कितने भी मंदिर बना लें, या चाहे वे प्रतिदिन बुद्ध की मूर्ति को हाथ

जोडें, यदि वे द्वार से बाहर जाने के बाद जो चाहें करते हैं, तो फिर यह साधना नहीं होगी। यदि आप अपने पूरे मन से साधना करते हैं, तो बुद्ध इसे देखकर प्रसन्न होंगे। यह प्रारूप की बात नहीं है। सच्ची साधना में एक गुरु आपकी देखभाल करेंगे। मनुष्य के मन में जो भावनाएँ हैं, उन्हें दूर करना ही साधना है। (*तालियाँ*) वास्तव में, यदि आप महान फा की साधना करने के लिए स्वयं को मनुष्यों की जटिल भीड़ से अलग कर लेते हैं, तो चीजें वास्तव में धीमी हो जाएंगी। बेशक, यदि आप भिक्षु और भिक्षुणी बनना चाहते हैं और साधना करनी चाहते हैं, तो वर्तमान में हमारे पास इसके लिए कोई व्यवस्था नहीं हैं।

शिष्य: मानव शरीर के उच्च-ऊर्जा पदार्थ में परिवर्तित होने के बाद हम जो भोजन करते हैं उसका क्या प्रभाव पड़ता है?

गुरु जी : खाए गए खाद्य पदार्थ साधना में यंत्रों द्वारा परिवर्तित किये जाएंगे। साधना अभी भी सामान्य साधना होगी।

शिष्य: क्या अमेरिका में पैदा हुए चीनी लोग जो केवल अंग्रेजी बोल सकते हैं, वे फल पदवी तक साधना कर पाएंगे?

गुरु जी : वर्तमान में कई शिष्य कोकेशियान हैं। आप कोई भी भाषा बोलें, इससे साधना प्रभावित नहीं होगी। मैंने स्वीडन में कोकेशियान शिष्यों के लिए एक कक्षा आयोजित की। उन्हें चीजों की बहुत अच्छी समझ थी, और उनकी साधना में सुधार बहुत तेज था। चीनी लोगों का एक प्राचीन इतिहास है, और एक अत्यंत गहरी संस्कृति है। चीनी लोगों की विशेषता यह है कि वे बहुत अंतर्मुखी होते हैं, और उनके मन में बहुत सी चीजें होती हैं। यदि आप चाहते हैं कि चीनी लोग एक सिद्धांत को समझें, तो आपको तर्क को बहुत अच्छी तरह से समझाना होगा। लेकिन कोकेशियान ऐसे नहीं हैं। इनका स्वभाव बहिर्मुखी होता है और ये खुलकर बोलते हैं। आप बता सकते हैं कि वे कब क्रोधित हैं और आप बता सकते हैं कि वे कब खुश हैं। उनके मन में कुछ भी नहीं होता है, क्योंकि सब कुछ सामने है। उनका अंतर्ज्ञान चीनी लोगों की तुलना में अधिक प्रबल है, और जैसे

ही किसी चीज को अच्छी तरह से समझाया जाता है, वे इसे समझ जाते हैं, बिना आपके गहराई से समझाने के। उनकी बहुत अधिक मनोवैज्ञानिक बाधाएँ नहीं होती हैं, इसलिए वास्तव में वे बहुत जल्दी साधना कर पाते हैं।

जो लोग चीनी नहीं समझते हैं वे भी साधना कर सकते हैं। लेकिन एक बात है: अंग्रेजी केवल मेरे कहने के सतही अर्थ का अनुवाद कर सकती है। यह सतही अर्थ का सटीक अनुवाद नहीं कर सकती है, लेकिन इससे उच्च-स्तरीय आंतरिक अर्थ प्रभावित नहीं होंगे। जब भविष्य के लोग फा का अध्ययन करेंगे, तो सतह—मनुष्यों के इस स्तर की चीजें—प्रमुख होंगी। इसलिए यदि भविष्य के लोग चीनी नहीं समझते हैं, तो यह उनके लिए बहुत कठिन होगा।

शिष्य: अलग-अलग जातियों के अलग-अलग दिव्यलोक हैं। अफ्रीका के अश्वेत लोगों के पास कोई क्यों नहीं है?

गुरु जी : काले लोगों में भी दिव्य प्राणी होते हैं जिन्होंने उन्हें बनाया है। बात केवल इतनी है कि वे उन्हें जल्दी भूल गए हैं।

शिष्य: क्या सभी धर्मों में दिव्यलोक होते हैं?

गुरु जी : केवल सच्चे धर्मों के ही दिव्यलोक होते हैं। उन दुष्ट धर्मों के दिव्यलोक नहीं होते। साथ ही, फा-विनाश काल में, वास्तव में, किसी भी धर्म में सच्चे देवता उनकी देखभाल नहीं करते हैं। लोग अब उस बात का पालन नहीं करते हैं जो एक समय में देवताओं ने उन्हें करने के लिए कहा था, और धर्मों में कुछ लोग बुरे काम करने में सबसे आगे हैं। कुछ लोग धन पाने के लिए धार्मिक पहचान का उपयोग कर रहे हैं, कुछ राजनेता बन रहे हैं, और कुछ समाज को भ्रष्ट करने में सबसे आगे हैं। वे स्वयं देवताओं में विश्वास नहीं करते हैं और वे स्वयं साधना करने में असमर्थ हैं। जाओ और उस भिक्षु या भिक्षुणी से पूछो: क्या आप मुझे फल पदवी प्राप्त करवा सकते हैं? क्या आप फल पदवी प्राप्त कर सकते हैं? मैंने एक बार कुछ लोगों से पूछा जो साठ और सत्तर वर्षों से

भिक्षु और भिक्षुणियाँ हैं, और उन्होंने यह कहने का साहस नहीं किया कि सुखावटी दिव्यलोक है। फिर वे क्या पाने के लिए साधना कर रहे थे? दिव्य लोकों के द्वार बंद कर दिए गए हैं। अराजक चीजें [जो वे फैलाते हैं] देवताओं द्वारा प्रदान नहीं की गई थीं, और वे दिव्य लोकों में जाने की तो बात ही नहीं कर सकते।

शिष्य: सपने में मैंने देखा कि गुरु जी हमें सिखा रहे हैं और हमारे साथ बातचीत कर रहे हैं। इस सपने को कैसे समझना चाहिए?

गुरु जी : अपेक्षाकृत अच्छे जन्मजात गुण वाले कुछ लोग हैं जो वास्तव में संपर्क कर सकते हैं। उनमें से अधिक बच्चे हैं। सामान्य परिस्थितियों में, जब आप मुझे ध्यान के दौरान एकाग्रता (डिंग) में देखते हैं, तो अधिकांश समय मैं आपसे बात नहीं करूंगा। जब मैं करता हूं, तो यह आपको एक संकेत देने के लिए होता है। कुछ लोग कहते हैं कि गुरु जी ने उन्हें सपने में व्यायाम सिखाया। आपको इसके बारे में सावधान रहना चाहिए, और आपको यह समझना चाहिए कि आपको कौन से व्यायाम सिखाए जा रहे हैं। यदि वे पाँच अभ्यासों से अधिक सिखाते हैं, तो यह निश्चित रूप से आपके साथ हस्तक्षेप करना है। यदि कही गई बातें मेरे द्वारा फैलाए गए फा-सिद्धांतों से परे हैं, तो वह निश्चित ही मैं नहीं हूं, और वह नकली है। जो कोई भी नकली [छवियों] का सामना करता है तो उन्हें दूर भगा देना चाहिए। आप कह सकते हैं, "मैं फालुन दाफा की साधना करता हूं और मुझे आपकी चीजें नहीं चाहिए।" और यदि यह चला नहीं जाता है, तो आप मेरा नाम पुकार सकते हैं।

शिष्य: दुख कर्म को मिटा सकते हैं। क्या स्वास्थ्य समस्याओं को सहने से कर्म को हटाया जा सकता है?

गुरु जी : जहां तक स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने की बात है, मनुष्य जब भी कष्ट सहता है तो वह कर्म का नाश कर रहा होता है। स्वास्थ्य समस्याओं को सहने से कर्म का नाश होता है। अभी-अभी मैंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति जीवन भर बीमार नहीं पड़ता है, तो वह मरने के बाद नरक में जाने के लिए अभिशप्त है, क्योंकि जीवन भर

वह केवल कर्म करता रहा और उसे चुका नहीं रहा। प्रसन्नता वह है जो साधारण लोग खोजते हैं। यदि साधकों को थोड़ी सा भी कष्ट नहीं होता है, तो वे अपने द्वारा पहले उत्पन्न किये गए कर्मों को चुकाने में सक्षम नहीं होंगे। इसके अतिरिक्त, वे अपनी सोच को ऊपर नहीं उठा पाएंगे, और इसलिए यह साधना नहीं होगी।

शिष्य: मठों में शिष्य साधना कब कर पाएंगे?

गुरु जी : मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि मैं आपको भिक्षु या भिक्षुणी के रूप में साधना नहीं करने दूँगा। कुछ भिक्षु जो एक धार्मिक स्थल पर रहते हैं वे महान फा (दाफा) की साधना कर रहे हैं। वे भिक्षु या भिक्षुणी बन गए थे और साधारण जीवन में नहीं लौट सकते थे। तो एक निश्चित अवधि के लिए, इस प्रकार की व्यवस्था उपस्थित रहेगी। लेकिन जो भिक्षु या भिक्षुणी नहीं बने हैं, उन्हें सामान्य समाज में साधना करनी चाहिए। मैंने आपको जो दिया है वह साधारण समाज में साधना का मार्ग है।

शिष्य: मुझे आशा है कि गुरु जी हम सभी के लिए दिव्य नेत्र खोल सकते हैं।

गुरु जी : इस विषय में बात करने की आवश्यकता नहीं है। जैसे-जैसे आप साधना करते जाते हैं, और पुस्तक पढ़ते जाते हैं, यह आपके लिए किया जाता है। एक साधक को जो कुछ चाहिए वह सब आपके लिए किया जाएगा, जिसमें आपके दिव्य नेत्र खोलना भी सम्मिलित है। लेकिन ऐसा नहीं है कि सभी को देखने की अनुमति होगी.

शिष्य: मेरे पति का निधन हो गया, और मुझे उनकी बहुत याद आती है। मैं इस भावना को कैसे छोड़ सकती हूँ?

गुरु जी : आपके लिए "उसे बहुत याद करना" एक साधारण व्यक्ति की भावना है, और केवल जब आप इसे छोड़ देते हैं तो आप साधना कर सकते हैं। मैं आपके लिए एक सरल सिद्धांत का उदहारण दूंगा। परिवार के प्रति सामान्य लोगों के स्नेह से सभी मनुष्य

जुड़े हुए हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आपने साधारण लोगों के बीच कितनी बार पुनर्जन्म लिया है? और आपके कितने माता-पिता, भाई, पत्नियाँ, बच्चे और पति हैं? साधारण लोगों के बीच पुनर्जन्म लेते हुए, आपने हर जीवन में अपने परिवार के सदस्यों को इस तरह याद किया है। क्या आप हर समय उन सभी के बारे में सोच सकते हैं? आपका सच्चे परिवार का सदस्य कौन है? आपका सच्चा परिवार केवल वहीं है जहां आपका जीवन सृजित किया गया था; वे आपके लौटने का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन इसके स्थान पर आप यहां खो गए हैं और इन अस्थायी चीजों से जुड़े हुए हैं।

यह वह है जो आप सभी पर यह लागू होता है, चाहे आप एक घर में जन्म लेते हैं, या संसार में आते हैं, यह एक होटल में रहने जैसा है: आप बस एक रात के लिए रुकते हैं, और फिर आप अगले दिन निकल जाते हैं. अगले जन्म में कौन किसे पहचानता है? आपके आस-पास के लोगों में वे पति-पत्नी भी हैं जिन्हें आप अपने पिछले जन्मों में बेहद प्यार करते थे और परिवार के अन्य सदस्य भी। क्या आप उन्हें पहचानते हैं? क्या वे आपको पहचानते हैं? मैं जिस बारे में बात कर रहा हूं वह फा-सिद्धांत हैं। मेरा अर्थ यह नहीं है कि आप अपने माता-पिता के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ नहीं रहें, बल्कि यह है कि आप उस मानवीय भावना को छोड़ दें। यदि कोई भावना आपको बांध कर रखती है, तो आप साधना नहीं कर सकते। यह आपको जोर से बांध लेती है जिससे आपको साधना करने से रोका जा सके, और यह आपको बुद्ध बनने से रोकती है। इस दृष्टिकोण से देखते हुए, क्या यह आपके प्रति एक असुर की तरह काम नहीं कर रही है? क्या यह आपको बुद्ध बनने से नहीं रोकती है? आप अभी भी समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या चल रहा है। यदि किसी व्यक्ति का निधन हो गया है और अभी भी आप पर उसकी ऐसी पकड़ है, तो आपके लिए उस [मानवीय भावना] को छोड़ देने का यह और भी अच्छा कारण है। मैं आपको सिद्धांत समझा रहा हूँ; मैं चीजों को समझने में आपकी सहायता करने का प्रयत्न कर रहा हूं। यदि आप एक साधना नहीं करने वाले साधारण व्यक्ति हैं, जो हमेशा मृत लोगों के लिए दुःख अनुभव करते हैं, तो आपका जीवन सुखी नहीं होगा। मानव जीवन बहुत छोटा है। बुद्धों के दिव्यलोक के दृष्टिकोण से, साधारण समाज और भी छोटा है। जब दो बुद्ध बात कर रहे होते हैं तो वे आपको जन्म लेते हुए देख सकते हैं, और कुछ और शब्दों के बाद, जब वे मुड़ते हैं, तो वे देखेंगे कि आप पहले ही दफन हो

चुके हैं। यह इतना तेज़ है। यह केवल इतना है कि मनुष्य, मनुष्य के इस काल अवकाश के क्षेत्र में, यह अनुभव करते हैं कि यह काफी धीमा है।

शिष्य: कभी-कभी मेरे मन में कुछ विचलित करने वाले विचार आते हैं। मुझे पता है कि वे बुरे हैं, लेकिन उन्हें हटाना बहुत कठिन है। क्या वे असुर हैं?

गुरु जी : आप जानते हैं कि आपका ध्यान भटकाने वाला विचार बुरा है, इसलिए इसे दूर करने का प्रयत्न करें। मैं आपको बता दूं कि जब मनुष्य इस संसार में जीते हैं तो अक्सर वह व्यक्ति स्वयं नहीं होता जो विचार कर रहा होता है—यह वास्तव में वह व्यक्ति नहीं है जो जी रहा है। यदि आप आज के लोगों को देखें, चाहे वह व्यक्ति किसी भी देश का हो, वे दिन भर व्यस्त रहते हैं। वह कैसे जीता है? मैं आपको बता दूं कि कुछ लोग आधे समय भी वास्तव में स्वयं वह व्यक्ति नहीं होते हैं जो जी रहे हैं, यहाँ तक कि कुछ लोग बिलकुल भी स्वयं वह व्यक्ति नहीं होते है।

विशेष रूप से आधुनिक लोगों के साथ, क्या वे वास्तव में जानते हैं कि वे कैसे जी रहे हैं? अपने जीवन में, युवावस्था से वयस्कता तक, एक व्यक्ति कई "अनुभव" जमा करता है और ये "अनुभव" व्यक्ति के मन में धारणाएं बनाते हैं। लोग सोचते हैं कि जब वे किसी समस्या में पड़ जाते हैं, तो "यदि मैं इससे इस तरह से निपटता हूं, तो यह ठीक हो जाएगी।" फिर कुछ समय बाद इस प्रकार निश्चित धारणाएँ बन जाती हैं। आप सोचते हैं कि आपने बहुत सी चीजों को अच्छी तरह से निपटा लिया है, लेकिन अब आप स्वयं का अस्तित्व नहीं हैं; आप नींद में प्रवेश कर चुके हैं। साधारण समाज में रहने वाले "आप"—आपका मांस शरीर—उन जन्म के बाद की निर्मित धारणाओं से हावी रहा है। आप यह करते हैं वह करते हैं, पूरा दिन आप धुन में रहते हैं, और ऐसे ही दिन बीतते जाते हैं। लेकिन वे सभी धारणाएं आपको हानि से बचाने के लिए बनाई गई थीं। लेकिन यदि आपको हानि नहीं होती है, तो आप कर्म का भुगतान नहीं कर सकते हैं; आप उन तरीकों से प्राप्त करेंगे जो आपको नहीं करना चाहिए; और आप दूसरों को हानि पहुंचाएंगे, इस प्रकार निरंतर कर्म उत्पन्न करते रहेंगे। और वे कर्म जीवित हैं, क्योंकि जन्म के बाद की धारणाएं और बुरे कर्म मन में विचार-कर्म बनाते हैं। फिर जब आप साधना करते हैं, तो आपको इसे हटाना होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आप साधना

करते हैं, तो आप [उन चीजों] की साधना नहीं कर सकते। आप स्वयं की साधना करने के स्थान पर [उन चीजों] की साधना नहीं करना चाहेंगे, और निश्चित रूप से मैं भी ऐसा नहीं चाहूंगा।

मैं आपको बुद्ध बनाना चाहता हूं, आपको साधना करवाना चाहता हूँ, और साधना में आपको अपने जन्म के बाद की धारणाओं से छुटकारा पाना होगा और उस विचार-कर्म को हटाना होगा जो आपका स्थान ले लेता है। फिर इसके बारे में सोचें, यदि आप उन चीजों को हटाना चाहते हैं, क्योंकि वे जीवित हैं, वे ऐसा नहीं होने देंगे। क्योंकि वे ठीक आपके मन के भीतर हैं, वे आपकी सोच को डगमगाने का प्रयत्न करेंगे, आपकी सोच को अस्थिर करेंगे, आपको फा का अध्ययन नहीं करने देंगे, फा में विश्वास नहीं करने देंगे, और आपसे यह या वह करने के लिए आग्रह करेंगे, इस हद तक कि आप अनजाने में अनुचित कर बैठेंगे। आपने साधना शुरू करने से पहले लोगों को कोस कर और बुरी बातें सोचकर उस कर्म को उत्पन्न किया था। ठीक है, फिर विचार कर्म आपके विचारों में कोसने वाले शब्दों के साथ प्रक्षेपित होंगे, जिससे आप फा में विश्वास नहीं करेंगे, या यहां तक कि मुझे भी कोसेंगे। मैं इसे आपकी गलती नहीं मानता क्योंकि यह आप नहीं हैं जो मुझे कोस रहे हैं; नहीं तो आपका पाप बहुत बड़ा होगा। आपका विचार कर्म मुझे कोस रहा है, लेकिन साधना द्वारा आपको इसे हटाना होगा अन्यथा यह आपके द्वारा कोसने के रूप में गिना जाता है। इसलिए, जब तक आप इसे हटाते हैं और इसे अस्वीकार करते हैं, तो आप जान लेंगे कि यह आप नहीं हैं जो कोस रहे हैं और यह काम केवल कर्म कर रहे हैं, असुर कर रहे हैं। हम इसे मिलकर हटाने का प्रयास करेंगे और आप को ठीक कर लेंगे। वर्तमान में इस संसार में रहने वाले अधिकांश लोग वास्तव में स्वयं नहीं जी रहे हैं। वे अपने सोचने के तरीके और जन्म के बाद बनी अपनी धारणाओं के लिए जी रहे हैं।

शिष्य : ब्रह्मांडीय घटनाएँ क्या हैं? किस स्तर पर साधकों को ब्रह्मांडीय घटनाओं से संकेत प्राप्त करने की अनुमति नहीं है?

गुरु जी : ब्रह्मांडीय घटना में लोगों के लिए कोई संकेत नहीं है। वर्तमान में केवल वे जानवर जिन्होंने बुद्धि प्राप्त की है, इस अवधि के दौरान जब मानव जाति का यह स्थान

भ्रष्ट हो गया है, मनुष्य को नियंत्रित करने के लिए चीजें करेंगे। स्वर्ग में दिव्य प्राणियों ने मानव जाति के लिए एक बहुत बड़ा चक्र स्थापित किया है जो घूम रहा है। इस पर यह निर्धारित किया जाता है कि मानव समाज के लिए कौन सी परिस्थितीयाँ और किस समय पर आएँगी। इसके एक निश्चित समय तक घूमने के बाद, मानव जाति के लिए बिना उनके विचारे एक निश्चित घटना घटित होगी। और इसे "ब्रह्मांडीय घटना में परिवर्तन" के रूप में जाना जाता है।

शिष्य: "पुनर्जन्म" के लिए मानक क्या है?

गुरु जी : पुनर्जन्म का एक मानक है? पुनर्जन्म के साथ, एक जीव इस जीवनकाल में एक मानव और अगले में एक पशु हो सकता है, या शायद यह एक पेड़-पौधे में पुनर्जन्म लेगा। वैसे भी, कोई भी किसी भी चीज़ में पुनर्जन्म ले सकता है। कोई किसमें पुनर्जन्म लेता है यह उसके कर्म की मात्रा पर निर्भर करता है।

शिष्य: क्या भाग्य जानने की शक्ति से भविष्य देखा जा सकता है?

गुरु जी : क्या भाग्य जानने की शक्ति से भविष्य देखा जा सकता है? भाग्य जानने की शक्ति से, कोई किसी व्यक्ति के पूरे जीवन या कई जन्मों को जान सकता है, शायद इससे भी अधिक। कुछ लोग यह भी जानते हैं कि वे कहाँ से आए हैं। वे यह भी जान सकते हैं कि व्यक्ति का भविष्य कैसा है। एक व्यक्ति न केवल अपने बारे में जानता है, बल्कि दूसरों के बारे में भी जान सकता है। यह भाग्य जानने की शक्ति है।

शिष्य: बुद्ध और बोधिसत्व अतीत में कहाँ तक चीजों को जान सकते हैं? भविष्य में कहाँ तक?

गुरु जी : जब किसी व्यक्ति में कोई त्रुटी न हो, तभी वह बुद्ध या बोधिसत्व बनने तक साधना कर सकता है, और त्रुटिहीन व्यक्ति सब कुछ जानता है। आप इन चीजों को

ज्ञान के रूप में नहीं ले सकते और उनकी खोज नहीं कर सकते, और मैं इन प्रश्नों का उत्तर और व्याख्या नहीं कर सकता। कुछ लोग अक्सर मुझसे पूछते हैं: बुद्ध कैसे जीते हैं? मैं आपको बताऊंगा कि मनुष्य बिल्कुल नहीं जान सकते कि बुद्ध कैसे जीते हैं। यदि आप जानना चाहते हैं कि बुद्ध कैसे जीते हैं, तो बुद्ध बनने तक साधना करें। कुछ लोगों ने सुखावटी दिव्यलोक, फालुन का दिव्यलोक, या अन्य दिव्यलोक देखे हैं। आपके स्तर पर आपको यह ऐसा प्रतीत होता है। यदि आप वहां की वास्तविक स्थिति को पूर्ण रूप से देखना चाहते हैं, तो आपको बुद्ध के स्तर को प्राप्त करना होगा; तभी आप इसका वास्तविक रूप देख सकते हैं। यह बिल्कुल इस फा की तरह है: जब आप इसे इस स्तर से देखते हैं तो यह इस स्तर का फा-सिद्धांत होता है, और जब आप इसे दूसरे स्तर से देखते हैं तो यह उस स्तर का फा-सिद्धांत होता है। यह उच्च स्तर की चीजों का वास्तविक रूप उन लोगों के सामने प्रकट नहीं कर सकता जो निम्न स्तर पर हैं। यह ब्रह्मांड का एक सिद्धांत है।

शिष्य: भक्ति से उत्पन्न हुए पाखंडी बुद्धों का अंततः क्या होगा?

गुरु जी : यह इस बात से निर्धारित होगा कि वे कितने अच्छे या बुरे हैं। समाज और ब्रह्मांड में उथल-पुथल मचाने वालों को हटाया जाएगा। बेशक, उनमें से कुछ अच्छे हैं जिन्हें बचने का अवसर दिया जाएगा, और उनका पुनर्जन्म होगा। हर चीज की व्यवस्था हो सकती है।

शिष्य: क्या नैतिक गुण की साधना करने का कोई व्यवस्थित तरीका है?

गुरु जी : मैंने तुम्हें जो व्यवस्था दी है, वह सबसे व्यवस्थित है। इससे अधिक व्यवस्थित कुछ भी नहीं है। जाईये और *ज़ुआन फालुन* को पढ़िए।

शिष्य: "हथियार नीचे रख दो, और तुरंत ही बुद्ध बन जाओ।" बौद्ध धर्म में ऐसा कहा गया है। फालुन विचारधारा में क्या कहा गया है?

गुरु जी : वे शब्द शाक्यमुनि के नहीं हैं। यह लोगों द्वारा बाद में कहे गए थे। [इस तरह की चीजों के कारण] फा-विनाश काल में बौद्ध धर्म के माध्यम से साधना करना कठिन है। जो बुद्ध के शब्द नहीं थे वे भी उनके शब्द माने जाते हैं। आधुनिक लोग नहीं जानते कि क्या हो रहा है, क्योंकि वे बुद्ध का सत्य नहीं हैं। आपने बस अपना हथियार नीचे रख दिया और चाहे आपने कितने लोगों को मार डाला हो, आप बुद्ध बन जाते हैं—ऐसा कैसे हो सकता है? अच्छे लोगों को भी साधना करनी पड़ती है। क्या यह सच नहीं है? अवश्य ही, कहावत में निहित अर्थ शायद यह है कि अब से बुरे कर्म मत करो; शायद इसका यही अर्थ है, अर्थात् साधना आरंभ करो। लेकिन यह बुद्ध बनने से बहुत दूर है।

शिष्य: क्या आप "शरीर विस्तृत हो जाएगा" इसके विषय में और बता सकते हैं?

गुरु जी : साधक की सोच और उनके शरीर की क्षमता और मात्रा का विस्तार होगा। इसलिए कभी-कभी जब आप स्थिर मुद्रा करते हैं तो आपको ऐसा लगेगा कि आप लंबे और बड़े हो गए हैं। कुछ अन्य लोगों को लगेगा कि वे बहुत छोटे हो गए हैं, क्योंकि जिस शरीर की पूरी तरह से साधना हो चुकी है, वह बड़ा या छोटा हो सकता है। साधकों के शरीर वास्तव में बड़े होंगे। अन्यथा, उच्च स्तरों पर आप ब्रह्मांड की वास्तविकता की समझ को सहन नहीं कर पाएंगे। साधना में व्यक्ति का शरीर प्रत्येक आयाम में बड़ा और बड़ा होता जाता है। यहाँ बैठे हुए मेरा शरीर उतना ही बड़ा है जितना आप देख रहे हैं, लेकिन दूसरी ओर मेरा शरीर एक के बाद एक बड़ा और बड़ा होता जाता है। वे इतने बड़े हैं कि जो लोग यहां बैठे हैं और जिनके दिव्य नेत्र खुले हैं, वे अधिक से अधिक मेरे पैर की उंगलियों के नीचे के भाग को ही देख सकते हैं, उनके ऊपरी भाग को नहीं। और यह भी सबसे बड़ा रूप नहीं है। बेशक, यह दिखावा करने के लिए नहीं है; गुरु और उसके शिष्यों के बीच कोई असत्यता नहीं होती है। मैं आपको बता सकता हूं कि साधकों के शरीर का विस्तार वास्तव में बढ़ रहा है। मुझे याद है कि एक भारतीय योगी के पास एक चित्र था, और चित्र में "जगत गुरु" (भगवान) अपने शिष्यों से कह रहे थे, "देखो, मेरे शरीर में सभी देवता हैं।" चित्र में असंख्य देवता उनके शरीर के अंदर थे। साधना में, एक देवता बनने के उद्देश्य से साधना करनी है। एक देवता का आकार उस

देवता के स्तर के आकार और उसकी फल पदवी की ऊंचाई के अनुसार होता है। इस प्रकार दैवीय शरीर अपनी फल पदवी और स्तरों के अनुरूप होते हैं।

शिष्य: मैं पूछना चाहता हूं: अमेरिका की इस यात्रा पर क्या आप नौ दिवसीय फा-व्याख्यान सम्मलेन आयोजित करने की योजना बना रहे हैं?

गुरु जी : नहीं। कारण यह है कि इस फा को पूरी तरह से समझाया जा चूका है। जब से *ज़ुआन फालुन* प्रकाशित हुआ है, मैंने व्यवस्थित रूप से बात नहीं की है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अब के बाद जब मैं बात करूँगा, तो मैं *ज़ुआन फालुन* के क्रम का अनुसरण नहीं करूंगा। जब मैं उपदेश देता हूं तो मेरे पास कुछ लिखित में नहीं होता है। मैं शिष्यों की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के अनुसार बोलता हूं, और मैं एक ही प्रश्न को विभिन्न कोणों से संबोधित करता हूं, इसलिए यह हर बार अलग होता है। इसलिए यदि मैं फिर से समेल्लन आयोजित करूँगा और फा पर व्यवस्थित रूप से व्याख्यान दूंगा तो यह *ज़ुआन फालुन* के अनुसार साधना करने वाले शिष्यों के साथ हस्तक्षेप करेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैंने पाया है कि केवल एक ही प्रश्न पर, जितना अधिक मैं उस पर बोलता हूं, उतना ही ऊपर जाता हूं, क्योंकि मैं अधिक, और अधिक चाहता हूं कि शिष्य समझें (*तालियां*), इसलिए कही गई बातें शिष्यों की साधना में हस्तक्षेप करेंगी। फा पहले ही छप चुका है, और इसलिए मैं फिर से व्यवस्थित व्याख्यान नहीं दे सकता। लेकिन जब तक आप *ज़ुआन फालुन* के अनुसार साधना करते रहेंगे यह वैसा ही रहेगा। आपके विशिष्ट प्रश्नों का उत्तर देते हुए मैं यह कहूँगा कि जैसे आप अभी साधना कर रहे हैं वैसे ही ठीक है।

शिष्य: संसार में इतने सारे लोगों के होते हुए भी गुरु जी को कैसे पता चलता है कि कौन साधना कर रहा है?

गुरु जी : उच्च स्तरों पर साधना के विचार और समझ निम्न स्तरों से भिन्न हैं। आपने मानवीय विचारों के साथ जैसे कल्पना की है, वह उससे भिन्न है। साधना के दौरान, जब लोग एक निश्चित स्तर पर पहुंच जाते हैं, तो वे फा शरीरों का निर्माण कर सकते हैं, और

यहां तक कि अनगिनत फा शरीरों का निर्माण भी कर सकते हैं। शिष्यों के मार्गदर्शन और सुरक्षा के कार्यों को पूरा करने के लिए फा शरीर, मुख्य शरीर (जिसे मुख्य ज्येष्ठ भी कहा जाता है) की सहायता करते हैं; वे बहुत सी विशिष्ट चीजें करते हैं। फा शरीर मेरे विवेक की अभिव्यक्ति हैं। इस प्रकार के विवेक का अपना दिव्य रूप होता है। स्पष्ट शब्दों में कहें तो वे मैं ही हूं। इसलिए, मेरे फा शरीर मेरी समग्र छवि और सोच रखते हैं। वे कुछ भी कर सकते हैं, मुख्य शरीर और उनमें कोई अंतर नहीं है। लेकिन इस स्तर के नीचे कोई भी इन आंतरिक संबंधों को नहीं देख सकता है; इस स्तर को पार करने के बाद ही कोई इसे देख सकता है। कार्य करने की विशिष्टताओं की बात करें तो, वे उन्हें वैसे ही करते हैं जैसे मैं व्यक्तिगत रूप से उन्हें करता, क्योंकि वे मेरे विचारों का एक अभिव्यक्त अवतार हैं।

शिष्य: "किसी भी चीज का पीछा न करना और स्वाभाविक रूप से प्राप्त करना" कैसे "रहने का कोई मार्ग नहीं है और वहीं से किसी के हृदय का उद्भव होता है" से सबंधित है?

गुरु जी : जहां तक महान फा साधना में बौद्ध धर्मग्रंथों को समझाने की बात है, मुझे नहीं लगता कि यह बहुत उपयुक्त है। इस छोटे से संदर्भ में बोलते हुए, शाक्यमुनि जो कहते हैं वह उनके मार्ग की बातें हैं। यहां जो कुछ है वह मेरे मार्ग की चीजें हैं। यहाँ दो साधना पद्धतियों का अभ्यास न करने का विषय है। विस्तृत रूप में कहें तो, सभी फा महान फा से आते हैं, और ऐसे कई जटिल तत्व हैं जिनके बारे में आप नहीं जानते हैं। इसलिए मैं बौद्ध धर्म के नियमों और अवधारणाओं की व्याख्या करने के लिए कभी इच्छुक नहीं था। कभी-कभी मैं थोड़ा सा बता देता हूँ, या कोई उदाहरण दे देता हूँ, लेकिन वह केवल मैं अपने फा पर व्याख्यान दे रहा होता हूं। मैं आप सभी को परामर्श दूंगा कि यदि आपके मन में धर्मों की चीजें हैं, तो अब जब आप फालुन दाफा की साधना कर रहे हैं, तो उन्हें तुरंत हटा दें और स्वयं को उनसे शुद्ध कर लें। अन्यथा वे आपके साथ गंभीरता से हस्तक्षेप करेंगी। इसके अतिरिक्त, आप बौद्ध धर्म की चीजों का उपयोग मेरी बातों को आंकने के लिए करेंगे, और आप साधना नहीं कर पाएंगे। बौद्ध

धर्म में भी वे दो साधना पद्धतियों का अभ्यास न करने की बात करते हैं। अब धर्म-विनाश [काल] का अव्यवस्थित धर्म का काल है। आप सभी को सचेत रहना चाहिए।

जहाँ तक दो साधना पद्धतियों का अभ्यास न करने का प्रश्न है, वास्तव में, धर्मों का पालन करने वाले कितने लोग वास्तव में इसका अर्थ समझ सकते हैं? धर्मों में ऐसे लोग हैं जो लगभग हर चीज की साधना करते हैं। कुछ भिक्षु एक ही समय में ज़ेन बौद्ध धर्म और तंत्रवाद की साधना करते हैं, और वे सभी प्रकार के शास्त्रों को पढ़ते हैं। और शुद्धावास बौद्ध धर्म में वे ज़ेन बौद्ध धर्म के विषय में बात करते हैं। लेकिन जब आप एक मार्ग में साधना करते हैं, तो आपको उस मार्ग के शास्त्रों को पढ़ना चाहिए; और सभी शास्त्र शाक्यमुनि की कही हुई बातें नहीं हैं। यदि आप *अवतम्शक सूत्र* का पाठ करते हैं, तो साधना पूर्ण करने के बाद आप आवतंसक दिव्यलोक में जाएंगे। यदि आप *अमिताभ सूत्र* पढ़ते हैं, तो आप सुखावटी दिव्यलोक में जाएंगे। समय के साथ, लोगों को लगने लगा है कि सभी शास्त्र शाक्यमुनि के हैं। लेकिन जब आप साधना के पद्धतियों को मिश्रित करने लगते हैं तो कोई भी बुद्ध अब आपकी देखभाल नहीं करेंगे। आधुनिक लोगों का बुद्ध में विश्वास एक ही विचार साझा करता है: वे सोचते हैं कि वे सभी बुद्ध हैं, तो क्या उनमें से किसी की भी पूजा करना उचित नहीं है? और चूंकि वे सभी बुद्धों की पुस्तकें हैं, क्या उनमें से किसी को भी पढ़ना उचित नहीं है? वे मानवीय विचार हैं।

आप जानते हैं, *ज़ुआन फालुन* को पढ़कर कोई व्यक्ति फालुन दिव्यलोक में क्यों जा सकता है या फालुन और अन्य चीजें प्राप्त कर सकता है जो उन्हें इस मार्ग से मिलनी चाहिए? धर्मों के शास्त्र एक ही हैं—आप उस मार्ग में साधना कर रहे हैं, इसलिए आप उस मार्ग से चीजें प्राप्त कर रहे हैं। तब उस साधना मार्ग के उच्च प्राणी आपके शरीर में उस विचारधारा की चीजें स्थापित करेंगे। फिर यदि आप भी इस मार्ग के शास्त्र पढ़ते हैं, और यह मार्ग भी आपको इस मार्ग की चीजें देता है, और यदि सभी मार्गों से चीजें आती हैं, तो आपका शरीर गड़बड़ा जाएगा। आप कैसे साधना करेंगे? उदाहरण के लिए, यदि वॉशिंग मशीन का एक भाग टेलीविजन में डाल दिया जाये, तो जैसा कि मैं समझता हूँ, वह टेलीविजन कुछ भी प्रदर्शित नहीं कर पाएगा। यह उतना आसान और सरल नहीं है जितना लोग समझते हैं।

गोंग और अस्तित्व के उत्थान के लिए साधना एक अत्यंत गंभीर और जटिल विकास सूत्र है। यह मानव जाति के किसी भी सटीक उपकरण से अधिक सटीक है। इसलिए, साधना की चीजों को एक साथ नहीं मिलाया जा सकता है, और न ही मिलाया जाएगा। जैसे ही कोई इस तरह से काम करता है, और जैसे ही बुद्ध देखते हैं कि आप इसकी और उसकी दोनों की साधना कर रहे हैं, वे आपको अपने पद्धतियों से चीजें नहीं देंगे। यह साधक के नैतिक गुण की समस्या है। एक तथागत, बुद्ध की चीजों की साधना कई जन्मों के कठिन साधना के माध्यम से करता है, और वे चीजें उनके दिव्यलोक का निर्माण करती हैं। उनका दिव्यलोक उन्हीं साधना तत्वों से बना है। आप केवल एक मनुष्य हैं, और आप उन्हें ऐसे ही बदलना चाहते हैं? इसके अतिरिक्त, दो साधना पद्धतियों की साधना करना आपके लिए दो बुद्धों के फा को हानि पहुँचाने के समान है, और तीन साधना पद्धतियों की साधना करना तीन बुद्धों के फा को हानि पहुँचाने के समान है। क्या यह पाप नहीं है? कुछ लोग कहते हैं कि उन्हें पता नहीं था। ठीक है, इसीलिए बुद्ध आपको कुछ भी नहीं देंगे क्योंकि आप नहीं जानते थे; वे आपको यह पाप नहीं करने देते। यह दो साधना पद्धतियों का अभ्यास न करने का मूल कारण है। लोग नहीं जानते, और सोचते हैं कि जितना अधिक वे [इस मिश्रित तरीके] से अध्ययन करते हैं, उतना ही वे अपने ज्ञान को विस्तृत कर सकते हैं। यह एक मोहभाव है।

एक पद्धति में साधना करना केवल उस पद्धति में साधना करना है: ज़ेन बौद्ध धर्म ज़ेन बौद्ध धर्म है, शुद्धावास शुद्धावास है, अवतम्शक अवतम्शक है, तियानताई तियानताई है, और तंत्रवाद तंत्रवाद है। और तांत्रिक साधनाओं में भी, आपस में साधना को मिश्रित नहीं किया जा सकता है; इसका लाल संप्रदाय लाल संप्रदाय है, और इसका श्वेत संप्रदाय श्वेत संप्रदाय है। यह एक ऐसी चीज है जिसे कोई व्यक्ति बिलकुल भी गड़बड़ नहीं कर सकता है। साधना सबसे गंभीर, गंभीर विषय है। मानव संसार में इससे ज्यादा गंभीर कुछ भी नहीं है। क्योंकि यह सबसे अद्भुत है, इसे निश्चित रूप से सबसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। अवश्य ही, मैं आपसे फालुन *गोंग* का अध्ययन नहीं करवाऊंगा। यदि आपको लगता है कि आप बौद्ध धर्म के किसी अन्य पद्धति से फल पदवी प्राप्त कर सकते हैं, तो उसका अध्ययन करें। लेकिन यदि मैं चीजों को स्पष्ट रूप से नहीं समझाता हूं तो मैं आपके प्रति उत्तरदायी नहीं हो रहा हूं। क्योंकि आपका यहाँ बैठना आपके पूर्वनिर्धारित संबंध के कारण है, मैं आपको बता दूं कि: धर्म, धर्म-विनाश के

काल में हैं और यहां तक कि भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए भी साधना करना कठिन है। आप उन भिक्षुओं या भिक्षुणियों से पूछ सकते हैं: क्या आप फल पदवी प्राप्त कर सकते हैं? मैं सब कुछ जानता हूं, और जहां तक इस संसार के या पूरे संसार के भिक्षुओं और भिक्षुणियों का प्रश्न है, जो त्रिलोक-फा को पार कर सकते हैं, जो अर्हत का पहला ज्ञानोदय प्राप्त कर सकते हैं, वे कम ही हैं। इसके अतिरिक्त, उनका अभी भी एक पैर भीतर है और एक पैर बाहर है—यह अभी भी सहायक चेतना की साधना है। वास्तव में, वे बुद्ध के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप चाहते हैं कि वह आपको बचाए। लेकिन बचाकर कहाँ ले जाएँ? यदि व्यक्ति अर्हत है, तो उसे अभी भी बुद्ध के दिव्यलोक तक की साधना करनी होगी, और बुद्ध उसे आने देना चाहते हैं या नहीं, यह बुद्ध पर निर्भर करता है। वह उसे कहाँ बचाकर ले जा सकता है?

शिष्य: गुरु जी ने कहा था कि उच्च स्तर पर व्यायामों का अभ्यास पूरी तरह से स्वचालित होता है। [क्या वह सही है]?

गुरु जी : चीन में, जब *चीगोंग* पहली बार उभरा, तो ऐसे लोग थे जिन्होंने कहा था कि *चीगोंग* किसी व्यक्ति को फल पदवी प्राप्त करने में सक्षम नहीं बना सकता है, क्योंकि उस समय *चीगोंग* का प्रसार स्वास्थ्य समस्याओं को ठीक करने और स्वस्थ रहने के स्तर से संबंधित था। अभी-अभी मैंने कहा था, अर्थात्, वह *चीगोंग* वास्तव में मेरे फालुन दाफा के प्रसार का मार्ग बना रहा था। यदि *चीगोंग* का प्रसार शुरू नहीं हुआ होता, तो आज मेरे लिए महान फा का प्रसार करना सबसे कठिन होता। यदि मैं आज इसे सबसे हठी समाज में फैला सकता हूं, तो भविष्य में जब यह [आगे] फैलता है तो इसे समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

कुछ लोग कहते हैं कि *चीगोंग* एक ऐसा मार्ग है जिसका कोई प्रयोजन (यु वी) होता है, और यह कि शाक्यमुनि ने कहा था कि जिन मार्गों का प्रयोजन होता है वे भ्रामक होते हैं और किसी को फल पदवी प्राप्त करने में सक्षम नहीं कर सकते हैं। वास्तव में, जो [*चीगोंग* के विषय में] यह कहते हैं कि वे नहीं जानते कि "प्रयोजन रखने" का क्या अर्थ है। वे कहते हैं कि व्यायाम की गतियों में प्रयोजन होता है। फिर भी कई दाओवादी प्रथाओं में गतियाँ होती हैं, और उनके माध्यम से साधना करने वाले महान दाओवादी

के स्तर काफी ऊंचे हैं—मौलिक महान ताओ ने कई प्राणियों को औसत देवताओं और बुद्धों से भी उच्च स्तर प्राप्त करवाया है। ऐसा नहीं है कि व्यायाम करना प्रयोजन करना करना है। और फिर, तांत्रिक प्रथाओं में भी लोग मुद्राएं करते हैं। चीन में भिक्षु विभिन्न मुद्राएं करते हैं, और वे एक या दोनों पैरों को मोड़कर पद्मासन का अभ्यास करते हैं। क्या वे गतियाँ नहीं हैं? क्या किसी चीज में प्रयोजन होने या न होने का अर्थ केवल यह है कि उसमें कितने व्यायाम हैं? यह "प्रयोजन होने" का अर्थ नहीं है। "प्रयोजन होने" का तात्पर्य किसी व्यक्ति का साधना करते हुए चीजों से मोहभाव का है जिन्हें वह छोड़ नहीं सकता है। इस तरह के लोग मानवीय चीजों के बारे में बात करते हैं, और फिर कुछ ऐसे भी हैं जो तरीकों, कौशल और जादूई कलाओं की खोज करते हैं, अनुचित सोच रखते हैं कि ये किसी व्यक्ति को ऊपर उठाने में सहायता कर सकते हैं। वे मोहभावों को दूर करने को मूलभूत नहीं मानते हैं, और वे साधारण कौशल का पीछा करते हैं, और प्रयोजन के साथ काम करते हैं। कुछ भिक्षु और भिक्षुणियाँ धन कमाने, अधिक मंदिर बनाने, समाज को लाभ पहुँचाने और राजनीति में सम्मिलित होने का प्रयत्न कर रहे हैं, और यही प्रयोजन है। उन चीजों के लिए साधना करना वास्तव में एक भ्रम है, और जो कोई ऐसा करता है वह अपनी साधना से भटक गया है। क्या वे चीजें किसी को फल पदवी प्राप्त करने में सक्षम बनाती हैं? "मैं बुद्ध के लिए बहुत सारे मंदिर बनाऊंगा और पीछे के दरवाजे का तरीका अपनाऊंगा—इससे मुझे ऊपर जाने की अनुमति मिलेगी।" हालांकि ऐसा कैसे हो सकता है? यदि साधारण लोगों की आपकी उन भावनाओं को हटाया नहीं जाता है, तो आप दिव्य आयामों में रहने का साहस नहीं करेंगे, भले ही आपको वहां रखा गया हो। अतुलनीय पवित्र, प्रतिष्ठित और पवित्र देवताओं और बुद्धों की तुलना में, आप इतने लज्जित होंगे कि आप कहीं भी अपना चेहरा दिखाने का साहस नहीं करेंगे। आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपको वहां नहीं होना चाहिए, क्योंकि आपके विचारों का स्तर बहुत छोटा पड़ जाएगा, और आप स्वयं ही नीचे चले जाएंगे। व्यायाम गतियाँ प्रयोजन होने के बराबर नहीं है; मानवीय मोहभाव होना वास्तव में "प्रयोजन रखना" है।

मैंने कहा है कि साधना में विचारों की सक्रियता सरलता से समस्याएँ पैदा कर सकती हैं, और इसलिए आपको अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए कि विचार न हों, प्रयोजन न हों। सभी वस्तुएं और पदार्थ जीवित हैं और अन्य आयामों में उनका अस्तित्व होता

है। जहां तक साधना यंत्रों का प्रश्न है जो मैंने आपके लिए स्थापित किये हैं, जब आप अभ्यास करते हैं तो आप उन यंत्रों को सुदृढ़ कर रहे होते हैं। जब वह यंत्र एक निश्चित सीमा तक शक्तिशाली हो जाएगा, तो वह अपने आप घूमने लगेगा। जब आप आने वाले समय में अभ्यास करेंगे, तो हर बार जब आप उन्हें नौ बार करेंगे, तो [यंत्र] शक्तिशाली और मजबूत और मजबूत हो जाएंगे। अंततः आप पाएंगे कि आपको गिनने की आवश्यकता नहीं है और आप केवल अपने अभ्यास करेंगे; जब आप नौवीं बार पहुंचेंगे [यंत्र] स्वयं फालुन को घुमाएंगे, और नौवीं बार वे स्वयं *जेयिन* में चले जाएंगे। उसके बाद आपको गिनने की भी आवश्यकता नहीं होगी।

शिष्य: क्या हर कोई जान सकता है कि वह कब त्रिलोक-फा से पार हो गया है?

गुरु जी : कुछ लोगों के जन्मजात गुण बहुत ऊंचे होते हैं, और इसलिए यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे अपने मूल स्थानों पर लौट सकें, उन्हें कुछ भी नहीं बताया जा सकता है। यदि उन्हें थोड़ा भी बताया जाए, तो इससे उनके पथ को हानि पहुंचेगी और वे अपने मूल स्थान पर लौटने में असमर्थ हो जाएंगे। इस प्रकार, हमें प्रत्येक व्यक्ति की विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर चीजों का निर्धारण करना होता है। हालांकि, ऐसी भी परिस्थितीयाँ होती हैं जब इसे जाना जा सकता है, और कुछ व्यक्ति जान सकते हैं।

शिष्य: भविष्य में, धार्मिक वातावरण में साधना करने वाले मठों के शिष्यों को साधारण लोगों के बीच जाकर भिक्षा माँगनी होगी। क्या "भविष्य" का संदर्भ मानव जाति की इस अवधि से है या पहले के समय से है?

गुरु जी : भिक्षु और भिक्षुणियाँ साधारण लोगों से भिन्न होते हैं। मैं उन्हें साधना करने के लिए कह रहा हूं, जैसा कि अन्य महान फा शिष्यों द्वारा की जाती है, तथा और भी ऊँची फल पदवी प्राप्त करवाने के लिए; और इससे उन्हें एक ऐसा वातावरण मिलता है जिसमें वे और भी अधिक शक्तिशाली सद्‌गुण उत्पन्न कर सकते हैं।

शिष्य: लोग कैसे जान सकते हैं कि उनकी सुरक्षा करने के लिए फा शरीर हैं या उनके शरीर के अंदर फालुन हैं?

गुरु जी : जहां तक फालुन का प्रश्न है, कुछ लोग संवेदनशील होते हैं और इसे अनुभव कर सकते हैं, और कुछ संवेदनशील नहीं होते हैं और इसलिए वे इसे अनुभव नहीं कर सकते हैं। ऐसा नहीं है कि हर कोई इसे अनुभव कर सकता है। जो लोग फालुन के घूर्णन को अनुभव कर सकते हैं, उनके लिए एक बार फालुन उनके शरीर में स्थिर हो जाने के बाद इसे अनुभव करना कठिन होगा। यह आपके हृदय की धड़कन की तरह है: यदि आप स्पर्श नहीं करते हैं तो क्या आप अपने हृदय की धड़कन को अनुभव कर सकते हैं? जब यह आपके शरीर का भाग बन जाता है तो आप इसे अनुभव नहीं कर पाएंगे, लेकिन कुछ लोगों को शुरुआत में भी इसका अनुभव नहीं होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके शरीर संवेदनशील नहीं हैं। कोई बात नहीं। लोगों के शरीर बेहद जटिल होते हैं, और हर व्यक्ति अलग होता है।

शिष्य: मान लीजिए कि एक युवा व्यक्ति फल पदवी तक साधना कर लेता है और तुरंत दिव्यलोक में चला जाता है। उस स्थिति में वह अपने माता-पिता या बच्चों के प्रति उत्तरदायित्व को पूरा नहीं कर सका। तो क्या यह दूसरों के लिए कठिनाईयां छोड़ना नहीं होगा?

गुरु जी : यह ठीक इसलिए है क्योंकि अभी आपने फल पदवी प्राप्त नहीं की है और क्योंकि आपके इतने उच्च स्तर के विचार नहीं हैं इसलिए आप इस प्रश्न पर विचार करने के लिए साधारण सोच का उपयोग कर रहे हैं। एक बार जब कोई व्यक्ति उस स्तर तक पहुंच जाता है, तो उसकी हर चीज की समझ भिन्न हो जाती है। उसकी साधना के दौरान उत्पन्न महान सद्गुण के कारण, उसके चारों ओर सब कुछ बदल जाता है। वास्तव में, हर किसी का अपना भाग्य होता है, और कोई भी दूसरों के भाग्य को निर्धारित नहीं कर सकता। कुछ लोग कहते हैं, "मैं बस चाहता हूँ कि मेरी संतान अच्छी तरह जीए।" यदि आपके संतान के पास पुण्य नहीं है, चाहे आप उनके लिए कितनी भी संपत्ति छोड़ जाएं, वे सब उड़ा देंगे, या यह आग की लपटों में जल जाएगा, खो जाएगा, या चोरी हो जाएगा। दूसरी ओर, यदि उनके पास पूण्य है, तो वे इसे विरासत में प्राप्त कर सकते हैं। हर

किसी का अपना भाग्य होता है, और कोई भी दूसरे व्यक्ति के भाग्य को निर्धारित नहीं सकता है। चाहे वे आपका परिवार हैं, वे इस जीवन में आपका परिवार हैं, लेकिन अगले जन्म में शायद वे किसी और व्यक्ति का परिवार होंगे; और या फिर, पिछले जन्म में वे किसी और के परिवार भी रहे होंगे। तो हर किसी का अपना भाग्य होता है। फिर यदि हम चाहते हैं कि दूसरे एक निश्चित तरीके से जीयें, तो यह बिलकुल भी काम नहीं करेगा, क्योंकि मानव जीवन मनुष्यों द्वारा नहीं, बल्कि उच्चतर प्राणियों द्वारा व्यवस्थित किया जाता है। ऐसा कुछ नहीं है कि क्या आप उन्हें पीड़ित छोड़कर चले जायेंगे, क्योंकि ये चीजें पहले से ही व्यवस्थित होती हैं। जैसे आप सोचते हैं यह चीजें वैसी नहीं है। यदि आप उस स्तर पर नहीं हैं, तो आप मुद्दों को साधारण लोगों की तरह देखेंगे। वास्तव में, [कल्पना करें] भगवान या बुद्ध तक की साधना करने में कितना शक्तिशाली सद्गुण सम्मिलित है। जैसे-जैसे आप साधना करेंगे, उसके बाद की अवधि को व्यवस्थित किया जाएगा।

शिष्य: जब मैं व्यायाम करता हूँ, तो मेरा सिर हिलने लगता है।

गुरु जी : इस तरह की चीजें होना अच्छा हैं। जब किसी व्यक्ति की ऊर्जा नाड़ियाँ खोली जा रही होती हैं, तो उसका सिर ऊर्जा के कारण हिलेगा। वास्तव में, जब कोई व्यक्ति व्यायाम करता है, तो कई घटनाएं घटेगी, दस हजार से अधिक। जो भी हो, आपको इसे उचित ढंग से देखना चाहिए। साधना का मार्ग एक साधक की समझ के अनुसार परीक्षणों से भरा होता है। कई तत्व *गोंग* को बनाते हैं। एक व्यक्ति की सतह बिजली के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील होती है। प्रारंभिक अवस्था में, जब *गोंग* प्रभावी होने लगता है, जब यह थोड़ा सा भी हिलता है तो आप असहज अनुभव करेंगे। कभी-कभी जब आप अच्छी चीजों की साधना करते हैं तो आपको संदेह होगा कि आप बीमार हैं, [और सोचेंगे] कि आप अस्वस्थ क्यों अनुभव कर रहे हैं। यदि आप इसे इस तरह समझेंगे, तो आप साधना कैसे करेंगे? आप एक साधक हैं। आपको उन सभी चीजों को अच्छा समझना चाहिए, और वे वास्तव में अच्छी हैं। जब ऊर्जा नाड़ियाँ खुलती हैं, तो आप अस्वस्थ अनुभव करेंगे, और भिन्न-भिन्न स्थानों पर पीड़ा अनुभव करेंगे। आवश्यक नहीं है कि शरीर में बदलाव सुखद हों। कभी-कभी ऐसा लगेगा कि आपके शरीर में

कई कीड़े रेंग रहे हैं, क्योंकि दस हजार से अधिक ऊर्जा नाड़ियाँ हैं। और यह केवल ये नाड़ियाँ ही नहीं हैं, क्योंकि वे आड़ी-तिरछी भी होती हैं, और कभी-कभी पूरे शरीर में ऐसा अनुभव होगा कि एक विद्युत प्रवाह इससे गुजर रहा है, या जैसे कि यह ठंडा, गर्म, सुन्न, भारी, घूमने वाला, इत्यादि है। बहुत सारी अवस्थाएं हैं, और सभी आपके शरीर को काफी अस्वस्थ अनुभव कराएंगे। लेकिन यह अच्छी बातें हैं। वे ऊर्जा और शरीर में होने वाले परिवर्तनों का परिणाम हैं। यदि हम विशिष्ट संवेदनाओं के बारे में बात कर रहे हैं [जैसे कि आपके प्रश्न में है], तो वैसी बहुत सी हैं। आप सभी को उन्हें अच्छी चीजें माननी चाहिए, और वे वास्तव में अच्छी चीजें हैं।

शिष्य: ज्ञानप्राप्त प्राणी बहुत अधिक निर्बाध होते हैं। गुरु जी महान फा का प्रसार कर रहे हैं और कई शिष्यों के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं। हमें "बहुत अधिक निर्बाध" को व्याख्या कैसे समझना चाहिए?

गुरु जी : यदि मुझे आपको बचाना है, तो निर्बाध होने का प्रश्न ही नहीं है। मैं आपके लिए पापों को सह रहा हूं, और कभी-कभी मैं आपके लिए कर्म को हटा देता हूं (*तालियां*)। ऐसा बुद्ध शाक्यमुनि और जीसस के साथ भी हुआ है, है ना? कुछ लोग कहते हैं: गुरू जी, आप में जो क्षमताएं है, तो फिर आपको कठिनाइयां कैसे हो सकती हैं? वास्तव में, यह सब कठिनाइयां आपकी हैं। उदाहरण के लिए, कुछ शिष्यों के कर्म हटा देने के बाद, उनके लिए थोड़ी कठिनाई बाच जाती है और उन्हें इसे सहना होता है, लेकिन वे फिर भी नहीं सह पाते हैं। लेकिन आप उस व्यक्ति को नष्ट नहीं कर सकते क्योंकि उसने कठिनाई के उस भाग को सहन नहीं किया था, और इसलिए मैं उनके लिए इसे सहन करता हूं। इसी तरह कठिनाइयां मेरे साथ हस्तक्षेप करती हैं।

लोगों को बचाना बहुत कठिन और दुष्कर है। मुझे पता है कि यीशु को सूली पर क्यों चढ़ाया गया था। मुझे यह भी पता है कि शाक्यमुनि के पास निर्वाण के माध्यम से जाने के अतिरिक्त कोई विकल्प क्यों नहीं था, और मुझे पता है कि क्यों लाओज को जल्दी से पांच हजार अक्षर लिख कर चले जाना पड़ा था। एक पवित्र मार्ग को फैलाना बहुत कठिन है। यदि कोई व्यक्ति अधर्म की बातें फैलाता है तो कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा।

अशांति पैदा करने के बाद वह वास्तव में नर्क में जाएगा और नष्ट हो जाएगा, क्योंकि उसने वास्तव में स्वयं को हानि पहुंचायी है।

शिष्य: उच्च स्तर के दिव्य असुर बड़े और छोटे प्रबुद्ध प्राणियों के बारे में कैसे जानते हैं, और असुरों के इस समूह को कौन नियंत्रित करता है?

गुरु जी : दिव्य प्राणियों से और भी उच्चतर दिव्य प्राणी होते हैं जो उनकी देखभाल करते हैं, और जो उच्चतर हैं उनसे और भी उच्चतर [दिव्य प्राणी हैं जो उनकी देखभाल करते हैं]। असुर ब्रह्मांड में सकारात्मक और नकारात्मक प्राणियों की अभिव्यक्ति हैं। उच्च स्तरों पर समझ निम्न स्तरों के जैसी नहीं है। जब कोई अरहत के स्तर को प्राप्त कर लेता है, तो उसके सभी मानवीय विचार समाप्त हो जाते हैं। एक व्यक्ति के मृत हो जाने के बाद और जब वह शरीर (मांस से बना शरीर) छोड़ देता है, तो उसके जीवन में किए गए सभी काम—वे भी जब वह तीन वर्ष का था—उसकी आंखों के ठीक सामने स्पष्ट रूप से दिखाई देंगे, जैसे कि उसने उन्हें अभी-अभी किये हों, एक मिनट पहले। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आप इस आयाम और समय को छोड़ देंगे, तो यह इस आयाम और समय से अलग होगा। सब कुछ ऐसा लगेगा जैसे यह अभी एक क्षण पहले किया गया हो। उस समय एक व्यक्ति ने जीवन में जो कुछ भी किया, चाहे वह उचित हो या अनुचित, वह सब व्यक्ति को पता चल जाएगा। और उस समय वह उन पर पछताएगा। उस समय व्यक्ति की सोच का नियंत्रित भाग खोल दिया जाएगा, लेकिन उसकी सोच बुद्ध के विवेक से अलग होगी क्योंकि बुद्ध का विवेक और भी उच्च क्षमताओं के कारण होता है।

शिष्य: गुरु जी के फा शरीरों का जीवन-यापन कैसे होता है?

गुरु जी : फा शरीर मैं ही हूं। बहुत से लोग जो बौद्ध धर्म को मानते हैं, धूप जलाते हैं, बुद्ध के नाम का जप करते हैं, माथा टेकते हैं, शास्त्र पढ़ते हैं और प्रतिदिन बुद्ध की पूजा करते हैं। यह धार्मिक विधियाँ बहुत ही पवित्र होती हैं। लेकिन यदि, धार्मिक विधियाँ समाप्त करने के बाद, वे पहले जैसे बन जाते हैं, तो इसका कोई अर्थ नहीं है। लोग अब

यह नहीं समझते हैं कि बुद्ध की पूजा कैसे की जाती है और उनका सम्मान कैसे किया जाता है। साधना में एक साधक कठिनाई को आनंद के रूप में लेता है, अपने सभी मोहभावों को दूर करता है, करुणामय होता है और प्रगति चाहता है, और बिना रुके परिश्रम से साधना में आगे बढ़ता है—और ऐसा, मैं आपको बता दूँ कि, मुझे आपके किसी भी धार्मिक विधियाँ को करने की तुलना में अधिक प्रसन्न करेगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस फा को फैलाते हुए मेरी लोगों से कोई अन्य आवश्यकता नहीं है। मैं केवल यह चाहता हूं कि आप फा प्राप्त करें, मैं जो चाहता हूं वह यह है कि आपकी साधारण मानवीय भावनाओं को दूर करना, और अंततः आपको बचाना।

बेशक, बुद्ध के फा शरीरों को भोजन की आवश्यकता होती है। यह वैसा नहीं है जैसा मनुष्य कहते हैं: बुद्ध नहीं खाते। कुछ लोग कहते हैं कि बुद्ध अनाज नहीं खाते। चाहे व्यक्ति वास्तव में जानता हो या केवल दिखावा करता हो, यह सभी शब्द सही हैं। बुद्ध मानवीय अनाज नहीं खाते हैं। लेकिन, वे अपने आयाम में खाना खाते हैं। यदि वे नहीं खायेंगे तो देवता भूख से नहीं मरेंगे, लेकिन वे भूखे और पतले हो जाएंगे, इसलिए उन्हें भी खाना चाहिए। हालांकि, वे सतही पदार्थ नहीं खाते हैं, बल्कि अधिक सूक्ष्म कणों से बने पदार्थ खाते हैं। धूप जलाने का भी वास्तविक महत्व है। आजकल यदि आप एक साधु से पूछें कि वह धूप क्यों जलाना चाहता है, तो वह कहेगा कि यह बुद्ध के प्रति सम्मान दिखाना है। लेकिन बुद्ध के प्रति सम्मान दिखाने के लिए धूप जलाने की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए? क्या कुछ और करने से काम नहीं चलता? वास्तव में, यदि धुप जलाने से निकलने वाला धुंआ भी पदार्थ है। और जो पदार्थ धुएँ का निर्माण करता है, वह केवल सतही पदार्थ नहीं है: धुएँ के अन्य भौतिक रूप भी होते हैं। भगवान और बुद्ध उन चीजों से अन्य चीजों का निर्माण करते हैं, जो शिष्यों को सुद्दढ़ करने के लिए उपयोग की जाती हैं।

शिष्य : फा शरीर और अवतार...?

गुरु जी : मैंने अवतारों के बारे में कभी बात नहीं की है। बुद्ध शाक्यमुनि ने जिन कई बातों के बारे में बात की, वे बहुत उचित थीं, लेकिन बौद्ध धर्म में जो कुछ भी कहा गया है वह बुद्ध शाक्यमुनि के मूल शब्द या विचार नहीं हैं। बुद्ध शाक्यमुनि के संसार छोड़ने

के पांच सौ वर्ष बाद तक बौद्ध धर्म के शास्त्र लिखे नहीं गए थे। पांच सौ वर्ष... जरा सोचिए, अमेरिका पांच सौ वर्ष पहले था भी नहीं। यदि अब जो पाँच सौ वर्ष पहले कहा गया था उसे एकत्रित किया जाये तो, इस संस्करण और उस समय के [संस्करण] के बीच कितनी बड़ी विसंगतियाँ होंगी? परिस्थितियां, समय, स्थान, और किन दशाओं में शब्दों का उद्देश्य क्या था [इनमें अंतर होगा], इसलिए विसंगतियां बहुत बड़ी होंगी। मैंने जो फा फैलाया वह बौद्ध धर्म नहीं है। मैंने अवतारों के बारे में कभी बात नहीं की; मैंने केवल फा शरीरों के बारे में बात की है। मैं आज के लोगों की सोच और आज की मानव जाति की संस्कृति को एकीकृत कर रहा हूं।

शिष्य: आइंस्टाइन ने कहा था कि प्रकाश की गति निर्धारित है। क्या यह विभिन्न आयामों पर भी लागू होता है?

गुरु जी : यह सिद्धांत जो आइंस्टीन को समझ में आया था वह मानव जाति के क्षेत्र के भीतर एक सिद्धांत है। वर्तमान में मनुष्य की समझ उतनी ही ऊपर तक जा सकती है। लेकिन जब आप मानव जाति के स्तर को पार करते हैं, तो आप पाएंगे कि आइंस्टीन ने जिन चीजों की खोज की, वे अब पक्की नहीं हैं, क्योंकि विभिन्न स्तरों के अलग-अलग सिद्धांत और उनके पदार्थ के संबंधित रूप होते हैं। आप जितने ऊपर जाते हैं, आप सत्य के उतने ही पास होते हैं, और जितना अधिक ऊपर जाते हैं, उतना ही सही होता है। जब आप उच्च स्तरों पर पीछे मुड़कर देखते हैं, तो [उस स्तर] के नीचे की कोई भी समझ ब्रह्मांड के मूलभूत सिद्धांत नहीं हैं; और यह कि, वे मूलभूत सिद्धांतों के जैसे बिलकुल नहीं हैं। जो व्यक्ति सत्य को समझने का साहस करता है, वह उससे पहले के लोगों द्वारा निर्धारित नियमों को तोड़ने का साहस करता है। यदि आप उनके नियमों के भीतर हैं, आप अपनी शोध कैसे भी करें आप उनका ही अनुसरण कर रहे होंगे। यदि आप उन नियमों को पार करते हैं, तो आप सच्चाई के एक कदम और पास होंगे।

जब लोग वर्तमान समझ से आगे निकल जाते हैं तो लोग पाते है कि अतीत की समझ पूर्ण रूप से सत्य नहीं थी। आइंस्टीन ने कहा था कि प्रकाश की गति सबसे तेज गति है, लेकिन मैं आपको बता दूं कि इसी आयाम में लोगों के विचारों की गति प्रकाश से भी तेज है। इसके अतिरिक्त, इस स्तर के ऊपर के उच्च स्तरों पर, समय के अंतर के

कारण, [विचार की] सबसे धीमी गति भी निचले स्तरों की सबसे तेज गति से भी तेज होती है। प्राणियों के स्तर होते हैं, और विभिन्न स्तरों के अलग-अलग समय और आयामी रूप होते हैं। सभी संवेदनशील प्राणी और पदार्थ अलग-अलग समय और आयामों के प्रतिबंधों के अधीन हैं। स्तर जितना ऊँचा होगा, गति उतनी ही तेज होगी; कहने का तात्पर्य यह है कि उच्च स्तरों पर सबसे धीमी गति निम्न स्तरों पर प्रकाश की गति जिसे लोग समझते हैं, की तुलना में बहुत तेज होती है। एक बुद्ध की शक्ति मनुष्य की शक्ति से अधिक होती है, और उनसे भी उच्च बुद्ध की और भी अधिक होती हैं, जो प्रकाश की गति मनुष्य समझते हैं उससे कहीं अधिक होती है।

मेरा इन सभी के बारे में बात करना आप सभी को यह बताना है कि मानव जाति के स्तर और भौतिक जगत के सिद्धांत मानव जाति के हैं जिन्हें मनुष्य को समझने की आवश्यकता है, लेकिन ये केवल मनुष्यों की समझ हैं और निश्चित रूप से ब्रह्मांड की सच्चाई नहीं हैं। उन्हें पूर्णरूप मत समझो, क्योंकि वे केवल इस स्तर की समझ हैं। शाक्यमुनि ने ऐसा क्यों कहा कि कोई भी धर्म निश्चित नहीं है? और आखिर में उन्होनें यह क्यों कहा, "मैंने अपने पूरे जीवन में कोई धर्म नहीं सिखाया?" क्योंकि जब उन्हें ज्ञान प्राप्ति हुई तब भी वे तथागत स्तर तक नहीं पहुंचे थे। वे जानते थे कि वे ऊपर की ओर साधना कर रहे हैं, और केवल अंत में, अपने अंतिम वर्षों में, वे तथागत के एक बहुत ही उच्च स्तर तक पहुंच गए। फा के प्रसार के अपने उनतालीस वर्षों में वे निरंतर ब्रह्मांड की अपनी समझ को निम्न से उच्च तक सिखा रहे थे। वे जानते थे कि जिन चीजों पर उन्होंने पहले व्याख्यान दिए थे, वे उच्चतम सिद्धांत नहीं थे, और जब उनमें फिर से सुधार आया, तो जो उन्होनें पहले सिखाया था उसकी तुलना में वे अब और उच्च स्तर पर थे। फिर उसके बाद भी, उन्होंने जो व्याख्यान दिए, वह अंतिम, परम सिद्धांत नहीं थे, इसलिए उन्हें पता था कि जो उन्होंने अभी सिखाया था वह अब भी अनुचित था, क्योंकि उनमें फिर से सुधार आया था। शाक्यमुनि जानते थे कि उन्होंने अपने पूरे जीवन में जो धर्म सिखाया वह ब्रह्मांड का सर्वोच्च धर्म नहीं था, कि यह ब्रह्मांड का उच्चतम सत्य नहीं था, इसलिए अपने अंतिम वर्षों में उन्होंने कहा, "अपने पूरे जीवन में मैंने कोई धर्म नहीं सिखाया।" लेकिन वे यह भी जानते थे कि भले ही विभिन्न स्तरों पर धर्म-सिद्धांत उच्चतम सिद्धांत नहीं हैं, वे ऐसे सिद्धांत हैं जिनका विभिन्न स्तरों पर प्राणियों को पालन करना चाहिए—या दूसरे शब्दों में, [वे जानते थे कि] उस स्तर पर वे ही सिद्धांत हैं।

विभिन्न स्तरों पर जितने उच्च सिद्धांत हैं, वे परम सिद्धांतों के उतने ही पास हैं। लेकिन ब्रह्मांड में उच्च प्राणी अंतिम, परम धर्म-सिद्धांतों को नहीं देख सकते हैं, इसलिए वे भी कहते हैं कि कोई धर्म निश्चित नहीं है।

आइंस्टीन ने जिन सिद्धांतों को समझा, वे वास्तव में साधारण लोगों में सबसे उच्च हैं। यदि आइंस्टीन के पास शोध जारी रखने का अवसर होता, यदि उन्हें और भी उच्च सिद्धांतों की खोज करने का अवसर मिलता, तो वे अपनी समझ को उलट देते। और वास्तव में, उन्होंने देखा कि धर्मों में और भी उच्च समझ पायी जाती है। आइंस्टीन की धार्मिक मान्यताएँ क्यों थीं और उन्होंने अपने बाद के वर्षों में धर्म को क्यों अपना लिया? ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने पाया कि धर्म जो सिखाते हैं वे सच्चे सिद्धांत हैं, और तभी उन्होंने इसे अपनाया। आखिर क्यों कई वैज्ञानिक धर्म को मानने लगते हैं? यह वे लोग हैं जो विज्ञान में इतने निपुण हैं ... यदि आप पक्के अनुभवजन्य विज्ञान की धारणाओं पर चलते हैं, तो आप समझ नहीं पाएंगे। वास्तव में, केवल वे जो निपुण नहीं हैं और दूसरों द्वारा निर्धारित परिभाषाओं के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं, वे [ऐसे सिद्धांतों के] रक्षक बनना चाहते हैं; उनके पास प्रतिष्ठा हो सकती है, लेकिन सार नहीं। वास्तव में निपुण लोगों की सोच परिभाषाओं या निष्कर्षों तक सीमित नहीं होती। वे ही वास्तव में बुद्धिमान हैं।

शिष्य: जब हम व्यायाम करते हैं और हमारे विचार शांत नहीं होते हैं तो क्या हम जुआन फालुन *का पाठ कर सकते हैं?*

गुरु जी : आप कर सकते हैं। यदि आप पूर्ण शांति प्राप्त करना चाहते हैं, तो अभ्यास करने के शुरुआती चरणों में इसे प्राप्त करना कठिन है। एक निश्चित अवधि के अभ्यास के बाद भी, पूर्ण शांति प्राप्त करना अभी भी बहुत कठिन है। क्यों? इसके बारे में सोचें, आप साधारण लोगों के बीच रह रहे हैं, साधारण लोगों के बीच साधना कर रहे हैं, और यह आप स्वयं हैं जो साधना कर रहे हैं। और यह आप स्वयं हैं जो साधारण लोगों के बीच रह रहे हैं, और आपको खाना है, कहीं रहना है, कपड़े पहनने हैं, [या] आपके परिवार के बच्चे कॉलेज जा रहे हैं, कोई आज बीमार है, कल एक आवश्यक मुद्दा सामने आता है—क्या आपको समझ आया, मानव संसार की सभी चीजें आपको व्याकुल कर रही हैं, और यदि आप उनके बारे में सोचना नहीं चाहते हैं तो भी आप सोचेंगे। केवल

यदि साधना में आप उन चीजों को सहजता से लेते हैं जिनसे साधारण लोगों को मोहभाव होते हैं, तभी आप [शांति] प्राप्त कर पाएंगे। [इन बातों को सहजता से लेना] साधारण लोगों के बीच साधना करने के विरुद्ध नहीं है, न ही यह आपके काम को अच्छी तरह से करने या अध्ययन करने के विरुद्ध है। कहने का तात्पर्य यह है कि, आप जो कुछ भी कर रहे हैं, आपको उससे मोहभाव नहीं हैं कि आप इसे व्यक्तिगत रूप से कैसे करते हैं। आप इसे धीरे-धीरे प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि शुरुआती चरणों में आप ऐसा करने में असमर्थ होते हैं। जब तक आप अपने साधारण लोगों की भावनाओं को कम कर सकते हैं, और ऐसा इस हद तक कर सकते हैं कि आप उन्हें बहुत सहजता से लेते हैं, और फिर इस हद तक कि आपको उनसे मोहभाव नहीं है—तब आपका मन स्वाभाविक रूप से शांत रहेगा।

धर्मों में लोगों को शांति प्राप्त करने के लिए कोई मार्ग नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि "बुद्ध अमिताभ" का जाप करने से लोग शांति प्राप्त कर सकते हैं। यह अभ्यास का एक रूप है, लेकिन जैसे-जैसे वह नामजप करता जाएगा, वह व्यक्ति फिर भी शांति प्राप्त नहीं कर पायेगा। "बुद्ध अमिताभ" शब्दों का जप करते समय कोई व्यक्ति उनका जप कैसे करता है? पूरे मन से जप करना पड़ता है [इस हद तक कि] "बुद्ध अमिताभ" का प्रत्येक शब्दांश उनके सामने प्रकट हो जाए। यह वास्तव में ऐसा है कि जब तक सब कुछ रिक्त न हो जाये और कुछ भी न बचे तब तक जप करना पड़ता है; जब कोई व्यक्ति इस स्तर तक पहुंचता है, तभी वह वास्तव में शांति प्राप्त करता है। ऐसा करते हुए वह शायद अभी तक उस स्तर तक नहीं पहुंचा हो, और रातों-रात एक-मन की स्थिति तक पहुंचना असंभव है। इसे शुरुआत में ही प्राप्त नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग अपने मुंह से "बुद्ध अमिताभ" का जप कर रहे हैं, लेकिन उनका मन अभी भी सोच रहा है, "मेरा बेटा बीमार है ... और उसने वास्तव में मेरा लाभ उठाया ... मेरा प्रेमी कैसा है, मैं सोचती हूँ?" लेकिन उनके मुंह अभी भी "बुद्ध अमिताभ" का जाप कर रहे होते हैं। मोहभावों की बड़ी गठरी के साथ, क्या कोई व्यक्ति शांति प्राप्त सकता है? अर्थात्, जैसे-जैसे आप साधना करते हैं और जब आप उन चीजों को सहजता से लेते हैं जिनसे साधारण लोग अधिक से अधिक मोहभाव रखते हैं, तो आप स्वाभाविक रूप से शांति प्राप्त कर पाएंगे। कुछ समय के लिए शांति प्राप्त करने में असफल होना साधना और सुधार में कोई बाधा नहीं डालता— सभी, इस बिंदु पर ध्यान

देना सुनिश्चित करें। फिर भी अन्य साधना तरीकों में वे इसे बहुत अधिक महत्व देते हैं, और ऐसा इसलिए है क्योंकि वे सह चेतना की साधना करते हैं और मुख्य चेतना को कुछ करने की अनुमति नहीं देते हैं।

वे मुख्य चेतना के "मरने" और चेतना को जीवित रखने पर जोर देते हैं, और वे सह चेतना को मुख्य चेतना मानते हैं। मुख्य चेतना आप स्वयं हैं, इसलिए यदि आपकी मुख्य चेतना मर जाती है, तो आप वास्तव में मर चुके होंगे, और [सह चेतना] शरीर पर अधिकार कर लेगी। हमारा अभ्यास यह निर्धारित करता है कि जब आप अंत में और पूरी तरह से शांति प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं, तो आपको इस बात से अवगत होने की आवश्यकता है कि आप व्यायाम कर रहे हैं और आपको अभी भी थोडा सा भान रखना चाहिए। यह मोहभाव नहीं है। यदि आपको अपना भान भी नहीं हैं तो आप किसकी साधना कर रहे हैं? क्या बुद्ध स्वयं से बेखबर होंगे? ऐसा नहीं होता है।

शिष्य : हम फालुन गोंग का अभ्यास करने वालों को अपने बौद्ध मित्रों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

गुरु जी : मैं आपको बता दूं कि आपको आज के धार्मिक अनुयायिओं को साधक नहीं समझना चाहिए। मैं आपको एक सच बताता हूं: भगवान और बुद्ध नीचे के धार्मिक रूपों को मान्यता नहीं देते या उन लोगों को जो धर्म पर ही टिके हुए हैं। वे केवल सच्ची साधना को ही मान्यता देते हैं, क्योंकि धर्म बाद की पीढ़ियों की उपज हैं। शाक्यमुनि ने अपने समय में कोई धर्म स्थापित नहीं किया। शाक्यमुनि ने साधना का एक सांप्रदायिक रूप बनाया। लोगों को चीजों के प्रति मोहभाव से रोकने के लिए, उन्होंने सभी को अपने परिवार को छोड़कर पहाड़ी जंगलों या गुफाओं में ध्यान लगाने के लिए कहा। बाद की पीढ़ियों ने धार्मिक रूपों का निर्माण किया, और यह समाज के लोग हैं जो इसे धर्म कहते हैं। लोग आजकल इसे नहीं समझते हैं, और [शाक्यमुनि के मार्ग] को धार्मिक रूप में बदल दिया है। जहां तक धर्म का प्रश्न है, भगवान और बुद्ध इसे मान्यता नहीं देते हैं। ऐसा नहीं है कि एक बार जब आपका बपतिस्मा हो जाता है या किसी मठ व्यवस्था में भर्ती हो जाते हैं तो भगवान और बुद्ध आपको मान्यता दे देंगे; यह मनुष्य है जो ऐसा करते हैं। और ऐसा नहीं है कि एक बार जब आपका बपतिस्मा हो जाता हैं या किसी

व्यवस्था में भर्ती हो जाते हैं तो आप निश्चित रूप से एक दिव्यलोक में पहुँच जायेंगे; ऐसा नहीं है कि एक बार जब आप बौद्ध धर्म में धर्मान्तरण कर लेते हैं तो आप बौद्ध विचारधारा के हो जाते हैं। बुद्ध देखते हैं कि क्या कोई व्यक्ति अपनी प्रतिज्ञा लेते समय सच्चा है, और क्या वह वास्तव में साधना करता है। बुद्ध प्रारूपों को मान्यता नहीं देते; उन्हें धर्मों ने मान्यता दी है।

जहां तक बौद्ध मित्रों का संबंध है, उनके साथ सामान्य व्यक्ति जैसा व्यवहार करें; लोग जो चाहें उस पर विश्वास कर सकते हैं। चूँकि आप साधारण लोगों के बीच साधना कर रहे हैं, आप निश्चित रूप से अन्य लोगों के संपर्क में आएंगे। भले ही उनकी कुछ मान्यताएँ हों, उनके पास सच्ची साधना को प्राप्त करने का कोई मार्ग नहीं है, इसलिए उनके साथ सामान्य मित्रों की तरह व्यवहार करें, बस।

शिष्य : फालुन गोंग का अभ्यास शुरू करने के बाद से, मैंने अपनी पाठशाला की पुस्तकों को पढ़ना बंद कर दिया है, और मैं बस पूरे मन से साधना करना चाहता हूँ।

गुरु जी : मैं इसके बारे में दो दृष्टिकोणों से बात करूँगा। एक तो शायद इस व्यक्ति की समझ बहुत अधिक है और उसका आधार बहुत अच्छा है। उसने वहीं के वहीं फा प्राप्त कर लिया और तुरंत समझ गया कि यह क्या है, और साधना में वह बहुत जल्दी आगे बढ़ जाता है। चूँकि उसका आधार अच्छा है और उसकी समझ ऊँची है, वह कई मोहभावों को छोड़ सकता है, और उसके जीवन के सार के साथ समझौता नहीं किया गया है; केवल इतना है कि उसकी सतह संसारी जगत से दूषित हो गई है। एक बार सतही प्रदूषण दूर हो जाने के बाद, वह बुद्ध फा के सत्य को समझ जायेगा, क्योंकि उसे शुरू से ही मानवीय चीजों से मोहभाव नहीं था। तब इस प्रकार के व्यक्ति को उस प्रकार के रूप में गिना जाता है जो अपेक्षाकृत अच्छा है जिसके बारे में मैंने अभी बात की है।

एक और स्थिति यह है कि एक व्यक्ति का आधार बहुत अच्छा है और साधना के लिए वह जानता है कि महान फा अच्छा है, लेकिन वह अभी भी पूरी तरह से और तर्कसंगत रूप से साधना के लिए महान फा की आवश्यकताओं को नहीं समझ पाया है। इस

प्रकार की स्थिति उन लोगों में भी प्रकट हो सकती है जो पिछली साधना पद्धतियों या भिक्षुओं या भिक्षुणियों द्वारा प्रभावित हुए हैं।

चाहे इनमें से जो भी हो, आप चरमता तक नहीं जा सकते। मेरा आपसे यह कहना कि साधारण लोगों के बीच साधना करें यह महान फा की साधना पद्धति द्वारा निर्देशित है। इसके अतिरिक्त, महान फा के अनुसार साधकों को हर परिस्थिति में उत्कृष्ट होना चाहिए जिसकी वे साधना करते हैं। यदि आप शिष्य हैं तो आपको अपनी पढ़ाई अच्छे से करनी चाहिए; यदि आप समाज के सदस्य हैं, तो आपको अपना काम अच्छी तरह से करना चाहिए, और साथ ही आप एक साधक भी हैं।

शिष्य: मैं एक वर्ष से फा का अध्ययन कर रहा हूं और व्यायाम का अभ्यास कर रहा हूं, लेकिन मेरे अभी भी विचार कर्म हैं। मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूं: क्या करना चाहिए?

गुरु जी : हमारे सभी शिष्य बहुत अच्छे हैं। वास्तव में, अपनी स्वयं की कमियों को अनुभव करने में सक्षम होने का अर्थ है कि आप साधना कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि वह क्या कह रहे हैं। मैंने आपको अभी कुछ बताया था, अर्थात्, जब आप *फालुन गोंग* का अभ्यास करने आएंगे, तो मैं आपके शरीर को शुद्ध कर दूंगा, और मूल रूप से अणुओं की सबसे बड़ी परत को पूरी तरह से शुद्ध कर दूंगा जो एक व्यक्ति की सतह बनाते हैं, जिसमें वह भाग भी सम्मिलित है जो आपके विचार हैं। लेकिन मैं अब भी एक भाग छोड़ना चाहता हूं जो आपको साधारण लोगों के बीच रहने और साधारण लोगों के बीच साधना करने की आपकी स्थिति को बनाए रखने में सक्षम बनाएगा। मेरा कहने का अर्थ यह है कि जब किसी व्यक्ति में मानवीय भावनाएं नहीं होती हैं, तो वह मानव संसार में नहीं रह सकता। मनुष्यों की चीजों के बिना आप एक मिनट भी मनुष्यों के बीच नहीं रहना चाहेंगे। लेकिन मैं आपसे कहता हूं कि आप और अधिक मोहभाव उत्पन्न न करें और अपने विद्यमान मानवीय मोहभावों को छोड़ देने का पूरा प्रयत्न करें।

वास्तव में, दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए तो, मैं आपके सभी विचारों को पूरी तरह से हटा सकता हूं, आपके सभी बुरे विचारों को हटा सकता हूं, और सीधे आपके मोहभावों को हटा सकता हूं। लेकिन ऐसा नहीं चलेगा; यह साधना नहीं मानी जाएगी। लेकिन एक

चीज है जो मैं कर सकता हूं: सतह से शुरू करते हुए आपको शुद्ध कर सकता हूँ और आपके विचारों को शुद्धता के एक निश्चित स्तर तक पहुंचा सकता हूँ, हालांकि साधना करने के लिए थोड़ा सा बचा रहना चाहिए। यदि अधिक हटाया जाता है तो आप अभ्यास करने में सक्षम नहीं होंगे। आपको साधारण लोगों के बीच साधना करने में सक्षम बनाने के लिए, मैं आपके शरीर को आंतरिक सूक्ष्म स्तर से शुद्ध कर दूंगा। बाहरी सतह पर बहुत अधिक दिव्य शक्तियाँ प्रकट नहीं होंगी, और यह आपको उस स्थिति को बनाए रखने की अनुमति देगा जिससे आप साधारण लोगों के बीच साधना कर पाएंगे। मैं आपके शरीर के सबसे सूक्ष्म भाग को भीतर से बाहर तक शुद्ध कर दूंगा, जब तक कि चीजें पूरी तरह से सतह तक शुद्ध नहीं हो जातीं; जब आप बचे हुए अंतिम अंश को हटा देते हैं, तो आप फल पदवी प्राप्त कर लेंगे। सतही चीजें जो अभी तक हटी नहीं हैं, साधना के अंतिम चरण के लिए हैं। वे उद्देश्यपूर्ण रूप से आपके लिए छोड़े गए हैं और आपको उस स्थिति को बनाए रखने की अनुमति देते हैं जिससे आप साधारण लोगों के बीच साधना कर सकें। जब उस छोटे से अंश को हटाया जाएगा, तो आप वास्तव में साधारण लोगों के बीच नहीं रह पाएंगे, और मानवीय मामलों में आपकी कोई रुचि नहीं होगी। वह स्थिति उभरेगी। तो केवल अंतिम चरण में ही वह अंतिम अंश पूरी तरह से हटाया जाएगा।

यह सबसे अच्छा तरीका है। यह आपको साधारण लोगों के बीच साधना करने और उनके बीच सामान्य रूप से रहने की अनुमति दे सकता है। साथ ही, हालांकि, आपको अपने लिए कड़ी आवश्यकताएं निर्धारित करनी चाहिए, और आपके साधारण लोगों की तरह प्रबल मोहभाव नहीं हो सकते। चूंकि आप इस मार्ग पर चल रहे हैं और इस तरह से साधना कर रहे हैं, मैं आपको बता दूं कि: यदि कुछ समय के लिए आपके कुछ मानवीय-प्रकार के मोहभाव या विचार हैं, तो उन्हें बोझ ना बना दें, क्योंकि वे जानबूझकर आपके लिए छोड़े गए हैं। हमें एक और प्रवृत्ति के प्रति भी सावधान रहना होगा: कुछ लोग लगन से साधना ही नहीं कर रहे हैं, इसलिए जैसे ही वे मुझे यह कहते हुए सुनते हैं, जो मैंने अभी कहा है, [वे सोचेंगे,] "ओह, यह मेरे लिए छोड़ दिया गया है। तो मैं इसकी चिंता नहीं करूँगा।" वे स्वयं को व्यस्त रखते हैं, वे अपने मोहभावों को कम नहीं करते हैं, और वे अपने लिए कड़ी आवश्यकताएं निर्धारित नहीं करते हैं। ऐसा नहीं चलेगा, क्योंकि वह साधना नहीं है।

शिष्य: क्या हम शादी कर सकते हैं?

गुरु जी : मैंने आपके लिए ऐसे कारक छोड़े हैं जो आपको साधारण लोगों के बीच रहने में सक्षम बनाएंगे। मुझे आशा है कि हमारे शिष्यों में से आप जो युवा हैं, अभी भी परिवार बनायेंगे और व्यवसाय शुरू करेंगे। यदि भविष्य में पूरा संसार महान फा का अध्ययन करने के लिए आता है और कोई भी परिवार नहीं बनता है, तो मानव समाज समाप्त हो जाएगा और अस्तित्व में नहीं रहेगा। ऐसा नहीं चलेगा। साथ ही, युवाओं को वंश आगे बढ़ाना चाहिए, और आपको भविष्य की नई मानव जाति के लिए एक साधना पद्धति छोड़नी चाहिए।

शिष्य : फालुन दिव्यलोक कितना बड़ा है?

गुरु जी : फालुन दिव्यलोक अत्यंत विशाल है। (गुरु जी हंसते है) इसमें अनगिनत संवेदनशील प्राणी हैं, और असंख्य बुद्ध, बोधिसत्व और अरहत हैं।

शिष्य: फालुन गोंग *का अभ्यास शुरू करने के बाद क्या कोई व्यक्ति "बुद्ध अमिताभ" का जाप कर सकता है?*

गुरु जी : बुद्ध के नाम का जप करना साधना है, और बुद्ध अमिताभ का जप शुद्धावास बौद्ध धर्म के साधना मार्ग में साधना करना है। यदि *फालुन गोंग* का अभ्यास करते समय आप बुद्ध अमिताभ का भी जप करते हैं तो आप इसे अपने अभ्यास में मिला रहे हैं। मैं आपको यह नहीं कह रहा हूं कि आपको फालुन दाफा की ही साधना करनी चाहिए; यदि आप वास्तव में इसे नहीं छोड़ सकते हैं, तो बुद्ध अमिताभ का जाप करें, क्योंकि सिद्धांत आपको पहले ही बता दिया गया है। धर्म-विनाश काल समाप्त होने तक धर्मों में फल पदवी प्राप्त करना बहुत कठिन है। कुछ लोग कर्म को स्वर्ग ले जाने की बात करते हैं, लेकिन यह उतना सरल नहीं है जितना साधारण लोग सोचते हैं। लोगों को अपने विचारों की पर्याप्त रूप से साधना करनी होगी, और उनके प्राथमिक कर्म

को हटाना होगा, केवल थोड़ी से मोहभावों को छोड़कर, जिन्हें धीरे-धीरे हटाया जाना है। उस समय एक विशेष स्थिति उत्पन्न होगी, और तब ही कोई व्यक्ति कर्म को स्वर्ग में ले जा सकता है। यदि आप एक बेहद गंदे शरीर को बिल्कुल स्वच्छ स्वर्ग में ले जाते हैं, या बुद्ध के स्वर्ग में ले जाते हैं, तो वे आपको कहां रखेंगे? सही है?

शिष्य: जब मैं देर रात में व्यायाम करता हूं तो मुझे लगता है कि कोई असुर मुझे तंग कर रहा है। क्या ऐसा है कि हम आधी रात में व्यायाम नहीं कर सकते?

गुरु जी : यदि आप वास्तव में फालुन दाफा की साधना करते हैं और अपने अभ्यास में किसी अन्य चीज को नहीं मिलाते हैं, तो यह निश्चित है कि कोई भी चीज आपको हानि पहुंचाने का साहस नहीं करेगी। कभी-कभी एक नया शिष्य अपने अभ्यास में अन्य चीजों को मिला देता है, ऐसी स्थिति में आप यह नहीं कह सकते कि वह महान फा के मार्ग की साधना कर रहा है। यदि आप फा की आवश्यकताओं के अनुसार कार्य नहीं करते हैं, यदि आप केवल अभ्यास करते हैं, यदि आप वास्तव में साधना नहीं कर रहे हैं, तो यदि समस्याएँ उत्पन्न होती हैं तो मेरे लिए आपकी देखभाल करना सरल नहीं होगा—भले ही आप मेरा नाम पुकारो। आप कहेंगे, "गुरु जी, आप मेरी देखभाल क्यों नहीं करते?" लेकिन क्या आप महान फा की साधना कर रहे हैं? क्या आप मेरी आवश्यकताओं के अनुसार साधना कर रहे हैं? क्या यह ऐसा नहीं है? बुद्धत्व की साधना गंभीर है।

शिष्य: क्या ताई ची और फालुन गोंग दोनों का अभ्यास करना ठीक है?

गुरु जी : नहीं, यह ठीक नहीं है। ताई ची, शिंग यी, बा गुआ—इन मार्शल रूपों में भी *चीगोंग* उपस्थित है। लेकिन अन्य मार्शल आर्ट का अभ्यास कर सकते हैं, चाहे वह लॉन्ग फिस्ट हो, होंग-स्टाइल फिस्ट, सदर्न फिस्ट, शाओलिन, आदि—इनमें से कोई भी समस्या नहीं है। लेकिन *ताई ची* निश्चित रूप से *चीगोंग* है।

लोग आज नहीं जानते कि उन्हें *ताई ची* का उपयोग कैसे करना चाहिए। कुछ लोग *ताई ची* को अपने शरीर का व्यायाम करने के लिए *कैलिस्थेनिक्स* मानते हैं। वास्तव में, ताई ची के अंदर आंतरिक-बाह्य साधना की कई चीजें हैं। आजकल के लोग साधना करना नहीं जानते। ऐसा इसलिए है क्योंकि झांग सैनफेंग ने लोगों के लिए *ताई ची* के मुख्य-सिद्धांत को नहीं बताया, और केवल गतियों को सिखाया, और इस प्रकार जो लोग उसके बाद आए वे इसके द्वारा साधना नहीं कर सकते हैं। ऐसा मत सोचो कि *ताई ची* की गतियाँ कितनी धीमी हैं, क्योंकि उनकी शक्तियाँ सतह के आयाम पर नहीं हैं। इस मानवीय पक्ष में आपका हाथ, चाहे आप कितने भी तेज़ क्यों न हों, [*ताई ची* निपुण व्यक्ति के] हाथ जितना तेज़ नहीं हो सकता है। आप उसे बहुत धीरे-धीरे गति करते हुए देखते हैं, लेकिन वह दूसरे आयाम में गति करता है। यह उन प्राचीन कथाओं की तरह है जो आप सुनते हैं, जहां एक अमर प्राणी सामान्य रूप से चल रहा हो सकता है लेकिन जो उसके पीछे सवारी करते हुए आते हैं वे साथ में नहीं चल पाते। सामान्य लोगों को लगता है कि वह काफी धीमी गति से चल रहा है, लेकिन वास्तव में, वह अन्य समय-आयामों में चल रहा होता है।

लोग सोचते हैं कि वे मुक्का तेजी से मार सकते हैं, लेकिन वे कभी भी अन्य समय-आयामों की गति से मेल नहीं कर सकते हैं। यही कारण है कि भले ही आप देखते हैं कि *ताई ची* में वे अपनी मुट्ठी और हथेलियों को धीरे-धीरे बढ़ाते हैं, चाहे आपकी गति कितनी भी तेज क्यों न हो, आप उनकी तरह तेज नहीं हैं, क्योंकि वे आपसे बहुत पहले वहां पहुंच चुके होते हैं। बात केवल इतनी है कि आधुनिक लोग उस स्तर तक नहीं पहुंच पाते हैं। इसके अतिरिक्त, उनकी हथेलियों में अलौकिक क्षमताएं होती हैं, और मनुष्य उन क्षमताओं का सामना नहीं कर सकते। फिल्मों में मार्शल आर्ट बहुत अच्छे लगते हैं। तो ऐसा क्यों है कि वास्तविक जीवन में लोग अपने हाथों को हर तरफ घुमाते हुए, या अनियमित रूप से अपने पैरों को धरती पर मारते हुए या लात मारते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन आप अभी भी यह नहीं समझ पाते हैं कि मार्शल आर्ट की विशेष शक्तियाँ कहाँ से आएगी? उनकी गतियाँ मार्शल आर्ट की तरह क्यों नहीं दिखतीं? ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके पास कोई असाधारण क्षमता नहीं है। यदि उनमें कोई असाधारण क्षमता होती, तो लोगों के पास उनके प्रहार से बचने का कोई उपाय नहीं होता। यह काम नहीं करता है यदि वे अपेक्षित [अलौकिक] कौशल के बिना उन गतियों को करने

का प्रयत्न करते हैं। इसलिए आज लोगों का मार्शल आर्ट की महानता का प्रदर्शन नहीं कर पाने का कारण यह है कि उनके पास आंतरिक-बाह्य अलौकिक सिध्दियां नहीं हैं।

ताई ची एक व्यक्ति को अन्य आयामों में आने-जाने में सक्षम कर सकती है; यह स्वाभाविक रूप से साधना का भाग है, इसलिए इसे पूरी तरह से एक *चीगोंग* अभ्यास के रूप में गिना जाता है। केवल जब किसी व्यक्ति का शरीर अभ्यास करते हुए परिवर्तित होता है और उसके विचारों के स्तर में सुधार होता है, तभी उसका अभ्यास चीजों को उत्पन्न कर सकता है। मैं आपको बता दूं कि ताओ या ईश्वर के रूप को प्राप्त करने की साधना करना अतुलनीय रूप से पवित्र है। यह ऐसा नहीं है जैसे लोग इसकी कल्पना करते हैं। लोग अब इस वर्तमान युग की पतित धारणाओं का उपयोग यह कल्पना करने के लिए करते हैं कि प्राचीन लोग कैसे थे। प्राचीन लोग ऐसे नहीं थे।

शिष्य: जब फालुन घड़ी की दिशा और उसके विपरीत घूमता है तो क्या यह झुके हुए तरीके से या पीछे की ओर घूमेगा?

गुरु जी : हाँ, यह आपके शरीर को उसी के अनुसार व्यवस्थित करेगा जिस तरह से आपके शरीर को व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। यह आपके शरीर को ठीक से व्यवस्थित करने के लिए इस और उस दिशा में घुमता है। जब फालुन पहली बार किसी व्यक्ति के शरीर को व्यवस्थित कर रहा होता है, तो वह जिस तरह से भी आवश्यक हो, घूमेगा, और इसकी गति निश्चित नहीं होगी। एक बार शरीर को व्यवस्थित कर लेने के बाद, फालुन पेट के निचले भाग में स्थिर हो जाएगा। वहां यह नौ बार घड़ी की दिशा में घूमेगा, नौ बार विपरीत दिशा में घूमेगा, जो इसकी सामान्य स्थिति है।

शिष्य: जब मैं व्यायाम करता हूं तो मेरा बेटा इसका विरोध करता है।

गुरु जी : हाँ, कुछ लोगों की ऐसी स्थितियाँ होंगी जहाँ परिवार के सदस्य [अभ्यास] का विरोध करेंगे। हालाँकि, यह अभी भी आप पर निर्भर है। आखिरकार, जब कोई व्यक्ति साधना शुरू करता है तो उसकी परीक्षाएं होती हैं। तो शायद एक असुर आपके बेटे

का उपयोग आपके साथ हस्तक्षेप करने के लिए करेगा। यदि आप वास्तव में महान फा साधना में प्रवेश करते हैं, और आप वास्तव में साधना करने में सक्षम होते हैं, तो मैं इसे संभाल लूँगा। मैं देखूंगा कि जब आप हस्तक्षेप की स्थिति में होते हैं तो आपके विचार क्या हैं, और देखूंगा कि क्या आप अभी भी अभ्यास करना चाहते हैं, क्योंकि बुद्धत्व की साधना गंभीर है और यदि आपकी इच्छा दृढ़ नहीं है तो यह नहीं चलेगा।

शिष्य: ध्यान करते समय पूर्ण पद्मासन में बैठना सबसे अच्छा है, है ना?

गुरु जी : आवश्यकता अंततः पूर्ण पद्मासन प्राप्त करने की है। धीरे-धीरे इसका अभ्यास करें, और हर कोई पूर्ण-पद्मासन में बैठने में सक्षम होगा। चीन में अस्सी वर्ष से अधिक उम्र के वृद्ध धीरे-धीरे दोनों पैरों को मोड़ने में सक्षम हो गए हैं, इसलिए कोई समस्या नहीं होगी। जब तक आप अभ्यास करते हैं, आप धीरे-धीरे उन्हें मोड़ने में सक्षम हो जायेंगे। ऐसा नहीं है कि आप इसे एक दिन अचानक ही कर सकते हैं, और इसे बलपूर्वक करने से काम नहीं चलेगा। यदि आप कहते हैं कि आप अपने पैरों को अर्ध-पद्मासन की स्थिति में भी मोड़ नहीं सकते हैं, और आप अपने पैरों को एक दुसरे के ऊपर नहीं रख सकते हैं, तो आप भारतीय शैली में आराम से बैठ सकते हैं। यदि आप कहते हैं, "मैं भारतीय शैली में भी नहीं बैठ सकता," तो [अपने पैरों को] थोड़ा ऊपर उठाएं। जब आप बैठे रहने में सक्षम होते हैं, तो आपके पैर धीरे-धीरे नीचे होंगे—वे हर बार नीचे होंगे—और अंत में जब वे नीचे आ जाएंगे तो आप अर्ध-पद्मासन कर रहे होंगे। जब आप अर्ध-पद्मासन करते हैं तो आपके पैर बहुत ऊपर की ओर रहेंगे, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हर बार जब आप व्यायाम करते हैं तो आप पाएंगे कि आपके पैर कुछ नीचे हो रहे हैं, और हर बार ऐसा ही होगा। जब वे पूरी तरह से नीचे आ जाएं, और जब अर्ध-पद्मासन में आपके दोनों पैर पूरी तरह से सपाट होने के मानक को पूरा कर लें, तो आपको पूर्ण-पद्मासन में जाना होगा। जब तक आपके पैर सपाट हैं और आप अपना दूसरा पैर उठाकर ऊपर रख सकते हैं, यह पूर्ण-पद्मासन की स्थिति होगी।

शिष्य: आप क्यों कहते हैं कि मिश्रित जातियों वाले बच्चे दयनीय होते हैं? एक व्यक्ति इस जीवन में एक चीनी व्यक्ति हो सकता है, और फिर अगले में एक विदेशी हो सकता है, और पृथ्वी पर सभी प्रकार की जातियां और मुख्य आत्माएं हैं।

गुरु जी : पुनर्जन्म की प्रक्रिया में मुख्य आत्मा ही पुनर्जन्म लेती है, जबकि मिश्रित जाती केवल मांस शरीर है। अलग-अलग दिव्य प्राणियों ने अपने अलग-अलग लोगों का निर्माण किया, और इतिहास में वे दिव्य प्राणी हमेशा से उन लोगों की देखभाल करते रहे हैं जिन्हें उन्होंने स्वयं बनाया है। गोरे लोग गोरे लोग हैं, काले लोग काले लोग हैं, और पीली जाति के लोग पीली जाति के लोग हैं। संसार में हर एक जातीयता ऐसी जाती है जो स्वर्ग से मेल खाती है। जाती मिश्रित करने के बाद लोगों का स्वर्ग में दिव्य प्राणियों से कोई संबंध नहीं रह जाता है। और फिर यह संभव है कि मनुष्यों को बनाने वाला कोई भी दिव्य प्राणी उनकी देखभाल नहीं करेगा। फिर इन लोगों की बात करें तो वे बहुत दयनीय हैं। ऐसे में कुछ लोग सोच रहे होंगे कि क्या करें। मैं आपको बता दूं कि आप चिंता ना करें। मैं मनुष्य के सतह की स्थिति के बारे में बात कर रहा हूं। चूंकि मनुष्य की मुख्य आत्माएं मिश्रित नहीं हैं, यदि लोग साधना करना चाहते हैं तो मैं उन्हें साधना करने में सक्षम कर सकता हूं। यदि आप अंतिम चरण तक साधना कर सकते हैं तो आप भी फल पदवी प्राप्त कर सकते हैं, और कोई भेदभाव नहीं होगा। साधना करने में कोई समस्या नहीं होगी।

यदि एक साधारण व्यक्ति उस परिस्थिति में है [जिसकी हमने अभी चर्चा की] तो वह बहुत ही दयनीय जीवन व्यतीत करेगा। ऊपर के दिव्य प्राणी उस क्षेत्र पर ध्यान नहीं देंगे जहाँ मिश्रित जातियों की सघनता है, इसलिए साधारणतः ऐसे क्षेत्र के लोग दरिद्र होते हैं और उनका जीवन कठिन होता है।

शिष्य: विदेशों में पढ़ने वाले चीनी बच्चे पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करते हैं। यदि साधना में वे जुआन फालुन *को समझने के लिए विदेशी भाषाओं का उपयोग करते हैं, तो क्या वे उस स्वर्ग में जा सकते हैं जो पीली जाति के लोगों के अनुरूप है?*

गुरु जी : मुख्य आत्मा जहां से थी, वहां जाएगी, इसलिए मानव शरीर की सतह निर्धारण कारक नहीं है। यदि वे अच्छी तरह से साधना करते हैं तो वे फल पदवी प्राप्त कर लेंगे। चीनी भाषा में सतही अर्थों को समझना उनके लिए कठिन होगा [यदि वे पश्चिम में रहने के बाद चीनी संस्करण का अध्ययन करने का प्रयत्न करते हैं], और इस सतही अंतर का हल नहीं हो सकता है। लेकिन साधना में, आंतरिक अर्थ जो मानव जाति से परे हैं वे प्रभावित नहीं होंगे।

शिष्य: मानव मस्तिष्क बहुत विकसित है। पशु मानवों को नियंत्रित करने में सक्षम क्यों हैं?

गुरु जी : मानव मस्तिष्क बिल्कुल भी विकसित नहीं है। केवल मनुष्य ही इसे विकसित के रूप में देखते हैं। इसके अतिरिक्त, मनुष्य स्वयं जानते हैं कि मानव मस्तिष्क का सत्तर प्रतिशत से अधिक अप्रयुक्त है। वास्तव में, [उन भागों] को उच्चतर प्राणियों द्वारा बंद कर दिया गया है। जैसे ही कोई जीव, चाहे वह किसी भी प्रकार का हो, बुद्धि प्राप्त करता है, वह जिस स्तर पर होता है उस स्तर से ऊपर चला जाता है और फिर अन्य जीवों पर अधिकार कर सकता है। हालांकि स्वर्ग के सिद्धांत [ऐसी शक्तियों का उपयोग करने जीवों] को बर्दाश्त साथ नहीं करेंगे, जब मनुष्य बुरे काम करते हैं और उन चीजों के साथ जाते हैं, तो यह वैसा ही है जैसे मनुष्य स्वयं [उन चीजों को] खोजकर आमंत्रित करते हैं। वे इस स्थिति का लाभ उठाते हैं और इस प्रकार मनुष्यों को नियंत्रित कर सकते हैं।

शिष्य: गोंग *और फा के बीच के संबंध को कैसे समझा जाना चाहिए?* फालुन गोंग *में सुधार का फा-सिद्धांतों से क्या संबंध है?*

गुरु जी : मैंने *ज़ुआन फालुन* में इन बातों के बारे में पहले ही बहुत स्पष्ट रूप से बात की है। यदि हम इसके बारे में बात करें, तो यह बहुत विशाल है, इसलिए मैं थोड़ा ही बताऊंगा। सैद्धान्तिक वाद-विवाद में सम्मिलित लोग हमेशा से इस बात पर विवाद करते रहे हैं कि क्या पहले है, पदार्थ या मन; उनके बीच हमेशा से वैचारिक तर्क रहे हैं।

मैं आप सभी को बता दूं कि पदार्थ और मन एक ही हैं। *गोंग* फा है, और फा *गोंग* है, क्योंकि मन ही पदार्थ है। साधकों के नैतिक गुण के सुधार के लिए एक मानक है; यह एक मापने वाली छड़ी का रूप ले लेता है। जब नैतिक गुण ऊपर जाता है, तो *गोंग* भी ऊपर जाता है। *गोंग* आपके सिर के ऊपर एक *गोंग* स्तंभ बनाता है, और *गोंग* स्तंभ के किनारे पर निशान चिह्नित हैं। यही वह मानक है जो किसी व्यक्ति के नैतिक गुण की ऊंचाई को दर्शाता है। जैसे-जैसे नैतिक गुण में सुधार होता है, मापने की छड़ी लंबी होती जाती है; और जैसे-जैसे यह ऊपर की ओर बढ़ती है, *गोंग* ऊपर की ओर बढ़ता है। और *गोंग* का विकास अत्यंत तीव्र गति से होता है। यह इस पर निर्भर करता है कि आपका नैतिक गुण बढ़ता है या नहीं। यदि नैतिक गुण बढ़ता है, तो *गोंग* ऊपर जाता है। इसलिए यह सिद्धांत कि *गोंग* नैतिक गुण जितना ऊंचा है, यह एक परम सत्य है। हर पद्धति में ऐसा है; यह केवल इतना है कि निम्न पद्धतियाँ इसे नहीं समझती हैं, बस इतना ही।

पश्चिमी धर्म *गोंग* के बारे में बात नहीं करते हैं। जब बुद्ध शाक्यमुनि ने फा का प्रसार किया तो उन्होंने भी *गोंग* के बारे में भी बात नहीं की; केवल दाओवाद *गोंग* के बारे में बात करता है। जिन चीजों के विषय में मैं बात करता हूं उनमें बुद्ध, ताओ और देवताओं की सभी चीजें सम्मिलित हैं, और सभी दिव्य प्राणी और फा ब्रह्मांड के मौलिक फा के ज्ञानप्राप्ति के माध्यम से सामने आए हैं। फा पर व्याख्यान देते समय मैं आपको समझाने का पूरा प्रयत्न करता हूं; मैं उन शब्दों का उपयोग करता हूं जो आपको समझने में सक्षम बनाती हैं। कुछ लोग कहते हैं कि पश्चिमी धर्म साधना नहीं हैं और यह कि पूर्व का धार्मिक ध्यान साधना है। क्या पश्चिमी [धर्म] साधना नहीं हैं? पश्चिमी धर्म भी साधना कर रहे हैं। यीशु ने कहा कि यदि आपको उन पर आस्था है, तो आप दिव्यलोक में प्रवेश कर सकते हैं। उनका यह कहने का क्या अर्थ था? यीशु ने हमेशा सतही चीजों के बारे में बात की और लोगों को बताया कि कैसे आचरण करना है। यह पश्चिमी संस्कृति की तरह है; वे आंतरिक अर्थ नहीं बताते हैं, और जब तक आप [उचित] कार्य करते हैं वही ठीक है। लोग आज नहीं जानते कि यीशु ने किस "आस्था" के बारे में बात की थी। यीशु ने कहा कि यदि आपको उन पर आस्था है तो आप दिव्यलोक में प्रवेश कर सकते हैं। वास्तव में, जहाँ तक आस्था की बात है, केवल यीशु ने जो कहा है उसके अनुसार कार्य करना ही सच्ची आस्था है। यदि आप यीशु के कहे अनुसार कार्य नहीं करते हैं, तो क्या

वह सच्ची आस्था है? यदि कोई व्यक्ति चर्च जाता है और भोजन से पहले "आमेन" कहता है, लेकिन जैसे ही वह बाहर संसार में जाता है तो वह हमेशा बुरे काम करता है, क्या इसे यीशु पर आस्था रखना कहा जा सकता है? क्या यीशु ने जिस बारे में बात की थी वह केवल एक वाक्य तक सीमित थी—"मुझ पर आस्था रखो और आप दिव्यलोक में प्रवेश कर सकते हो?" यीशु ने आपका आचरण उचित करने के लिए इतने सारे सिद्धांतों पर चर्चा क्यों की? यदि आप उनके कहे अनुसार कार्य करते हैं, तो आप दिव्यलोक में प्रवेश कर सकते हैं। क्या इसका अर्थ यह नहीं है? आस्था एक व्यापक शब्द है। यदि आप स्वयं की साधना नहीं करते या स्वयं में सुधार नहीं करते हैं तो क्या आप दिव्यलोक में प्रवेश कर सकते हैं? अवश्य ही, शायद आप हमेशा ही चर्च जाते होंगे। लेकिन क्या आप केवल भगवान के नाम का जाप करने के कारण ही भगवान में आस्था रखते हैं? क्या आप केवल दिव्यलोक में प्रवेश करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं? ऐसा नहीं चलेगा।

फिर पाप-स्वीकृति का उद्देश्य क्या है? पाप-स्वीकृति तब होती है जब कोई व्यक्ति जानता है कि उसने भूल की है और सुधरना चाहता है। इसका कोई मूल्य नहीं होता जब कोई व्यक्ति पाप-स्वीकृति करते हुए फिर वही अनुचित करता है। मान लीजिये आज आपने एक व्यक्ति को मार डाला, [और आप कहते हैं] "कृपया मुझे क्षमा करें," और फिर आप कल एक और को मारते हैं और फिर स्वीकार करते हैं और क्षमा मांगते हैं। आपको कौन क्षमा करेगा? आप समझ सकते हैं, है ना? आपको अनुचित काम करना बंद कर देना चाहिए और उन कृत्यों को दोबारा न करने का संकल्प लेना चाहिए, और वास्तव में उन्हें दोबारा नहीं करना चाहिए। जब आपको पता चलता है कि आपके मन में एक बुरा विचार है, तो पाप-स्वीकृति करते समय आप यीशु से कहेंगे: "मसीह यीशु, मुझे बचाओ, क्योंकि मेरे मन में बुरे विचार हैं।" फिर यदि आप अपने दैनिक जीवन में अपना आचरण बेहतर ढंग से करते हैं, तो क्या आप मानव नैतिक गुण में सुधार नहीं कर रहे हैं? क्या यह आप अपनी साधना नहीं कर रहे है? यीशु ने *गोंग* के बारे में बात नहीं की क्योंकि "साधना स्वयं पर निर्भर करती है जबकि *गोंग* गुरु पर निर्भर करता है।" मैं चाहता हूं कि आपके शरीर साधना में सफल हों और उन्हें परिवर्तित कर दिया जाये, इसलिए मैं *गोंग* पर जोर देता हूं। यीशु ने *गोंग* के बारे में बात नहीं की क्योंकि आपको इसके बारे में जानने की आवश्यकता नहीं थी। आपने केवल अपने मन

की साधना करने पर ध्यान केंद्रित करना है, और *गोंग* की देखभाल यीशु द्वारा की जाएगी, इसलिए यीशु ने *गोंग* के बारे में बात नहीं की। मनुष्य के बुरे विचारों और व्यवहारों को दूर करना ही साधना है। जैसे-जैसे आपके स्तर में सुधार होगा, गुरु अपनी भूमिका निभाएंगे और आपके लिए *गोंग* विकसित करेंगे। यह ऐसा ही है।

शिष्य: बुद्ध शाक्यमुनि करोड़ों वर्ष पहले साधना में सफल हुए थे। फिर भी सभी जीवन जन्म के समय जेन-शान-रेन में आत्मसात नहीं होते हैं। तो फिर यह कैसे हो सकता है कि कोई साधना में सफल हो?

गुरु जी : दिव्यलोक के सभी संवेदनशील प्राणियों को फल पदवी प्राप्त नहीं है, और दिव्यलोक में सभी संवेदनशील प्राणी बुद्ध नहीं हैं। सभी जीव ब्रह्मांड के महान फा द्वारा बनाए गए हैं, और ब्रह्मांड में महान फा द्वारा निर्मित हैं, लेकिन यह साधना में सफल होने के बराबर नहीं है। साधना में सफल होने का अर्थ है अपनी स्वयं की फल पदवी को मान्य करना और ज्ञानप्राप्ति पाना। शाक्यमुनि बुद्ध हैं, और एक बहुत अच्छे बुद्ध हैं। लेकिन मैं यहाँ बौद्ध धर्म की शिक्षा नहीं दे रहा हूँ, और आपने वास्तव में इस फा को नहीं समझा है। मैं आप सभी को बता दूं कि जेन-शान-रेन पूरे ब्रह्मांड का फा-सत्य हैं, वे मूल तत्व हैं जिन्होंने पूरे ब्रह्मांड का सृजन किया है, और मूल तत्व हैं जिन्होंने ब्रह्मांड के सृजन क्रम में सभी सबसे प्राचीन देवताओं और सभी दिव्य प्राणियों को बनाया है। निश्चित रूप से बुद्ध शाक्यमुनि उनमें से थे। ब्रह्मांड में गठन, ठहराव, अध: पतन और विनाश की एक प्रक्रिया भी है। बुद्ध शाक्यमुनि सबसे प्राचीन देवता नहीं थे। ब्रह्मांड में सभी बुद्धिमान जीवन अध: पतन और विनाश की ओर बढ़ते हैं। तीन लोकों के निकट के संवेदनशील प्राणी, अपने अगले जन्मों में, पुन: साधना कर सकते हैं। यह इन सीमाओं के भीतर प्राणियों के साथ प्रयोग की जाने वाली शुद्धिकरण की एक प्रणाली है। शाक्यमुनि ने जिन सिद्धांतों के बारे में बात की, वे तथागत के सिद्धांत थे, जिन्हें उन्होंने जेन-शान-रेन से उस स्तर पर मान्य और ज्ञानप्राप्त किया था। तथागतों में से कोई भी ब्रह्मांड के सच्चे और मूल सिद्धांतों की व्याख्या नहीं करते हैं, क्योंकि ब्रह्मांड का मूल महान फा ब्रह्मांड और इसके भीतर रहने वाले जीवों से ऊपर है। देवता केवल अपने ही स्तर तक अपनी समझ को मान्य और ज्ञानप्राप्त कर सकते हैं। ये उनकी साधना के

तरीके हैं, और विभिन्न देवता लोगों को उनके नीचे के संवेदनशील प्राणियों में परिवर्तित करके ही उन्हें बचा सकते हैं। फिर भी महान फा मूल महान ताओ है; साधना में यह सबसे तेज और सबसे सरल [विधि] है, और इसमें बहुत सी चीजें नहीं हैं जिनके बारे में अभ्यासियों को विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। फा एक पिरामिड की तरह है; किनारों पर यह बहुत निम्न है, और किसी निश्चित स्तर पर भगवान की समझ जितनी ऊंची होती है, उसी स्तर तक बचाए गए लोग फल पदवी प्राप्त कर सकते हैं। एक तथागत एक निश्चित स्तर पर फल पदवी प्राप्त करते हैं, इसलिए उन्होनें यहीं तक मान्य और ज्ञानप्राप्त किया है; और शिष्यों का स्तर बढ़ाते समय, तथागत केवल अपने स्वयं की पद्धतियों की बातों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। प्रत्येक बुद्ध की ज्ञानप्राप्ति भिन्न है, और प्रत्येक बुद्ध जेन-शान-रेन महान फा के फा-सत्यों से ब्रह्मांड के जेन-शान-रेन मूल महान फा से समझ प्राप्त करते हैं। और भी ऊंचे स्तर पर देवताओं और बुद्धों द्वारा प्रबल किये जाने पर, और सच्ची साधना और सच्चे ज्ञानोदय के साथ, जितना भी वह समझ पाते हैं और जितना भी वह अपनी साधना द्वारा जान पाते हैं, और फिर वह फा के उस स्तर तक आत्मसात किये जाते हैं।

शिष्य : ध्यान करते समय मेरा सिर गुरु जी के फा-चित्र की ओर क्यों मुड़ जाता है?

गुरु जी : ऐसा है कि आपका जागरूक पक्ष मुझे देख रहा है। कभी-कभी मेरा फा-शरीर आपको संकेत देगा। जब यह संकेत देता है तो यह विभिन्न तरीकों का उपयोग करता है। यदि आप जानना चाहते हैं कि कुछ अच्छी तरह किया गया है या नहीं, या उचित ढंग से किया गया है, तो पुस्तक में मेरे चित्र या मेरे अन्य चित्रों को देखें। चाहे आपका दिव्य नेत्र खुला हो या नहीं, यदि आपने अनुचित काम किया है, तो मैं बहुत गंभीर दिखूंगा; यदि आपने उचित काम किया, तो मैं मुस्कुराऊंगा। *(तालियाँ)*

शिष्य: जब गुरु जी फा पर उपदेश दे रहे होते हैं तो मुझे लगता है कि यह बहुत उचित और अच्छा है। कभी-कभी मुझे लगता है कि यह सीधे मेरे मन को छु रहे हैं। लेकिन

जब मैं बाद में याद करने का प्रयत्न करता हूं कि गुरु जी ने इसके बारे में क्या कहा था, तो ऐसा लगता है कि मुझे कुछ भी पूरी तरह से याद नहीं है। मुझे क्या करना चाहिए?

गुरु जी : जब लोग मुझे फा पर व्याख्यान देते हुए सुनते हैं, तो वास्तव में सभी की इस तरह की स्थितियां होंगी। मैंने बहुत सा फा सिखाया है, और आपके लिए यह सब स्पष्ट रूप से याद रखना संभव नहीं है। चिंता ना करें। हर बार जब आप अपनी साधना में समस्याओं का सामना करते हैं, यदि आप स्वयं को एक साधक मान सकते हैं और चीजों से सही ढंग से निपट सकते हैं, तो आप मेरे द्वारा बोले गए शब्दों को याद रखने में सक्षम होंगे। ऐसा होना निश्चित है। लेकिन यदि उस समय आप इस हद तक क्रोधित हो जाते हैं कि आपको चक्कर आ जाते हैं और आप शांत नहीं रह सकते हैं, तो आप उनके बारे में नहीं सोच पाएंगे, और यह सिद्ध करता है कि आपकी साधना ठोस नहीं है। लेकिन साधारण तौर पर आपको वह फा याद आ जायेगा जो मैंने सिखाया है। यदि कोई व्यक्ति साधना नहीं करता है तो वह मेरे द्वारा सिखाये गए फा को हमेशा याद रखने में असमर्थ रहेगा। मैंने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि यह फा साधारण लोगों के सुनने के लिए नहीं कहा जा रहा है। यहाँ बैठे सभी का पूर्व निर्धारित सम्बन्ध है। अन्यथा, आप अंदर नहीं आ पाते।

शिष्य: यदि मैं छोड़ दिए गए, छोटे पशुओं को अपनाता हूँ, तो क्या इससे कर्म पैदा होंगे?

गुरु जी : इससे वास्तव में कर्म उत्पन्न नहीं होंगे। एक साधारण व्यक्ति के रूप में यह एक अच्छा काम करना है, लेकिन अतीत में बौद्ध धर्म ने हत्या न करने और पशुओं को न पालने की बात की थी। और पशुओं को न मारने और न पालने के भी कारण हैं। जहाँ तक "हत्या नहीं" करने का प्रश्न है, साधक इस पर पूरी तरह से स्पष्ट हैं। "उन्हें नहीं पालने" के दो कारण हैं। एक यह है कि जब [एक व्यक्ति] साधना करता है तो पशु के लिए असंख्य शक्तियां *(लिंग)* प्राप्त करना सरल हो जाता है। यह संभव है कि जब वे असंख्य शक्तियां प्राप्त कर लेंगे तो वे बहुत अनुचित करेंगे। चीन में "आत्मा बनने" के बारे में एक पुरानी कहावत है। पशुओं को साधना करने की अनुमति नहीं है। एक और बात यह है कि इन चीजों को बहुत संभालकर पालना पड़ता है। यह ध्यान भंग करने

वाला होगा, और इसके बारे में सोचना एक मोहभाव है और साधना को प्रभावित करेगा। निःसंदेह, साधकों के लिए पशुओं से लगाव रखना एक मोहभाव है।

मैं आप सभी को एक कथा सुनाता हूँ। आप जानते हैं, ब्राह्मणवाद का शाक्यमुनि ने सबसे अधिक विरोध किया था। उनका मानना था कि यह एक ऐसा धर्म था जो बुरा बन गया था, और यह शाक्यमुनि के बौद्ध धर्म के विरोध में स्थापित किया गया था। वास्तव में, मैं आपको बता सकता हूं कि शाक्यमुनि ने जिस चीज का विरोध किया वह ब्राह्मणवाद था न कि ब्राह्मणवाद के दिव्य प्राणी। ब्राह्मणवाद के आरंभिक काल में लोगों की आस्था बुद्धों में थी, शाक्यमुनि से भी पहले के बुद्धों में। लेकिन एक लंबे समय की अवधि में, लोगों ने बुद्धों में अपना उचित विश्वास त्याग दिया और धर्म को बुराई में बदल दिया, यहां तक कि बुद्धों के लिए हत्या को धार्मिक बलिदान के रूप में उपयोग किया गया। अंत में, जिन दिव्य प्राणियों में वे विश्वास करते थे, उसमें बुद्ध का स्वरुप नहीं था; वे दुष्ट आत्माओं और असुरों की तरह दिखने वाले दैत्यों में विश्वास करने लगे। मनुष्य ने धर्म को बुरा बना दिया। आपको पता है, यदि बौद्ध धर्म इस तरह विकसित होता, तो उनके अनुयायी शाक्यमुनि को भी नहीं पहचानते। तो सभी इसके बारे में सोचें: कई वर्ष बीत जाने के बाद, क्या साधक अतीत के उस समय के उस धर्म को पीछे मुड़कर देखेंगे और बुरा नहीं मानेंगे? यह ऐसा ही है। मनुष्य ही धर्मों को बुरा बनाते हैं, क्योंकि दिव्य प्राणी किसी भी तरह से बुरे नहीं होते।

बहुत पहले, भारत में ब्राह्मणवाद का एक शिष्य साधना कर रहा था। वह साधना में काफी परिश्रमी था और वह पहाड़ों में एकांत में साधना करता था। एक दिन एक शिकारी ने एक हिरण को [तीर] मारकर घायल कर दिया। यह हिरण भाग गया [जहां साधक था], और उसने हिरन की रक्षा करते हुए उसे छिपा दिया। पहाड़ों में एकांत में रहते हुए, वह बहुत अकेला था, इसलिए उसने हिरण की देखभाल करनी शुरू कर दी। मनुष्य, यदि ध्यान नहीं देते हैं, तो वे मोहभाव उत्पन्न कर सकते हैं, और वास्तव में दया और मोहभाव की मानवीय भावनाएं दोनों ही नन्हे हिरण पर उंडेलने लगा। समय के साथ उसे हिरण से बहुत लगाव हो गया और अंततः हिरण उसका सबसे निकटतम साथी बन गया। परिणामस्वरूप, उसने अपनी सारी ऊर्जा हिरण में लगा दी, और जब भी उसने ध्यान लगाया तो उसका मन शांत नहीं हो सका; वह यही सोच रहा था कि हिरण को क्या खिलाऊं। उसके आगे बढ़ने का अपना संकल्प कम हो गया।

कुछ वर्षों बाद, एक दिन अचानक हिरण की मृत्यु हो गई, और उसे बहुत पीड़ा हुई। वह हमेशा हिरण के बारे में सोचता था, और उसके प्रगति की ओर परिश्रम करने में कमी आ गयी। इस समय तक वह वृद्ध हो चुका था, और यदि आप एक साधक नहीं हैं, तो आपका जीवन बढ़ाया नहीं जा सकता। वह अब साधना नहीं कर सका और उसका जीवन समाप्त हो गया। जब उसके जीवन का अंत हुआ तो उसने बुद्ध फा के बारे में नहीं सोचा; वह अभी भी हिरण के बारे में सोच रहा था, और इस कारण, मरने के बाद, उसने हिरण के रूप में पुनर्जन्म लिया। जब कोई व्यक्ति अपनी मृत्यु शय्या पर होता है, तो उसका जिस किसी चीज से मोहभाव होता है और जिसके बारे में सोच रहा होता है, उसका पुनर्जन्म उसी रूप में हो सकता है, इसलिए एक क्षण में उसने एक हिरण में पुनर्जन्म ले लिया। कितने दुःख की बात है। एक साधक—जिसने काफी अच्छी तरह से साधना की थी—अंत के उस क्षण में बर्बाद हो गया। साधकों के लिए यह सबसे अच्छा है कि वे पशुओं से मोहभाव न रखें।

शिष्य: हद से ज्यादा धकेले जाने पर मैं दूसरों के साथ धैर्य नहीं रख पाता। क्या किया जाए?

गुरु जी : आप अभी भी धैर्य रखने में असफल हो रहे हैं? यदि आप सह नहीं सकते तो भी आपको सहना होगा। एक साधक के रूप में आपको करुणामयी होना चाहिए! अभी मैंने कहा है कि यदि आप अपने शत्रु से प्रेम नहीं कर सकते तो आप साधना में सफल नहीं हो सकते, और आप बुद्ध नहीं बन सकते। इसके बारे में सोचें, जब कोई आपके साथ बुरा कर रहा है तो क्या आप उसके प्रति अतीत से ऋणी नहीं हैं? यदि आप उसे नहीं चुकाते तो क्या यह ठीक है? आपने उस समय जो कुछ उस पर थोपा था, वह शायद इससे भी अधिक बुरा था जो वह अब आपके साथ व्यवहार कर रहा है, और आपने दूसरों के लिए जो पीड़ा उत्पन्न की थी, वह शायद इससे भी अधिक थी! जब साधना में संघर्ष आते हैं तो उनकी अभिव्यक्तियाँ बहुत ही असंबंधित लगती हैं, और कोई आपको क्रोधित कर सकता है, लेकिन उस समय, आपने—अत्यधिक अनियमित तरीके से—इसी तरह उस व्यक्ति को क्रोधित किया था। ऐसा कब होता है कि कुछ होने से पहले आपको इसकी भविष्यवाणी कर दी जाती है? [कोई भी आपको नहीं

बताएगा,] "अच्छा, पिछले जन्म में आपने मुझे क्रोधित किया था, इसलिए इस जीवन में मैं आपको क्रोधित करने जा रहा हूं।" ऐसी नहीं हो सकता है। कई चीजें असंबंधित प्रतीत होती हैं, लेकिन उनमें से कोई भी नहीं है।

हो सकता है कि आपने पहले कभी उस तरह की परिस्थिति का सामना न किया हो, लेकिन अब आप एक साधक हैं, और इसलिए आपके सुधार के लिए ऐसी परिस्थितियों को आपके लिए बनाना होगा। यदि आपको ये कठिनाईयां नहीं होती हैं, तो यह नहीं चलेगा, और मैं इन कठिनाईयों का उपयोग आपके नैतिक गुण को सुधारने के लिए करूँगा। जैसे-जैसे आपके नैतिक गुण में सुधार होता है आपका *गोंग* बढ़ता है, [चूंकि] आपके नैतिक गुण में सुधार हुआ है। जो कोई भी आपके लिए कठिनाई का कारण बनता है वह उसी समय आपको पुण्य देगा। जब आप पीड़ित होते हैं तो आपका अपना कर्म भी पुण्य में परिवर्तित हो जाता है। आपको एक झटके में चार चीजें प्राप्त होंगी, इसलिए आपको वास्तव में दूसरे व्यक्ति के प्रति आभारी होना चाहिए। यदि आप अभी भी दूसरे व्यक्ति से घृणा करते हैं या उसके प्रति धैर्य नहीं रख सकते हैं, तो यह उचित नहीं है। कुछ लोग यह भी सोचते हैं, "गुरु जी ने मुझे सहन करने के लिए कहा था, इसलिए मैं इसे अपने भीतर ही रखूँगा।" थोड़ी देर बाद आप कहते हैं, "गुरु जी, मैंने इसे इस हद तक दबा रखा था कि यह बहुत दुखदायी हो गया था।" मैं कहूँगा कि यह सहनशीलता नहीं है। सच्चा साधक कभी क्रोधित नहीं होता। बात कितनी भी बड़ी क्यों न हो, उसपर कोई प्रभाव नहीं होगा। पीड़ा होने तक चीजों को अपने भीतर दबाये क्यों रखना है? साधक को ऐसा ही होना चाहिए। कुछ लोग अपनी प्रतिष्ठा के लिए सहन करते हैं, और वह भी सच्ची सहनशीलता नहीं है। लेकिन क्योंकि आपने साधना शुरू की है, यदि आप अब भी ऐसा नहीं कर सकते हैं, तो आपको वास्तव में इसे दबाये रखना होगा।

शिष्य: कई महान चीगोंग गुरु युवा गुरु हैं, और कई मार्गों के गुरु अपनी पद्धतियों का प्रसार कर रहे हैं।

गुरु जी : तथ्य यह है कि ब्रह्मांडीय परिस्थितीयों के कारण बहुत से लोग पद्धतियों का प्रसार कर रहे हैं, और इसका एक कारण है। लेकिन मैं आपको बता दूं कि कई "*चीगोंग*

गुरु" स्व-घोषित हैं। वे वास्तव में *चीगोंग गुरु* नहीं हैं; वे पाखंडी हैं। बहुत से लोग पशुओं से ग्रस्त और अन्य बुरी चीजों से प्रेरित होते हैं। और बहुत से गुरु सांसारिक और लघु मार्गों का प्रसार कर रहे हैं, और वे जो बता रहे हैं, वह उस स्तर के सत्य हैं। इनके अतिरिक्त, पहाड़ों में साधना करने वाले लोग भी हैं। जिन लोगों से मेरा परिचय हुआ है, उनमें से कुछ ने चार हजार से अधिक वर्षों से साधना की है। उन्होंने इतने लंबे समय तक साधना क्यों की? ऐसा नहीं है कि उनका स्तर काफी ऊंचा नहीं है और वे स्वर्ग तक नहीं जा सकते, क्योंकि उनमें से कुछ ने तीन लोकों को कब का पार कर लिया है; बल्कि, यह है कि वे ऊपर नहीं जा सकते। ऐसा है कि उन्हें ऊपर जाने की अनुमति नहीं है, क्योंकि कोई स्वर्ग नहीं है जो उन्हें स्वीकार करेगा। वे *गोंग* को बढ़ाने में सक्षम क्यों हैं? यह भी इस स्तर के फा-सत्यों द्वारा निर्णय किया जाता है। फिर भी वे सांसारिक और लघु मार्ग भिन्न हैं; उनमें से कुछ मनुष्यों द्वारा बनाए गए थे। शुरुआत में ऐसा व्यक्ति केवल एक साधना तरीके से साधना करता था, या ताओ विचारधारा या बुद्ध विचारधारा की साधना करता था। कुछ समय तक साधना करने के बाद उसे लगा कि यह बहुत अच्छा है, लेकिन एक अन्य व्यक्ति उसे खोजने आया, [कहा कि] "आओ और इसकी साधना करो।" इसके बाद वह इसका अध्ययन करने चला गया। तो उसका *गोंग* मिश्रित हो गया। पहले तो ऊपर एक गुरु थे जो उसकी देखभाल कर रहे थे, लेकिन जैसे ही ऊपर के गुरु ने देखा कि वह ऐसा हो गया है, तो गुरु अब उसे नहीं अपनाना चाहते थे। क्योंकि ऊपर वालों ने अब उसे स्वीकार नहीं किया, वह अब तीन लोकों को नहीं छोड़ सकता था। तीन लोकों के बाहर वालों को उनमें प्रवेश करने की अनुमति नहीं है, और न ही तीन लोकों के भीतर वाले उन्हें छोड़ सकते हैं। आप चाहे कितनी भी ऊँचाई तक साधना कर लें, यदि कोई ऊपर वाला आपको ग्रहण नहीं करता है, तो आप नहीं जा सकते—उस व्यक्ति ने साधना में चीजों को मिश्रित कर दिया और उसके *गोंग* में गड़बड़ी हो गयी, इसलिए वह तीन लोकों के भीतर ही रहता है। यह एक कारण है कि जो लोग सांसारिक और छोटे-मोटे तरीकों से साधना करते हैं, वे सच्ची फल पदवी को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इसलिए मैंने कहा है कि दो साधना पद्धतियों का अभ्यास नहीं करना एक अत्यंत गंभीर मामला है।

कुछ लोगों ने पुस्तकें पढ़ी हैं और कहते हैं: "गुरु जी, क्या ताओ मार्ग के गुरुओं और बुद्ध मार्ग के गुरुओं ने आप तक चीजें प्रेषित नहीं की हैं?" मैं आप सभी को बता दूं कि

मैं जो कर रहा हूं वह भिन्न है; मैं ब्रह्मांड के नियम सिखा रहा हूं। मैं केवल बुद्ध मार्ग का फा नहीं सिखा रहा हूँ, न ही मैं केवल ताओ मार्ग का फा सिखा रहा हूँ, न ही मैं विशेष रूप से एक विशिष्ट साधना मार्ग की शिक्षा दे रहा हूँ; मैं ब्रह्मांड के मूल महान फा का प्रसार कर रहा हूं, और इसलिए मैं बार-बार महान फा, महान फा कहता हूं। यह ब्रह्मांड का मूल नियम है। ब्रह्मांड के सभी साधना के मार्ग इसमें समाहित हैं। मैं आपको यह भी बता दूं कि इस संसार में मेरे जितने गुरु थे, उनमें बुद्ध, ताओ और भगवान हैं, और उन सभी के पास कई जन्मों पहले मेरे द्वारा प्रेषित चीजें थीं। इसका उद्देश्य यह व्यवस्था करना था कि, इस समय के दौरान जब मैं महान फा का प्रसार करना चाहता हूँ, मेरी स्मरण शक्ति को जागृत करने के लिए, उन चीजों को वापस मेरे पास प्रेषित कर दिया जाए, और फिर मैं आपको [इसे] प्रसारित करता। *(तालियाँ)* साधारण समाज में एक भी घटना संयोगवश नहीं होती है। मैं जिस प्रकार महान फा का प्रसार कर रहा हूँ यह बहुत बड़ी बात है, और भविष्य में और भी लोग इसका अध्ययन करेंगे, इसलिए ब्रह्मांड में, महान फा के प्रसार के साथ, विभिन्न प्रकार के अधर्मी तत्व जो हस्तक्षेप कर रहे हैं और तीन लोकों की चीजें जो हस्तक्षेप कर रही हैं, वे अराजक, बुद्धिजीवी जानवर और निम्न स्तर की प्रेत-आत्माएं जो अशांति पैदा कर रही हैं, संयोग से नहीं हैं।

शिष्य: इस स्तर पर हमारे पास सच्चे चीगोंग गुरुओं को झूठे गुरुओं से अलग करने का कोई तरीका नहीं है। भविष्य में इसे कैसे संभाला जाना चाहिए?

गुरु जी : अब आप किस कारण से सच्चे *चीगोंग* गुरुओं और झूठे गुरुओं के बीच अंतर करना चाहते हैं? इस समय क्या आप अभी भी अन्य *चीगोंग* सम्मेलनों में भाग लेना चाहते हैं? अन्यथा आपको उनमें अंतर करने की आवश्यकता क्यों होगी? *(तालियाँ)* मुझे लगता है कि कुछ लोगों ने *चीगोंग* सम्मेलनों में भाग नहीं लिया है, और जब वे गुरु ली की बातों को सुनते हैं, [उन्हें अनुभव होता है] कि साधना इतनी व्यापक और गहन है, तो वे सोचते हैं, "ओह—तो मैं भी जाऊँगा और अन्य *चीगोंग* गुरुओं को सुनूंगा कि वे क्या कहते हैं और मेरे ज्ञान को थोड़ा बढ़ाऊंगा।" कुछ लोग ऐसा सोचते हैं, लेकिन यह अनुचित है। मैं जो सिखा रहा हूँ वह महान फा है; आप इन चीजों को अन्य स्थानों

पर नहीं सुन सकते। दो साधना पद्धतियों का अभ्यास न करना एक अत्यंत गंभीर बात है।

और फिर, यदि आप इन चीजों को ज्ञान के रूप में लेना चाहते हैं, या यदि आप अन्य साधना मार्गों में भाग लेना चाहते हैं, तो शायद आप उस फा के एक वाक्य को भी याद नहीं कर पाएंगे जो मैं सिखाता हूं, क्योंकि साधना एक गंभीर विषय है। आपके पास सच्चे *चीगोंग* गुरुओं और झूठे गुरुओं में अंतर करने का कोई तरीका नहीं है, और उनका प्रदर्शन लोगों से धन लेकर उनको धोखा देना है। अन्य लोग कभी-कभी करुणा (शान) के बारे में भी सतही रूप से बात करेंगे, लेकिन उनके मन में वे धन के लिए काम कर रहे हैं। इसलिए भेद करना बहुत कठिन है।

शिष्य: यदि कुछ लोगों की महान फा में रुचि है, लेकिन वे यह निर्णय नहीं कर सकते कि साधना करनी है या नहीं, और वे स्वयं को साधक के रूप में नहीं देख सकते हैं, तो क्या हमारे स्वयंसेवकों को अभी भी उनकी सहायता करनी चाहिए?

गुरु जी : मुझे लगता है कि कुछ शिष्य अभी भी चीजों को समझने की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। यदि आप चाहते हैं कि एक शुरुआत करने वाला एक अनुभवी शिष्य की तरह उच्च स्तर को प्राप्त करे, तो वह इसे प्राप्त नहीं कर सकता। उसे चीजों को समझने के लिए प्रक्रिया से गुजरने दें; यदि वह अभ्यास करना चाहता है, तो वह अभ्यास करेगा, और यदि वह अभ्यास करना चाहता है, तो आप उसे सिखाएं। धीरे-धीरे, उसे लगेगा कि यह अच्छा है, और आप उसे पढ़ने के लिए *फालुन गोंग* की एक पुस्तक उधार दे सकते हैं या उसे पुस्तक खरीद कर पढ़ने के लिए कह सकते हैं। इस तरह उसे लगेगा कि यह अच्छा है, उसकी समझ बढ़ेगी, और फिर आप उसे *ज़ुआन फालुन* पढ़ने के लिए दे सकते हैं; धीरे-धीरे और थोड़ा-थोड़ा करके, वह इसे समझने लगेगा। मान लीजिए आप उसके आगे शर्तों को रखना चाहते हैं, [जैसे]: जब आप हमारे व्यायाम करते हैं तो आप दवा नहीं ले सकते; एक बार जब आप हमारे अभ्यास करते हैं तो आप अन्य चीजों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं; या, जब आप हमारे अभ्यास करते हैं तो आपको एक झटके में एक निश्चित स्तर तक पहुंचना होगा। तब आप तुरंत उसे डरा देंगे। आप उसे कह

सकते हैं कि पहले अभ्यास करें और इसे परख कर देखें, और यदि उसे लगता है कि यह अच्छा है तो उसे स्वयं पता चल जाएगा कि उसे क्या करना है।

लोगों का उद्धार करना बहुत कठिन है। यदि लंबे समय तक वह एक साथ दो साधना विधियों का अभ्यास नहीं करना नहीं कर पाता है, या यदि वह केवल अभ्यास करता है और पुस्तक नहीं पढ़ता है, तो आप उसे अन्य अभ्यास करने का परामर्श दे सकते हैं। अन्यथा, वह समस्याओं का सामना करेगा और यह उसके लिए बुरा होगा। यहां वह एक बुरी भूमिका निभाएगा। यदि वह [केवल एक अभ्यास] साधना करने के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध नहीं करता है, तो मेरा फा शरीर उसकी देखभाल नहीं करेगा, जिससे वह केवल एक साधारण व्यक्ति रह जायेगा। समय आने पर एक साधारण व्यक्ति बीमार पड़ जाएगा, और शायद फा को हानि पहुँचाने वाला कोई असुर अपना कुछ काम करवाने के लिए उसका उपयोग करेगा, और अचानक वह असामान्य व्यवहार करेगा। साधारण लोग यह नहीं जानते हैं कि साधना में एक ही अभ्यास के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए, और जैसे ही वे समस्याओं का सामना करेंगे वे हमें बहुत हानि पहुंचाएंगे। यदि वह एक ही लक्ष्य से साधना करने में सक्षम नहीं है, और यदि वह फा का अध्ययन करने में सक्षम नहीं है, तो उसे छोड़ने की सलाह दें, या उसके परिवार के सदस्यों से कहें कि वह उसे और अभ्यास न करने की सलाह दें।

शिष्य: पहले मैं एक स्कूल में मार्शल आर्ट सिखाता था। मैं एक मार्शल आर्ट गुरु था। अब मैं फालुन दाफा का अध्ययन करता हूं और अब ताई ची का अभ्यास नहीं करता, लेकिन क्या मैं अब भी छात्रों को सिखा सकता हूं?

गुरु जी : आप कर सकते हैं। लेकिन ताई ची सहित और कुछ भी जिसमें साधना के तत्व हैं, उसमें साधना शामिल होगी। यदि आप यह काम आजीविका के लिए करते हैं तो आप कर सकते हैं। यदि आप कहते हैं कि आप किसी स्कूल में ताई ची सिखाते हैं, तो आप इसे सिखा सकते हैं, क्योंकि मेरे पास विशेष परिस्थितियों से निपटने के विशेष तरीके हैं। यदि ऐसा नहीं है, तो आपको एक ही प्रतिबद्धता के साथ साधना करनी चाहिए। लेकिन जैसा कि मैं देख रहा हूँ, क्या यह और भी अच्छा नहीं होगा यदि आप उन्हें फालुन दाफा सिखाते हैं? *(तालियाँ)* चीन में कुछ स्कूलों के शिक्षक शारीरिक शिक्षा

के लिए फालुन दाफा सिखाते हैं। अभ्यास करने के बाद वे वहीं बैठ जाते हैं और छात्रों को पुस्तक पढ़कर सुनते हैं। छात्र स्वयं कहते हैं, "कक्षा के दौरान हम कभी इतने शांत नहीं होते हैं।"

शिष्य: फालुन को देखने के अतिरिक्त क्या हम इसे सुन भी सकते हैं?

गुरु जी : *फालुन गोंग* का अभ्यास करते समय सभी दिव्य सिध्दियां सामने आएंगी। कुछ लोगों के दिव्य कान, खुलने के बाद, अन्य आयामों से ध्वनियाँ सुन सकते हैं।

शिष्य: क्या महान फा की साधना करने वाले विवाह कर सकते हैं?

गुरु जी : वे कर सकते हैं। साधना करने के लिए मैंने आपको चीजें दी हैं जिससे आपका सच्चा स्वरुप साधना कर सके और जिससे साधारण लोगों के बीच आपकी साधना सुनिश्चित हो सके। आप साधारण लोगों के जीवन के तरीके के अनुरूप चलते हुए साधना कर सकते हैं। मैं यह भी आशा करता हूं कि जिन लोगों ने विवाह नहीं किया है उन्हें एक अच्छा जीवन साथी मिल सके जिससे वे संतुष्ट हों और एक परिवार स्थापित कर सके। भविष्य में, शायद पति-पत्नी दोनों अभ्यास करेंगे, ऐसे में आपने अपने साथी को बचा लिया होगा। लेकिन इसे मानक के रूप में उपयोग न करें; अर्थात, यदि वह अभ्यास नहीं करता है तो आप उससे विवाह नहीं करेंगे। यहां भी आपको साधना करते समय साधारण लोगों की स्थिति के अनुरूप होना होगा।

शिष्य: अभी-अभी, गुरु जी ने काम पर कड़ा परिश्रम करने से संबंधित मुद्दों के बारे में बात की। मैं अपने काम में बहुत परिश्रम करता हूं, लेकिन बॉस मेरे साथियों पर दबाव बनाने के लिए मेरा उपयोग करता है, जिससे मैं फंस जाता हूं।

गुरु जी : बॉस कैसे व्यवहार करता है, इसका आपसे कोई सरोकार नहीं है। यदि बॉस आपको जाकर दूसरों पर दबाव बनाने का आदेश देता है, तो मुझे लगता है कि इस

मामले से निपटना आसान है। आप थोड़े अधिक चतुर हो सकते हैं, और अपनी राय स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं। एक साधक के रूप में हम दूसरों को हानि नहीं पहुँचाते हैं, लेकिन [यदि] आपका उत्तरदायित्व ऐसा है, तो बस ऐसा ही करें, और इससे कोई समस्या नहीं होगी। लेकिन हम चीजों के प्रति अपने आचरण में दयालु हो सकते हैं। मेरे विचार में, जब तक यह उचित है, आपको कंपनी में समस्याएँ पैदा न करने के आधार पर ऐसा करना चाहिए। वैसे भी, जहां तक इन विशिष्ट मुद्दों की बात है, मैं आपको बता दूं कि आप सभी उनके साथ अच्छी तरह से निपट सकते हैं। लेकिन एक बात है: आप बिलकुल भी अभ्यासी के सिद्धांतों का उल्लंघन नहीं कर सकते, और आप बुरे कर्म नहीं कर सकते।

शिष्य: अमेरिका में हम कुछ चीजों के लिए न्याय मांग सकते हैं, लेकिन जब हम जेन, शान, रेन के बारे में सोचते हैं, तो हम मुकदमा दायर नहीं करेंगे। क्या यह उचित तरीका है?

गुरु जी : किसी भी छोटी सी बात के लिए पुलिस को फोन नहीं करें। कुछ संघर्ष आपकी साधना, कर्म के भुगतान, सुधार और अन्य तत्वों की ओर निर्देशित हो सकते हैं। इसलिए जब कठिनाइयां आती हैं, जब तक कि यह आपको गंभीर रूप से संकट में नहीं डाल रही है, यह आपको हानि नहीं पहुंचा सकती है, और जैसा कि मैं देख रहा हूं, इनमें से कोई भी संयोग नहीं है। यदि बड़ी घटनाएं [होती हैं, जैसे कि] यदि कोई व्यक्ति वास्तव में आपको मारने, आपके घर को जलाने, या आपको हानि पहुंचाने के लिए आता है, तो पुलिस को इसकी सूचना दें, और आप मुकदमा भी दर्ज कर सकते हैं। यदि ऐसा नहीं है, तो मैं कहूंगा कि इसे इस तरह से नहीं संभालें।

साधक के रूप में, आप व्यक्तिगत साधना कर रहे हैं, और इसलिए आपकी समझ में सुधार करने की प्रक्रिया में, मैं आपको उन चीजों का सामना नहीं करने दूंगा जिनका आपकी साधना से कोई लेना-देना नहीं है। चूँकि आपके सामने आपकी साधना और सुधार का व्यक्तिगत मार्ग मेरे द्वारा श्रमसाध्य रूप से व्यवस्थित किया गया है, इसलिए मैं आपके लिए अनावश्यक चीजों की व्यवस्था नहीं करूँगा। *(तालियाँ)* कानून चाहे कितने भी प्रभावी और व्यापक हों, वे मानव हृदय को नियंत्रित नहीं कर सकते हैं, और

जब आप लोगों को नहीं देख रहे होंगे तभी वे बुरे काम करेंगे। जितने अधिक कानून बनाये जाते हैं, लोगों को उतनी ही अधिक हानि होती है; कानून इतने अधिक हो जाते हैं कि लोग उन सभी को याद नहीं रख सकते हैं, और शायद जब लोग कुछ भी करते हैं तो वे अपराध कर रहे होंगे। जो लोग कानून बनाते हैं, वे इन कानूनों का उपयोग अन्य लोगों पर शासन करने के लिए करना चाहते हैं, लेकिन वास्तव में जैसे ही उन्हें बनाया जाता है, कानून उन लोगों को भी नियंत्रित करेंगे। लोग पहले से ही वह सब कुछ सहन कर रहे हैं जो लोगों ने स्वयं अपने ऊपर लाया है। जैसे-जैसे फा कड़े और कड़े होते जाएंगे, वे लोगों को और भी अधिक प्रतिबंधित करेंगे, और भविष्य में वे लोगों पर उसी तरह शासन करेंगे जैसे वे पशुओं पर शासन करते हैं। लोग इस तरह प्रसन्न नहीं होंगे। लेकिन यह वही होगा जो लोगों ने अपने लिए बनाया है, और इसलिए उन्हें इसे सहन करना होगा। आज लोग वह सब सहन कर रहे हैं जो उन्होंने स्वयं अपने ऊपर लाया है, और यह सब मानवजाति को लगातार पृथक कर रहा है।

उच्च प्राणी मानवीय कानूनों को नहीं मानते हैं। उच्चतर प्राणियों का मानना है कि [कानून] एक ऐसा साधन है जिसे मनुष्य ने तब अपनाया जब उनके पास पतित होने के बाद कोई विकल्प नहीं बचा था। उच्चतर प्राणी केवल हृदय और नैतिकता के नियम को मानते हैं। नैतिकता होने पर, कानून न होने पर भी लोग बुरे काम नहीं करेंगे, है ना?

शिष्य: देवता क्या है?

गुरु जी : भिन्न-भिन्न देवताओं द्वारा भिन्न-भिन्न जातियों का निर्माण किया गया था। जिस देवता ने एक निश्चित मनुष्य को बनाया है, वह उसका देवता है। मैं मानव शरीर [के निर्माण] की बात कर रहा हूं। एक व्यक्ति के आत्मा की वास्तव में कहीं और उत्पत्ति होती है।

शिष्य: अमेरिका में की जाने वाली फालुन गोंग की साधना और मुख्य भूमि चीन की साधना में क्या अंतर है?

गुरु जी : कोई अंतर नहीं है। पश्चिमी देशों में, साथ ही पूर्व से पीली जाति के लोगों में, लोगों के अपने-अपने आयामों में वास्तव में अलग-अलग प्रणालियाँ होती हैं, और ये प्रणालियाँ ब्रह्मांड के और भी बड़े आयामों में विभिन्न ब्रह्मांडीय प्रणालियों के अनुरूप हैं। इन विभिन्न आयामी प्रणालियों में सभी भौतिक तत्व होते हैं जो उनके स्वयं के आयामों के लिए विशिष्ट होते हैं। पूर्वी लोगों के उनके विशिष्ट भौतिक तत्व भी हैं। बहुत से लोगों को, अमेरिका पहुंचने पर, न केवल समय के अंतर का पता चलता हैं, बल्कि उनमें अनुकूलन प्रक्रिया भी होती है। उन्हें हमेशा लगता है कि आंतरिक और बाहरी दोनों चीजें हैं जिनकी उन्हें आदत नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भौतिक तत्व उनके जैसे नहीं हैं और रहने का वातावरण भिन्न है। लोग कहा करते थे कि किसी स्थान के धरती और पानी एक विशेष प्रकार के लोगों को जन्म देते हैं। यह ऐसा ही है। चूँकि साधारण लोगों के लिए वे तत्व प्रमुख हैं, पूर्वी लोगों के सांस्कृतिक आंतरिक अर्थ पश्चिम से भिन्न हैं। उदाहरण के लिए: चीनी लोग अंकशास्त्र और उच्चारण पर ध्यान देते हैं, जैसे कि कैसे शब्द "बा" (八—आठ) "फा" (發—धन कमाने) का प्रतीक है, या यह कि "सी" (死—मृत्यु) शब्द "सी" (四—चार) द्वारा निहित है। बुरे उच्चारण से अच्छा उच्चारण अधिक वांछित होता है। फिर, पूर्व के इस भौतिक वातावरण के बीच वास्तव में इस प्रकार का भौतिक तत्व उपस्थित है, और यह साधारण लोगों पर थोडा प्रभाव डाल सकता है। लेकिन पश्चिम में यह नहीं पाया जाता है। हालाँकि, उनके पास इस भौतिक वातावरण के अपने तत्व हैं। उदाहरण के लिए: पूर्व के लोग *फेंगशुई* में भूगोल और दिशाओं के बारे में बात करते हैं, लेकिन पश्चिमी लोगों के लिए यह काम नहीं करता है। यह निश्चित रूप से काम नहीं करता है। जहां तक *फेंगशुई* का प्रश्न है, यदि आप इसे अमेरिका के गोरे या अश्वेत लोगों के लिए उपयोग करते हैं, या यदि आप इसे अन्य जातियों के लोगों के लिए उपयोग करते हैं, तो यह कुछ भी काम नहीं करेगा। तेरह की संख्या जिससे पश्चिमी लोग दूर रहने का प्रयत्न करते हैं या जिन नक्षत्रों के बारे में वे बात करते हैं वे पूर्व के लोगों के लिए उसी तरह काम नहीं करते हैं, और उनके लिए इसका काम आना कठिन होगा। इसलिए, पूर्व के लोगों के लिए तेरह की संख्या का कोई वास्तविक अर्थ नहीं है। आयामी वातावरण में ऐसे घटक होते हैं जो उनकी सामग्री बनाते हैं। यह इतना सरल विषय नहीं है। कोई भी चीज तब तक नहीं टिक सकती जब तक उसका आधार भौतिक वातावरण न हो।

शिष्य: गुरु जी द्वारा व्यवस्थित हस्तक्षेप और समस्याओं के बीच अंतर कैसे किया जा सकता है?

गुरु जी : आप मेरी व्यवस्थाओं को समस्याएं नहीं कह सकते। वास्तव में, मैंने आपके लिए यह सब नहीं बनाया है; मैं व्यवस्था करने के लिए उन चीजों का उपयोग कर रहा हूं जो आपके पास पहले से ही हैं, और मैं आपके कर्म के एक भाग को हटा रहा हूं। जो कुछ बचा है वह उन परीक्षणों के रूप में कार्य करता है जिन्हें आपको अपने नैतिक गुण में सुधार करते समय उत्तीर्ण करना होगा, और आपकी साधना प्रक्रिया के दौरान इन्हें उपयुक्त स्थानों पर रखा जाएगा। जब समय आएगा और जब आपको सुधार करना होगा, तो इसे उत्तीर्ण करने के लिए परीक्षण के रूप में उपयोग किया जाएगा। इसलिए जब आप कठिनाइयों का सामना करते हैं तो आपको उन्हें ठीक से समझना चाहिए। मैंने आपके लिए यही व्यवस्था की है। जब तक आप वास्तव में एक साधक की तरह रह सकते हैं तब तक आप उन सभी को पारित कर सकेंगे।

शिष्य: हम कैसे जान सकते हैं कि गुरु जी हमें क्या करने की अनुमति देते हैं और क्या नहीं?

गुरु जी : जब तक आप फा का अध्ययन करते हैं, तब तक आप स्वयं अंतर कर पाएंगे कि आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। मेरे विचार से, कुछ चीजें हैं जो भयानक या बुरी हैं, और आपको उन्हें नहीं करना चाहिए। हालाँकि, यदि आप उन्हें करने पर बल देते हैं, तो शायद आप उन्हें कभी भी सफलतापूर्वक पूरा नहीं कर पाएंगे। जब आप उन्हें करने के लिए हठ करेंगे तो आपको कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। आप इन चीजों में अंतर कर सकेंगे और आप स्वयं चीजों को समझ सकेंगे। यदि आपको सब कुछ बता दिया जाता है, तो आप साधना कैसे करेंगे?

मैं एक साधना का उपहास सुनाता हूँ। चीन में एक शिष्य है जो इलेक्ट्रीशियन है। एक बार, वह एक ट्रांसफार्मर को ठीक कर रहा था जिसमें विद्युत् अभी भी बह रही थी। ट्रांसफार्मर की उच्चतम क्षमता तीस हजार वोल्ट थी। यदि कोई व्यक्ति इसे छूता, तो

यह तुरंत उसके शरीर से गुजर कर उसे झुलसा देता। वह एक पेंच घुमाने के लिए ट्रांसफार्मर के दूसरी ओर जाना चाहता था। उस समय वह कुछ भी नहीं देख सकता था जो उसे अवरुद्ध कर रहा था, लेकिन वह दूसरी तरफ नहीं जा पा रहा सका। यह उसे सचेत कर रहा था कि वह आगे नहीं जाए, क्योंकि खतरा था। लेकिन वह हठी था और दूसरी ओर जाना चाहता था। चूंकि बिजली अभी भी चल रही थी, जैसे ही उसने उस पेंच को छुआ, "बैंग!"—उसे झटका लगा। इसलिए, कभी-कभी ऐसी चीजें होती हैं जो आपको नहीं करनी चाहिए या जिनमें खतरे, कठिनाई आदि सम्मिलित होती हैं, और आपको संकेत दिए जाएंगे। उस परिदृश्य में एक साधारण व्यक्ति का भर्ता बन गया होगा, लेकिन क्योंकि वह व्यक्ति महान फा की साधना कर रहा था, उसके प्राण संकट में नहीं थे। उसे लगा जैसे वह फट गया था। उसका पूरा शरीर "झनझना!" गया। फिर वह तुरंत शांत हो गया। वहां पर उपस्थित लोग कांप गए थे। उन्होंने देखा कि वह एक बड़ा आग का गोला बन गया था—और अचानक "बूम!" विद्युत धारा उसके हाथ से प्रवेश कर गई और उसके पैर के तलवे में एक छेद बना दिया। उस समय, उन्होंने सोचा, "मैं एक अभ्यासी हूँ और मुझे कोई समस्या नहीं होगी।" उसे कोई डर नहीं लगा और वह आराम से चला गया, जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं हो। बाद में, विद्युत उद्योग केंद्र के प्रमुख आए, और उनसे कहा कि उन्हें जांच के लिए अस्पताल जाना चाहिए। उसके पास अस्पताल जाने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। डॉक्टर चौंक गये: “कितना अजीब है! इस तरह का एक उच्च वोल्टेज साधारणतः किसी को भून देगा। वह मर गया होता। [विद्युत धारा] उसके ऊपर से नीचे तक बही और उसके पैर में एक छेद कर दिया। वह कैसे बच गया?" उसका खून भी नहीं बह रहा था, क्योंकि अंदर सब कुछ झुलस गया था। डॉक्टर को लगा कि यह बहुत ही अजीब है।

महान फा के अभ्यासियों के शरीर उच्च-ऊर्जा पदार्थ द्वारा परिवर्तित कर दिए गए हैं; तुलनात्मक रूप से, जिस विद्युत के बारे में एक साधारण व्यक्ति जानता है, वह कुछ भी नहीं है। लेकिन इस अभ्यासी की सबसे सतही त्वचा की पूरी तरह से साधना नहीं हुई थी, और इसलिए वह परत पंचर हो गई थी। केवल एक परत पंचर हुई थी, और सामान्यतः कोई हानि नहीं पहुंची। मैं इस कहानी को आपको यह बताने के लिए साझा कर रहा हूं कि जो लोग महान फा का पालन करते हैं उन्हें डराने वाली परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा, लेकिन खतरनाक परिस्थितियों का नहीं। लेकिन यदि कोई इस

कारण से मोहभाव विकसित करने लग जाता है और जान-बूझकर वही करता है जो उसे नहीं करना चाहिए, तो यह वास्तव में खतरनाक होगा।

शिष्य: यह व्यवस्था क्यों की जाती है कि हम अमेरिका आकर साधना करें?

गुरु जी : विज्ञान और तकनीक अमेरिका में बहुत विकसित हैं, इसलिए शायद भविष्य में इन चीजों की एक अच्छी समझ की आवश्यकता होगी। जो लोग अमेरिका आते हैं वे सभी पूर्व के सभ्य वर्ग से हैं। *(तालियाँ)*

शिष्य: जब हम पद्मासन में ध्यान करते हैं तो क्या हमें शांत स्थिति में प्रवेश करने की आवश्यकता है?

गुरु जी : ठीक है, यदि आप केवल अपने पैरों का व्यायाम करना चाहते हैं तो यह ठीक है। कुछ लोग कहते हैं, "मेरे पैर ठीक नहीं हैं इसलिए मुझे उनका और व्यायाम करने की आवश्यकता है।" तब मेरे विचार से, यदि आप ध्यान नहीं कर रहे होते, तो क्या यह और भी अच्छा नहीं होता कि आप उसी समय शांति में प्रवेश कर सकें जब आप अपने पैरों का व्यायाम कर रहे हों? केवल पैरों का व्यायाम करना ठीक है, लेकिन जब आप व्यायाम करते हैं तो आपको शांत अवस्था में प्रवेश करने का प्रयास करना चाहिए।

शिष्य: जब मैं जुआन फालुन *को पढ़ता हूँ, तो क्या पद्मासन में बैठने से सहायता मिलेगी?*

गुरु जी : यह सहायता करेगा। जब आप पुस्तक पढ़ रहे होते हैं तब पद्मासन में बैठना, एक तो, आपको पैरों को मोड़ने का अधिक अभ्यास करने में सक्षम करेगा; और दूसरी बात, यह अपने आप में अभ्यास का एक रूप है। यह बहुत अच्छा है।

शिष्य: मित्र का बच्चा जन्म से ही बहरा है। क्या फालुन गोंग *का अभ्यास उसकी सहायता करेगा?*

गुरु जी : क्या आप पूछना चाहते हैं कि क्या यह उसे ठीक कर देगा? मैं इसके बारे में सरल तरीके से नहीं बोल सकता, लेकिन मैं कह सकता हूं कि आप ठीक होने के लिए व्यायाम नहीं कर सकते। जो मैं आपको बता सकता हूं वह यह है कि जो बहरा है वह उसका शरीर है, जबकि उसकी आत्मा बहरी नहीं है। जब लोग वास्तव में साधना करते हैं, तो उनके सभी अंग सामान्य स्थिति में लौट आएंगे। अभ्यासियों को स्वयं को एक अभ्यासी के स्तर के अनुरूप रखना चाहिए। यदि बच्चा उस बीमारी के कारण ही आता है और इस चिंता को नहीं छोड़ता है, तो यह ठीक नहीं होगा। बुद्धत्व की साधना गंभीर है।

शिष्य: मेरे पति मेरे अभ्यास करने के विरोध में भूख हड़ताल पर जा रहे हैं।

गुरु जी : इस संबंध में, मुझे लगता है कि यह वास्तव में इस पर निर्भर करता है कि आप इसे कैसे संभालते हैं। साधारणतः, वे सभी जो परिवार के सदस्यों के हस्तक्षेप का सामना करते हैं [इसका सामना इसलिए करते हैं], एक तो, यह देखने के लिए है कि वे दृढ़ता से साधना करते हैं या नहीं; दूसरा, यह देखने के लिए कि साधक का नैतिक गुण कैसा है; और तीसरा, परिवार का कर्म को समाप्त करने के लिए [साधना करने वाले] की सहायता करना। लोगों के महान फा को स्वीकार करने में पूरी तरह से असमर्थ होने के अत्यंत असाधारण उदाहरण भी हैं।

शिष्य: गुरु ने अपने फा-व्याख्यान में दिव्य प्राणियों के जन्म, वृद्धावस्था, रोग और मृत्यु के रूप के बारे में बताया। गुरु जी, कृपया इस विषय में बात करें।

गुरु जी : अतीत के ब्रह्मांड में गठन, ठहराव, पतन और विनाश थे, और ब्रह्मांड में जीवों के लिए जन्म, बुढ़ापा, रोग और मृत्यु थे; यह केवल इतना था कि समय की अवधि भिन्न-भिन्न आयामों में भिन्न थी। यह भिन्नता बहुत अधिक थी, और कभी-कभी यह इतनी लंबी

होती थी कि ऐसा लगता था कि [जीव] कभी नहीं मरा, जबकि अन्य एक पल के जितने संक्षिप्त थे। गठन, ठहराव, पतन और विनाश में, उदाहरण के लिए, ब्रह्मांड में गठन का एक ऐसा चरण अस्तित्व में था जिसकी अवधि स्थिर थी, और फिर यह पतन और विनाश की ओर बढ़ जाता। यह अतीत के ब्रह्मांड का मूल रूप है, और ब्रह्मांड में सभी प्रजातियों और पदार्थ के लिए पदार्थ की गति का सिद्धांत था।

मैंने सभी प्रश्न पर्चियों के उत्तर नहीं दिए हैं, और अभी भी कई रह गए हैं, लेकिन फा पर व्याख्यान देने का मेरा समय समाप्त हो गया है और सम्मेलन हॉल शीघ्र ही बंद हो जाएगा। मुझे लगता है कि बहुत से लोग अभी भी चाहते हैं कि मैं उनको समझाऊं और प्रश्नों के उत्तर दूं, लेकिन यह केवल इस तरह ही हो सकता है। मुझे लगता है कि जब अवसर मिलेगा तो हम दूसरे शहरों में मिल सकते हैं, लेकिन इस बार मैंने बहुत सी बातें की। मैं ह्यूस्टन के स्थानीय साधकों का बहुत आभारी हूं, क्योंकि उनकी तैयारियों के कारण ही हमें यहां बैठकर मिलने का अवसर मिला। चूंकि हमने मूल रूप से इसे केवल एक दोपहर के लिए ही निर्धारित किया था, इसलिए यहां के कर्मचारी शीघ्र ही काम समाप्त कर देंगे और हम केवल इतना ही कर सकते हैं। यह खेद की बात है, क्योंकि आप में से कोई भी छोड़कर जाना नहीं चाहता। मुझे लगता है कि उन लोगों के मन को शांति नहीं मिलती यदि वे गुरु से नहीं मिलते, अब आपके मन को शांति अनुभव होगी क्योंकि आप मुझ से मिल चुके हैं। वास्तव में, मैं आप सभी को बता दूं कि जब तक आप साधना करते रहेंगे, मैं हमेशा आपके साथ रहूंगा।

मुझे आशा है कि यहां बैठे लोगों में से कोई भी इस अवसर को नहीं छोड़ेंगे। मुझे फा पर व्याख्यान देते हुए सुनने वाले लोग अधिक नहीं हैं। इस तरह के अवसर—फा को सिखाये जाने वाले [सुनने के] अवसर—भविष्य में कम हो सकते हैं। इसलिए मुझे आशा है कि आप सभी आज के हमारे सम्मलेन को संजो कर रखेंगे। साधना में आपको स्वयं के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। यदि आपने यह फा प्राप्त कर लिया है, तो अपनी साधना जारी रखें। यह आपके व्यवसाय को प्रभावित नहीं करेगा, और जब आप काम में व्यस्त हों, तो इसे समाविष्ट करने का प्रयास करें और देखें कि क्या होता है। यदि यह ऐसा नहीं है जैसा मैंने कहा, तो आपको इसका पालन करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपने कुछ खोया नहीं है। यदि आप जानते हैं कि यह अच्छा है, तो साधना जारी रखें; बुद्ध फा की सच्चाई आपके समक्ष धीरे-धीरे प्रदर्शित की जाएगी।

मुझे आशा है कि आप सभी इस पूर्वनिर्धारित अवसर को संजो कर रख पाएंगे। साधना करने के दौरान आप सभी निरंतर आगे बढ़ने, वास्तव में दृड़ता से साधना करने, और *ज़ुआन फालुन* पुस्तक का वास्तव में अध्ययन करने में सक्षम होंगे। आपको इसका बहुत अध्ययन करना चाहिए, और व्यायाम करने के साथ-साथ आप लगातार सुधार करते रहेंगे। हर बार जब आप पुस्तक पढ़ेंगे, तो आपके मन में अलग-अलग भावनाएँ और प्रश्न होंगे। हर बार जब आपका स्तर ऊँचा होता है, तो आपके सामने आने वाले सभी प्रश्न पुस्तक के आपके अगले पठन में हल हो जाएंगे। आपके पास नए प्रश्न होंगे, लेकिन जब आप पुस्तक को दूसरी बार पढ़ेंगे तो यह निश्चित है कि सभी प्रश्न हल हो जाएंगे। तब आपके पास और भी नए प्रश्न होंगे, और इस तरह आप लगातार साधना करेंगे, और लगातार क्रमिक प्रगति करेंगे और ऊँचा उठेंगे।

इस बीच, जब आप कठिनाइयों और कष्टों, पीड़ा और विपत्तियों का सामना करते हैं—मैंने चीन के शिष्यों से भी निम्नलिखित शब्द कहे हैं—यदि ऐसा लगता है कि आप इसे नहीं कर पाते हैं, तो प्रयत्न करें और देखें कि क्या आप इसे कर पाते हैं। जब आप सहन नहीं कर सकते, तो प्रयत्न करें और देखें कि क्या आप सहन कर सकते हैं। भविष्य में, जैसे-जैसे आप सभी निरंतर साधना और सुधार करते रहेंगे, शायद अगली बार जब हम मिलेंगे तो ऐसा नहीं होगा। मैं यह भी आशा करता हूं कि आप सभी साधना की प्रक्रिया में निरंतर सुधार कर सकें और फल पदवी की ओर बढ़ सकें। साधना करते हुए आप मुझसे मिलना चाहते हैं, लेकिन वास्तव में मैं आपके पास ही हूं। *(तालियाँ)* हम आज के लिए यहीं रुकते हैं।